नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 354, नई दिल्ली, रविवार 22 फरवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

वक्त की कदर करो, क्योंकि एक बार गया हुआ वक्त लौटकर नहीं आता।

03 प्रकृति रूप शरीर के नौ द्वार तथा नौ चक

06 ₹6.78 की थाली: क्या देश का भविष्य इतना सस्ता है?

08 राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव पहुंचे बार, अधिवक्ताओं से मांगे वोट

परिवहन विभाग की गलत नीतियां - रफ्तार की कीमत :- सड़क पर बुझता युवाओं का भविष्य

संजय कुमार बाठला

सड़क हादसे केवल दुर्घटनाएँ नहीं, बल्कि परिवहन विभाग की गलत नीतियां, हमारी लापरवाही और गैर - जिम्मेदार सोच का परिणाम हैं।

तेज़ रफ्तार,
नशे में ड्राइविंग और
मोबाइल का इस्तेमाल
सड़क पर जिंदगियां निगल रहा है।

*नियमों का पालन कोई मजबूरी नहीं, बल्कि जीवन की सुरक्षा का आधार है।

* ज़रूरत है कि हम सड़क सुरक्षा को आदत और संस्कार बनाएं।

युवाओं और सड़को पर चलने वाले नागरिकों का भविष्य सुरक्षित सड़कों से ही संभव है। एक छोटी - सी सावधानी, धैर्य और जिम्मेदारी कई परिवारों को उजड़ने से बचा सकती है।

भारत में सड़क हादसों में युवाओं की लगातार हो रही मौतें आज एक ऐसी सच्चाई बन चुकी हैं, जिसे नज़रअंदाज़ करना अब संभव नहीं है।

हर दिन अख़बारों के पन्ने और न्यूज़ चैनलों की सुर्खियाँ हमें यह याद दिलाती हैं कि सड़कें कितनी असुरक्षित होती जा रही हैं। इन हादसों में सबसे अधिक प्रभावित युवा वर्ग हो रहा है —

वह वर्ग, जिसे देश का भविष्य कहा जाता है। यह स्थिति न केवल दुखद है, बल्कि पूरे समाज के लिए एक गहरी चेतावनी भी है।

सड़क दुर्घटनाएँ अचानक होने वाली घटनाएँ नहीं, बल्कि मानवीय लापरवाही और गैर - जिम्मेदाराना व्यवहार का परिणाम होती हैं।

1. तेज़ रफ्तार से वाहन चलाना,
2. यातायात नियमों की अनदेखी करना,
3. गलत दिशा में वाहन ले जाना,
4. नींद या थकान की अवस्था में ड्राइव करना,
5. शराब या नशे का सेवन करके गाड़ी चलाना और
6. ड्राइविंग के दौरान मोबाइल फोन का इस्तेमाल —

यह सभी कारण मिलकर सड़क को मौत का रास्ता बना देते हैं। जब की सच्चाई यह है कि इनमें से अधिकांश हादसे पूरी तरह रोके जा सकते हैं सिर्फ थोड़ी सी सावधानी और समझदारी दिखाने पर ही।

युवा अवस्था जोश, आत्मविश्वास और जोखिम उठाने की प्रवृत्ति से भरी होती है।

1. यही गुण जब अनुशासन और जिम्मेदारी से जुड़े तो प्रगति का मार्ग बनाते हैं, लेकिन जब
2. यही गुण लापरवाही से जुड़े तो विनाश का कारण बनता है।

आज कई युवा तेज़ रफ्तार को शान और नियम तोड़ने को साहस समझने लगे हैं। "कुछ नहीं होगा" या "मैं संभाल लूँगा" जैसी सोच उन्हें खतरनाक फैसले लेने के लिए प्रेरित करती है। दुर्भाग्यवश, एक छोटी-सी गलती पूरे जीवन को समाप्त कर देती है।

आधुनिक जीवनशैली और तकनीक ने इस समस्या को और जटिल बना दिया है।

1. मोबाइल फोन आज जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है, लेकिन ड्राइविंग के दौरान इसका इस्तेमाल जानलेवा साबित हो रहा है। एक पल की असावधानी, एक मैसेज पढ़ने या कॉल उठाने की कोशिश कई जिंदगियों को छीन सकती है। इसके बावजूद लोग इस खतरे को गंभीरता से नहीं लेते। यही उदासीनता सड़क हादसों की बढ़ती संख्या का एक बड़ा कारण है।

2. शराब पीकर वाहन चलाना भी भारत में सड़क दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण है। कई लोग इसे अपराध नहीं, बल्कि सामान्य बात समझते हैं। दोस्तों के साथ पार्टी के बाद खुद गाड़ी चलाने का आत्मविश्वास, या यह सोच कि "थोड़ी-सी शराब से क्या फर्क पड़ेगा", अक्सर घातक सिद्ध होती है। नशे की हालत में प्रतिक्रिया समय कम हो जाता है और निर्णय लेने की क्षमता कमजोर पड़ जाती है, जिससे दुर्घटना की संभावना कई गुना बढ़ जाती है।

इसके अलावा,

3. नींद की झपकी और थकान भी एक गंभीर लेकिन अक्सर अनदेखा किया जाने वाला कारण है। लंबी दूरी की यात्रा, रात में ड्राइविंग या लगातार काम के बाद वाहन चलाना शरीर और मस्तिष्क पर भारी पड़ता है। कई हादसे केवल इसलिए हो जाते हैं क्योंकि चालक कुछ सेकंड के लिए झपकी ले लेता है। यह कुछ सेकंड किसी के पूरे जीवन पर भारी पड़ सकते हैं।

सरकार और प्रशासन द्वारा जो सड़क सुरक्षा को लेकर

1. जो प्रयास किए गए हैं,
2. जो यातायात नियम बनाए गए हैं,
3. जो जुर्माने बढ़ाए गए हैं,
4. जो हेलमेट और सीट बेल्ट को अनिवार्य किया गया है और
5. जो जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं।

उन सब का कोई असर नहीं नजर आ रहा क्योंकि सच्चाई यह है कि कानून तभी प्रभावी होते हैं, जब लोग उन्हें दिल से स्वीकार करें। केवल डर के कारण नियमों का पालन करना पर्याप्त नहीं है; इसके लिए सोच और व्यवहार में बदलाव जरूरी है।

सड़क सुरक्षा को केवल प्रशासन की जिम्मेदारी मान लेना एक बड़ी भूल है, यह हर नागरिक की साझा जिम्मेदारी है।

* एक चालक के रूप में हमारी लापरवाही ना केवल हमारी जान के लिए खतरा है, बल्कि सड़क पर चल रहे अन्य लोगों के जीवन को भी जोखिम में डालती है। पैदल चलने वाले, साइकिल सवार, बुजुर्ग, बच्चे —सभी हमारी एक गलती का शिकार बन सकते हैं।

परिवार और शिक्षा व्यवस्था की भूमिका भी इस संदर्भ में बेहद महत्वपूर्ण है। अभिभावकों को चाहिए कि वह बच्चों को वाहन चलाने की अनुमति देने से पहले उन्हें यातायात नियमों और सड़क सुरक्षा का सही ज्ञान दें। केवल वाहन चलाना सिखवा देना पर्याप्त नहीं है;

* सुरक्षित और जिम्मेदार ड्राइविंग की आदत डालना ज़रूरी है।

* स्कूलों और कॉलेजों में भी सड़क सुरक्षा को लेकर नियमित जागरूकता कार्यक्रम होने चाहिए, ताकि युवा उम्र से ही इन मूल्यों को अपनाएँ।

मीडिया की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। फिल्मों और विज्ञापनों में अक्सर तेज़ रफ्तार और जोखिम भरी ड्राइविंग को रोमांच और बहादुरी के रूप में दिखाया जाता है। इसका प्रभाव युवाओं पर गहरा पड़ता है।

* ज़रूरत है कि मनोरंजन के माध्यमों में भी जिम्मेदार संदेश दिए जाएँ और सुरक्षित व्यवहार को बढ़ावा दिया जाए।

समाज के स्तर पर भी सोच में बदलाव की आवश्यकता है।

* हमें यह समझना होगा कि नियम तोड़ना चालाकी नहीं, बल्कि गैर-जिम्मेदारी है।

* शराब पीकर या बिना हेलमेट के वाहन चलाने वाले को शाबाशी नहीं, बल्कि रोक और समझाइश मिलनी चाहिए।

जब तक लापरवाही पर सामाजिक अस्वीकार नहीं होगा, तब तक इस समस्या पर काबू पाना मुश्किल है।

आज सड़क हादसों में होने वाली मौतें केवल आंकड़े नहीं हैं। हर मौत के पीछे

* एक परिवार का उजड़ना,
* माता - पिता के सपनों का टूटना और
* समाज की एक संभावनाशील शक्ति का समाप्त होना छिपा होता है।

युवा देश की रीढ़ होते हैं। उनकी असमय मृत्यु न केवल परिवार, बल्कि राष्ट्र के लिए भी अपूरणीय क्षति है।

इस गंभीर स्थिति से निपटने के लिए हमें व्यक्तिगत, सामाजिक और संस्थागत — तीनों स्तरों पर प्रयास करने होंगे।

* **व्यक्तिगत स्तर पर** हर चालक को यह संकल्प लेना होगा कि वह नियमों का पालन करेगा और दूसरों की सुरक्षा का सम्मान करेगा।

* **सामाजिक स्तर पर** हमें सुरक्षित ड्राइविंग को संस्कार के रूप में अपनाना होगा। और

* **संस्थागत स्तर पर** कानून के प्रभावी क्रियान्वयन और निरंतर जागरूकता की आवश्यकता होगी।

अंततः, सड़क पर सुरक्षित रहना केवल अपनी जान बचाने का सवाल नहीं है, बल्कि यह मानवता और जिम्मेदारी का प्रश्न है।

थोड़ी - सी सावधानी, धैर्य और अनुशासन न जाने कितनी जिंदगियों को बचा सकता है। अगर हम आज नहीं चेते, तो कल यह त्रासदी किसी भी घर का दरवाज़ा खटखटा सकती है।

युवाओं की ज़िंदगी अनमोल है — इसे लापरवाही की भेंट चढ़ने से बचाना हम सबकी जिम्मेदारी है।

'परिवहन विशेष' द्वारा जनहित में जारी

क्या आपको अपने बैंक से केवाईसी अपडेट करने का मैसेज मिला है? चिंता न करें! इसमें बहुत कम समय लगता है और यह आसान है तथा यह आपकी बैंकिंग सेवाओं को बिना रुकावट जारी रखने में मदद करता है

कैसे? यदि केवाईसी में कोई बदलाव नहीं हुआ है या सिर्फ़ आपके पते में कोई बदलाव हुआ है, तो इसके लिए स्व-घोषणा ही काफ़ी है

अन्य बदलावों के लिए आप निम्नलिखित माध्यम से इसे आसानी से अपडेट कर सकते हैं:
* आधार ओटीपी आधारित ई-केवाईसी
* वीडियो केवाईसी
* अपनी बैंक शाखा में आधिकारिक रूप से मान्य दस्तावेज़ (ओवीडी) की अपडेटेड प्रति जमा करके

बस याद रखें:
*** केवल बैंक द्वारा अधिकृत माध्यमों से ही केवाईसी अपडेट करें।**
*** आरबीआई कहता है - जानकार बनिए, सतर्क रहिए!!**

दिल्ली रिज, सुप्रीम कोर्ट ने पैरामिलिट्री हॉस्पिटल के लिए सड़क चौड़ी करने के लिए 152 पेड़ काटने और 2.97Ha जंगल की ज़मीन बदलने की इजाज़त दी

संजय कुमार बाठला

दिल्ली रिज पेड़ काटने के कंटेम्प्ट केस में सुप्रीम कोर्ट ने सीएपीएफआईएमएस (CAPFIMS) पैरामिलिट्री हॉस्पिटल के "बेहतर ऑपरेशन" के लिए ज़रूरी सड़क बनाने के लिए 2.97 हेक्टेयर जंगल की ज़मीन बदलने की इजाज़त दी।

इसके साथ ही सड़क चौड़ी करने के प्रोजेक्ट के लिए 152 पेड़ काटने की भी इजाज़त दी। साथ ही यह भी कहा कि पेड़ काटने के बदले में कम से कम 5 गुना ज़्यादा पौधे लगाए जाएंगे।

कोर्ट ने एक्सपर्ट कमिटी की सीधी देखरेख में और डीडीए के कहने पर 2519 पौधों को दूसरी जगह लगाने की भी इजाज़त दी।

कोर्ट ने आगे कहा, "इस बात का ध्यान रखते हुए कि पौधों को दूसरी जगह लगाने के मामले में मौत की दर ज़्यादा हो जाती है, एक्सपर्ट कमिटी को यह ध्यान रखना चाहिए कि आखिर में मौत की दर ज़ीरो रहे, इसके लिए कितने और पौधे लगाने की ज़रूरत है।"

कोर्ट ने आगे कहा कि एक्सपर्ट कमिटी को समय रहते यह पक्का करना चाहिए कि मुआवज़े के तौर पर कम से कम 2 लाख पौधे ज़िंदा रहें।

चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया (सीजेआई) सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्या बागची और जस्टिस विपुल एम पंचोली की बेंच ने सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता और सीनियर एडवोकेट गोपाल शंकरनारायणन (कंटेम्प्ट पिटीशनर के लिए), मनिंदर सिंह (डीडीए के लिए) और गुरु कृष्ण कुमार (एमिक्स क्यूरी) की बात सुनने के बाद यह ऑर्डर दिया।

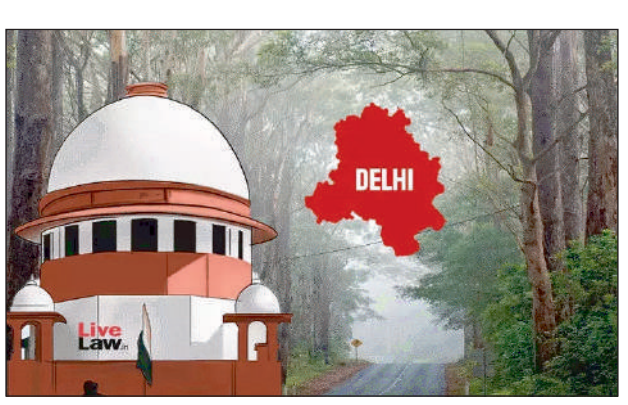

अपने ऑर्डर में बेंच ने अधिकारियों की यह बात भी दर्ज की कि पिछले ऑर्डर के मुताबिक, प्लांटेशन से पहले की एक्टिविटी शुरू हो गईं और फरवरी के आखिर तक पूरी हो जाएंगी। कोर्ट ने कहा कि जैसे ही खेत तैयार होंगे, नया प्लांटेशन का काम तुरंत शुरू किया जा सकता है, ताकि यह मार्च के आखिर तक पूरा हो जाए।

बेंच ने आगे कहा कि अगर कोई देरी, लापरवाही या हिचकिचाहट होती है तो एक्सपर्ट कमिटी एडमिनिस्ट्रेटिव साइड से उसे बता सकती है, ताकि ज़रूरी निर्देश दिए जा सकें।

यह बताए जाने पर कि एक्सपर्ट कमिटी के एक मेंबर को एनजीटी के लिए नॉमिनेट किया गया, बेंच ने एमिक्स क्यूरी से किसी जाने-माने व्यक्ति के लिए सुझाव भी मांगे, जिसे कमिटी में अपॉइंट किया जा सके। एमिक्स क्यूरी की सिफारिश पर बेंच ने रिटायर्ड आईएफएस ऑफिसर और हरियाणा सरकार के पूर्व प्रिंसिपल सेक्रेटरी, श्री एमबी सिन्हा को कमिटी का तीसरा मेंबर अपॉइंट किया।

उन पौधों को उखाड़कर दूसरी जगह लगाना चाहते थे, जिन्हें पेड़ काटने के बाद दोबारा लगाया गया।

उन्होंने कहा, "यह एक सर्कस बन गया।"

इस पर सीजेआई ने कहा, "ट्रांसप्लांटेशन में मॉर्टेलिटी रेट ओरिजिनल प्लांटेशन की तुलना में बहुत ज़्यादा है।"

इसके बाद गोपाल एस ने बताया कि नवंबर में बेंच ने नोट किया कि प्रतिवादी को 31 मार्च तक लगभग 1,62,000 पौधे लगाने थे।

हालांकि, उन्होंने दावा किया कि आज तक 1 भी नहीं लगाया गया और सुझाव दिया कि कोर्ट उस पार्टी को "लंबी रस्सी" न दे जो मानी हुई "अड़ियल" है।

जवाब में सीजेआई ने पूछा कि प्रतिवादियों की लापरवाही की वजह से पैरामिलिट्री के जवानों को क्यों परेशानी हो रही है।

गोपाल एस ने जवाब दिया, "उन्हें बिल्कुल भी परेशानी नहीं हो रही है।" साथ ही कहा कि हॉस्पिटल तक जाने वाली सड़क "बड़ी और मौजूदा" है।

सीजेआई को यकीन नहीं हुआ, उन्होंने सुझाव दिया कि ऐसा नज़रिया अपनाने में कंजर्वेटिव नहीं होना चाहिए।

सीजेआई ने कहा, "जब हॉस्पिटल में लोगों के लिए हेलीपैड हो सकते हैं तो इन बेचारे पैरामिलिट्री फोर्स के लोगों के लिए कम-से-कम सड़क पर एम्बुलेंस तो चल ही सकती है।"

बाद में एमिक्स क्यूरी ने दूसरी बातों के साथ-साथ सड़क की चौड़ाई का मुद्दा भी उठाया। उन्होंने कहा कि शुरू में 7.5 m चौड़ी सड़क बनाने का सोचा गया। हालांकि, प्रतिवादी फिर 15 मीटर चौड़ी सड़क पर सहमत हो गए और अब जो आंकड़ा प्रपोज़ किया जा रहा है वह 30 मीटर (साइकिल ट्रैक वगैरह के साथ) है।

इस बारे में सीजेआई ने कहा, "भले ही यह 50 मीटर हो, हम नहीं रुकेंगे, जब तक यह पैरामिलिट्री के लिए है।"

Case Title: BINDU KAPUREA Versus SUBHASISH PANDA AND ORS., MA 1652/2025

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार

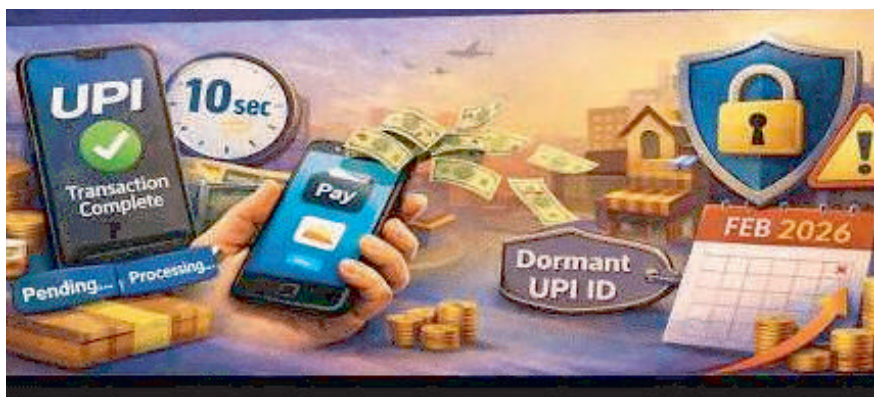

UPI नियम 2026 – अप्रैल 2026 से पूरी तरह लागू होंगे, ये नियम UPI को और अधिक सुरक्षित और भरोसेमंद बनाएंगे।

1. प्रमुख बदलाव

- दो-स्तरीय प्रमाणीकरण (2FA) अनिवार्यः ₹2,000 से अधिक के हर UPI भुगतान में अब UPI PIN के साथ-साथ एक अतिरिक्त सत्यापन (OTP, बायोमेट्रिक स्कैन या डिवाइस-आधारित पुष्टि) आवश्यक होगा।

- दैनिक लेन-देन सीमाः ₹1 लाख प्रति दिन की सीमा को दोहराया गया है ताकि दुरुपयोग और सिस्टम पर बोझ रोका जा सके।

- डायनेमिक सुरक्षा उपायः उच्च-मूल्य के लेन-देन में कम से कम एक डायनेमिक सुरक्षा परत (जैसे समय-संवेदनशील OTP या बायोमेट्रिक) का प्रयोग अनिवार्य होगा।

- धोखाधड़ी से सुरक्षाः संदिग्ध गतिविधियों पर अधिक निगरानी और अलर्ट, विशेषकर बार-बार या बड़े लेन-देन के लिए।

2. आम जनता पर प्रभाव

2.1 लेन-देन अधिक सुरक्षित होंगे, धोखाधड़ी का खतरा कम होगा, लेकिन अतिरिक्त सत्यापन से भुगतान में थोड़ी देरी हो सकती है

2.2. छोटे भुगतान (<₹2,000) पहले की तरह तेज़ और आसान रहेंगे; किराया, फीस या बड़ी खरीदारी में समय अधिक लगेगा।

2.3 डिजिटल भुगतान पर भरोसा बढ़ेगा क्योंकि धोखाधड़ी कम होगी, हालांकि शुरुआत में लोग अतिरिक्त चरणों को बोझिल मान सकते हैं।

2.4. व्यापारिक लेन-देनः व्यापारियों को धोखाधड़ी से सुरक्षा और ग्राहक विश्वास मिलेगा।

3. व्यावहारिक उदाहरण

- किराया भुगतान (₹15,000): PIN + OTP/बायोमेट्रिक आवश्यक।

- किराना खरीद (₹1,500): कोई बदलाव नहीं, केवल PIN।

- ऑनलाइन शॉपिंग (₹5,000): अतिरिक्त सत्यापन आवश्यक।

- ट्यूशन फीस (₹50,000): कई बार सत्यापन, लेकिन दैनिक सीमा के भीतर।

4. व्यापक असर

- नागरिकों परः छोटे भुगतान आसान रहेंगे, बड़े भुगतान थोड़े धीमे लेकिन सुरक्षित होंगे।

- व्यापारियों परः धोखाधड़ी कम होगी, लेकिन ग्राहकों को नए नियम समझाने की ज़रूरत होगी।

- डिजिटल अर्थव्यवस्था परः सुरक्षित और भरोसेमंद डिजिटल लेन-देन को बढ़ावा मिलेगा।

5. जोखिम और संतुलन

- उपयोगकर्ता असुविधाः कुछ लोग अतिरिक्त चरणों को असुविधाजनक मान सकते हैं।

- डिजिटल विभाजनः बुजुर्ग या कम तकनीकी ज्ञान वाले लोग OTP/बायोमेट्रिक में कठिनाई महसूस कर सकते हैं।

- सिस्टम अनुकूलनः बैंकों और ऐप्स को नए नियमों के अनुसार ढाँचा सुधारना होगा।

संक्षेप में:

1. UPI 2026 नियम सुविधा और सुरक्षा के बीच संतुलन बनाते हैं।

2. छोटे भुगतान पहले की तरह तेज़ रहेंगे, जबकि

3. बड़े भुगतान अधिक सुरक्षित होंगे।

इससे जनता का UPI पर भरोसा बढ़ेगा, भले ही उच्च-मूल्य के लेन-देन में थोड़ी असुविधा हो।

नया स्कैम का तरीका!

केके छाबड़ा

30 मिनट में आपकी ज़िंदगी पैसे के मामले में बर्बाद हो सकती है। जी हां यह कोई आम फ़ोन स्कैम नहीं है — यह कहीं ज़्यादा खतरनाक है।

स्कैमर को आपका पैसा, आपका पासवर्ड या आपका भरोसा नहीं चाहिए उन्हें सिर्फ़ आपकी मेहरबानी चाहिए।

हाल ही में, मॉल, मेट्रो स्टेशन, मार्केट प्लेस और पब्लिक जगहों पर एक नया "मदद मांगने वाला स्कैम" सामने आया है।

स्कैमर आमतौर पर अच्छे कपड़े पहने अधेड़ उम्र के या बुजुर्ग लोग होते हैं।

वह कह सकते हैं कि उन्हें अपना फ़ोन इस्तेमाल करना नहीं आता, उन्हें अपनी पेंशन या सब्सिडी चेक करनी है, या उन्होंने गलती से गलत पेज दबा दिया है, और वे आपसे अपना फ़ोन चलाने में मदद मांगते हैं।

चेतावनी:

1. जब आप फ़ोन हाथ में लेते हैं, तो यह अक्सर पहले से ही वीडियो कॉल पर होता है, या स्क्रीन रिकॉर्डिंग और फेशियल रिकग्निशन परमिशन चालू होती हैं।

2. दूसरी तरफ़ से कोई आपको देख रहा होता है। आपको लगता है कि आप मदद कर रहे हैं, लेकिन आपका बायोमेट्रिक डेटा इकट्ठा किया जा रहा होता है।

यह कोई आम स्कैम नहीं है। यह एक AI बायोमेट्रिक आइडेंटिटी स्कैम है।

उन्हें आपका पैसा नहीं चाहिए, वह आपको चाहते हैं।

1. जब आप फ़ोन को छूते हैं (फिंगरप्रिंट),

2. नंबर या वेरिफिकेशन कोड पढ़ते हैं (आवाज़), या

3. बोलते या फ़ोन इस्तेमाल करते समय स्क्रीन देखते हैं (चेहरे का मूवमेंट),

तो आपके तीन मुख्य बायोमेट्रिक आइडेंटिफायर — फिंगरप्रिंट, आवाज़ और चेहरा — चोरी हो सकते हैं।

मॉडर्न AI आपका लगभग परफेक्ट डिजिटल क्लोन बना सकता है।

इसके बाद जो होता है वह डरावना है।

स्कैमर आपके डिजिटल क्लोन का इस्तेमाल

1. ऑनलाइन लोन,

2. कंज्यूमर फाइनेंसिंग,

3. क्रेडिट कैश - आउट

के लिए अप्लाई करने और ऑटोमैटिकली फेस और वॉयस वेरिफिकेशन पास करने के लिए कर सकते हैं।

* 30 मिनट के अंदर, आप जितने भी लोन के लिए एलिजिबल हैं, वह खत्म हो सकते है।

* आपको बैंक से नोटिफिकेशन मिलते हैं, तो आपको पता चलता है कि आपका पैसा गायब नहीं हुआ है — बल्कि, आप कर्ज़ में डूबे हुए हैं,

शायद लाखों या करोड़ों रुपये के।

याद रखने योग्य 3 नियमः

1. अजनबियों को फ़ोन चलाने में कभी मदद नहीं करें।

2. किसी भी चीज़ को नहीं छुएं, ना क्लिक करें, ना देखें, और ना ही ज़ोर से पढ़ें — भले ही वह कहें, "बस एक क्लिक।"

3. अनजान वीडियो कॉलः तुरंत कॉल डिस्कनेक्ट करें। कैमरे में देखने और बात करने की रिक्वेस्ट पर कभी भी कोऑपरेट न करें।

अपने जानकार बुजुर्गों, बच्चों और दोस्तों को भी इस नए स्कैम की जानकारी दे क्योंकि स्कैमर अब अच्छे लोगों को टारगेट कर रहे हैं।

जानने योग्य बातः कभी यह न सोचें, "मैं इतना बदकिस्मत नहीं होऊंगा," या "मैं इतना स्मार्ट हूं कि इस स्कैम में नहीं फंसूंगा।" इसी कॉन्फिडेंस और दयालुता का स्कैमर फायदा उठाते हैं।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

तेल बहुत कम करना समझदारी हो सकती है, लेकिन "हर खाने में ज़ीरो ऑयल" हमेशा सबके लिए सबसे अच्छा आइडिया नहीं होता, खासकर लंबे समय के लिए।

इसे साफ़ - साफ़ समझते हैं।

क्या "ज़ीरो कुकिंग ऑयल" हमेशा अच्छा होता है?

* कभी - कभी हाँ।

* हमेशा के लिए, हर खाने में — ज़रूरी नहीं।

क्योंकि आपके शरीर को कई ज़रूरी कामों के लिए कुछ हेल्दी फैट की ज़रूरत होती है।

ज़ीरो - ऑयल वाला खाना दिल की सेहत पर कैसे असर डालता है? दिल के लिए फ़ायदे (खासकर अगर आप अभी ज़्यादा तेल खाते हैं)

* अगर आप रेगुलर/ऑयल वाले खाने से ज़ीरो - ऑयल वाला खाना खाना शुरू करते हैं, तो इससे:

* कैलोरी लोड कम हो सकता है
* वज़न घटाने में मदद मिल सकती है
* ट्राइग्लिसराइड्स बेहतर हो सकते हैं
* LDL कोलेस्ट्रॉल बेहतर हो सकता है
* फैटी लिवर कम हो सकता है
* कई लोगों में सूजन कम हो सकती है

तो हाँ, अगर पहले की डाइट में तेल/घी/तला हुआ खाना ज़्यादा होता था, तो दिल की सेहत बेहतर हो सकती है, लेकिन बहुत कम फैट दिल की सेहत को इनडायरेक्ट तरीके से नुकसान भी पहुंचा सकता है। अगर आप लंबे समय तक लगभग बिल्कुल भी फैट नहीं लेते हैं, तो इससे:

* HDL (अच्छा कोलेस्ट्रॉल) बहुत ज़्यादा कम हो सकता है
* हार्मोनल इम्बैलेंस हो सकता है
* क्रेविंग बढ़ सकती है → जिससे बाद में बिंज ईटिंग हो सकती है
* फैट-सॉल्युबल विटामिन का एब्ज़ॉर्प्शन कम हो सकता है

ज़ीरो-ऑयल दिमाग और नसों पर कैसे असर डालता है ? आपका दिमाग ज़्यादातर फैट से बना होता है। बहुत कम फैट वाली डाइट से ये हो सकता है:

* कम कॉन्संट्रेशन
* कम मूड या चिड़चिड़ापन
* कुछ लोगों में नसों में सूखापन / झुनझुनी
* कुछ लोगों में नींद की दिक्कत (खासकर ज़्यादा उम्र में।)
* विटामिन पर असर (बहुत ज़रूरी)

थोड़े फैट के बिना, आपका शरीर इन विटामिन को ठीक से एब्ज़ॉर्ब नहीं करता है:

* विटामिन A
* विटामिन D
* विटामिन E
* विटामिन K

इसलिए भले ही आप सब्ज़ियां खाएं, लेकिन थोड़े फैट के बिना उनके विटामिन ठीक से एब्ज़ॉर्ब नहीं हो सकते हैं। स्किन, जोड़ और पाचन बहुत कम तेल लेने से ये हो सकता है:

* ड्राई स्किन
* कब्ज़

* जोड़ों में अकड़न
* कम बाइल फ्लो (फैट बाइल के काम में मदद करता है)

सबसे हेल्दी तरीका क्या है? सबसे अच्छी स्ट्रेटेजी: "रोज़ कम तेल" + "कभी-कभी ज़ीरो तेल" हमेशा ज़ीरो तेल के बजाय।

कितना तेल हेल्दी माना जाता है?

ज़्यादातर बड़ों के लिए: कुल 2 से 3 चम्मच हर दिन (यह लगभग 10–15 ml/दिन है)। इसमें खाना पकाने में इस्तेमाल होने वाला तेल भी शामिल है।

अगर किसी व्यक्ति का वज़न ज़्यादा है, डायबिटीज़ है, फैटी लिवर है, हाई ट्राइग्लिसराइड्स हैं: हर दिन 1 से 2 चम्मच भी काफी हो सकते हैं।

कौन से तेल सबसे अच्छे हैं? थोड़ी-थोड़ी मात्रा में बदलें:

* सरसों का तेल (पारंपरिक, अच्छा)
* मूंगफली का तेल
* चावल की भूसी का तेल
* जैतून का तेल (सलाद के लिए, भारतीय तेज़ आंच पर पकाने के लिए नहीं)

सबसे अच्छे फैट सोर्स (बिना "कुकिंग ऑयल" के) अगर आप कुकिंग ऑयल नहीं भी लेते हैं, तो भी ये चीज़ें शामिल करें:

* 4–6 बादाम
* 1 अखरोट
* 1 tsp अलसी / चिया
* 1 tsp घी (ऑप्शनल, अगर कोलेस्ट्रॉल ठीक है)

आखिरी सलाह (आसान और प्रैक्टिकल) बिना तेल वाला खाना अच्छा है:

* वज़न कंट्रोल के लिए
* हाई कोलेस्ट्रॉल/ट्राइग्लिसराइड्स के लिए
* फैटी लिवर के लिए
* BP और डायबिटीज़ सपोर्ट के लिए

लेकिन हर मील में, रोज़ाना, लंबे समय तक बिना तेल के:

* विटामिन एब्ज़ॉर्प्शन कम कर सकता है
* सूखापन, कब्ज़ हो सकता है
* हार्मोन और दिमाग की सेहत पर असर पड़ सकता है

- हाई ब्लड कोलेस्ट्रॉल: चुपचाप बढ़ने वाला बड़ा खतरा -

आज की भागदौड़ भरी लाइफ में हाई ब्लड कोलेस्ट्रॉल या हाइपरकोलेस्ट्रोलेमिया ऐसी समस्या बन चुकी है जो दुनिया भर में तेजी से फैल रही है। दिक्कत यह है कि ज्यादातर लोगों को पता ही नहीं चलता कि उनके शरीर में कोलेस्ट्रॉल कब और कितना बढ़ गया।

लक्षण धीरे-धीरे आते हैं, और अक्सर हम उन्हें इग्नोर करते रहते हैं। हो सकता है इस वक्त आपके शरीर में भी कोलेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ा हुआ हो और आपको इसकी खबर तक न हो।

वैश्विक स्तर पर दिल की बीमारियां मौत का सबसे बड़ा कारण बन चुकी हैं। इस्कीमिक हार्ट डिजीज जैसी स्थितियों में दिल तक खून और ऑक्सीजन सही मात्रा में नहीं पहुंच पाती, और हार्ट अटैक का खतरा लगातार बना रहता है।

इन समस्याओं के पीछे सबसे बड़ी वजहों में से एक है बढ़ा हुआ एलडीएल कोलेस्ट्रॉल। भारत में भी हर साल लाखों लोग दिल की बीमारियों की वजह से अपनी जान गंवा देते हैं, और इसमें युवा से लेकर बुजुर्ग तक शामिल हैं।

कोलेस्ट्रॉल आखिर है क्या

कोलेस्ट्रॉल एक मोम जैसा, हल्का पीला और चिकना पदार्थ है जो हमारे शरीर के लिए जरूरी है। इसे पूरी तरह दुश्मन समझ लेना गलत है। असल में यह शरीर की कई अहम प्रक्रियाओं में काम आता है।

लीवर में बाइल एसिड बनाने में कोलेस्ट्रॉल की भूमिका होती है, जो भोजन को पचाने में मदद करता है। धूप की मदद से विटामिन डी के निर्माण में भी यह सहायक है। इसके अलावा शरीर में बनने वाले सेक्स हार्मोन भी इसी पर निर्भर करते हैं। यानी कोलेस्ट्रॉल शरीर के लिए जरूरी है, लेकिन सही मात्रा में।

लगभग 70 प्रतिशत कोलेस्ट्रॉल हमारा लीवर खुद बनाता है, जबकि करीब 30 प्रतिशत हमें खाने से मिलता है।

अच्छा और बुरा कोलेस्ट्रॉल

कोलेस्ट्रॉल mainly से दो types का होता है:

एचडीएल – हाई डेंसिटी लिपोप्रोटीन, जिसे अच्छा कोलेस्ट्रॉल कहा जाता है।

एलडीएल – लो डेंसिटी लिपोप्रोटीन, जिसे बुरा कोलेस्ट्रॉल माना जाता है।

एचडीएल शरीर से अतिरिक्त फैट को हटाने में मदद करता है और धमनियों को साफ रखने में सहायक होता है। वहीं एलडीएल धमनियों की दीवारों पर जमा होने लगता है और प्लाक बनाता है। यही प्लाक आगे चलकर ब्लॉकेज और हार्ट अटैक की वजह बन सकता है।

कौन सी चीजें बढ़ाती हैं एलडीएल

आज की डाइट में ऐसी बहुत सी चीजें शामिल हैं जो एलडीएल को तेजी से बढ़ाती हैं:

डीप फ्राइड फूड, samosa
तला हुआ नॉनवेज
मैदा से बनी चीजें
घी, बटर, डालडा और रिफाइंड वेजिटेबल ऑयल
केक, पेस्ट्री, मिठाइयां
तले हुए स्नैक्स
अत्यधिक अंडे
सिगरेट और शराब

ये सभी चीजें शरीर में बैड कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ाकर धमनियों में जमाव पैदा करती हैं।

शरीर में क्या होता है जब कोलेस्ट्रॉल बढ़ता है

जब एलडीएल ज्यादा हो जाता है, तो यह खून ले जाने वाली नसों यानी आर्टरीज में जमा होने लगता है। धीरे-धीरे ये नसें संकरी होने लगती हैं। दिल तक खून पहुंचाने वाली कोरोनरी आर्टरी और दिमाग तक खून ले जाने वाली कैरोटिड आर्टरी सबसे ज्यादा प्रभावित होती हैं। यही कारण है कि अचानक

हार्ट अटैक या ब्रेन स्ट्रोक का खतरा बढ़ जाता है।

कई बार व्यक्ति बाहर से बिल्कुल स्वस्थ दिखता है, लेकिन अंदर ही अंदर नसों में प्लाक जमा हो रहा होता है।

लाइफस्टाइल की बड़ी भूमिका

दो बड़ी वजहें हैं जिनसे कोलेस्ट्रॉल तेजी से बढ़ता है:

पहली – शारीरिक गतिविधि की कमी।

दूसरी – भारी और ज्यादा फैट वाला भोजन।

जब शरीर को पर्याप्त एक्सरसाइज नहीं मिलती और डाइट हैवी व ऑयली होती है, तो फैट जमा होने लगता है और एलडीएल बढ़ता जाता है।

शुरुआती लक्षण जिन्हें नजरअंदाज न करें

हाई कोलेस्ट्रॉल अक्सर साइलेंट होता है, लेकिन कुछ संकेत मिलते हैं।

हाथ-पैर सुन्न होना

पैरों में झुनझुनी या चींटी काटने जैसा एहसास

रात में ऐंठन या नस चढ़ना

हाथ-पैर का ठंडा रहना

ये सब संकेत हो सकते हैं कि मसल्स तक खून सही मात्रा में नहीं पहुंच पा रहा।

लगातार थकान और सुस्ती

अगर आप बिना ज्यादा काम किए ही थक जाते हैं, ज्यादा पसीना आता है या थोड़ी सी मेहनत में ही सांस फूलने लगती है, तो यह भी संकेत हो सकता है कि दिल तक ब्लड फ्लो कमजोर हो रहा है। एलडीएल के कारण धमनियों में प्लाक बनने से खून का बहाव कम हो जाता है।

वजन बढ़ना और कोलेस्ट्रॉल

जब एचडीएल कम और एलडीएल ज्यादा होता है, तो शरीर में फैट तेजी से जमा होने लगता है। इसलिए ओवरवेट लोगों में हाई कोलेस्ट्रॉल की संभावना ज्यादा होती है। बढ़ता वजन, दिल और दिमाग दोनों के लिए जोखिम बढ़ा देता है।

सीने में दर्द और एंजाइना

धमनियों में फैट जमा होने से ब्लड फ्लो बाधित होता है। इससे सीने में भारीपन, दबाव या चुभन जैसा दर्द महसूस हो सकता है। इसे हल्के में लेना खतरनाक हो सकता है।

सिरदर्द, चक्कर और माइग्रेन

जब दिमाग तक खून पहुंचाने वाली नसें प्रभावित होती हैं, तो सिर के पिछले हिस्से में दर्द, आधे सिर में तेज दर्द, चक्कर या घबराहट हो सकती है। कई मामलों में बढ़े हुए ट्राइग्लिसराइड्स माइग्रेन को भी ट्रिगर कर सकते हैं।

सांस फूलना और ज्यादा पसीना

दिल और फेफड़ों में खून का संचार कमजोर होने पर थोड़ी सी एक्टिविटी में ही सांस फूलने लगती है। व्यक्ति जल्दी हांफने लगता है। कुछ लोगों को ज्यादा पसीना आना और सांसों में बदबू की समस्या भी होने लगती है।

पाचन पर असर

जब लिवर में कोलेस्ट्रॉल बढ़ जाता है तो मेटाबॉलिज्म कमजोर पड़ने लगता है। बाहर का या ज्यादा फैट वाला खाना खाने पर पेट फूलना, गैस, कब्ज या अपच की समस्या होने लगती है। कुछ मामलों में बार-बार पतला मल आना भी इससे जुड़ा हो सकता है।

आंखों के आसपास पीले दाने

एलडीएल बढ़ने पर आंखों के आसपास हल्के पीले रंग के छोटे-छोटे दाने दिख सकते हैं। समय के साथ ये बड़े हो सकते हैं। यह स्थिति जैंथेलाज्मा कहलाती है और इसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

समय पर जांच क्यों जरूरी है

क्योंकि हाई कोलेस्ट्रॉल के लक्षण हमेशा साफ नजर नहीं आते, इसलिए समय-समय पर ब्लड टेस्ट कराना जरूरी है। खासकर अगर परिवार में दिल की बीमारी का इतिहास है, वजन ज्यादा है, या लाइफस्टाइल बैठने वाला है।

Conclusion

कोलेस्ट्रॉल दुश्मन नहीं है, लेकिन असंतुलन खतरनाक है। सही डाइट, नियमित व्यायाम, तनावनियंत्रण और समय पर जांच से इस समस्या को काफी हद तक रोका जा सकता है। शरीर जो छोटे-छोटे संकेत देता है, उन्हें अनदेखा न करें। समय रहते कदम उठाना ही सबसे बड़ी समझदारी है।

"नए वस्त्रों के प्रयोग से पहले धुलाई"

सूक्ष्मजीव बनाम औद्योगिक रसायन — एक मूलभूत अंतर

विद्या भूषण भारद्वाज

1. जब आप कपड़े गर्म पानी और डिटर्जेंट से धोते हैं, तोः बैक्टीरिया, फफूंद, वायरस, कीटाणु, खुजली (स्केबीज़) पैदा करने वाले जीव आदि काफी हद तक नष्ट हो जाते हैं या हट जाते हैं, क्योंकिः

* डिटर्जेंट उनकी कोशिका झिल्ली को तोड़ देता है।
* गर्मी उनके जीवित रहने की क्षमता को कम करती है।
* पानी से धुलाई उन्हें बहाकर निकाल देती है।
* यह प्रक्रिया इसलिए प्रभावी होती है क्योंकि सूक्ष्मजीव "जैविक" और अपेक्षाकृत नाजुक होते हैं। पानी और साबुन उनकी संरचना को नष्ट कर देते हैं।
* इसके विपरीतः वस्त्र निर्माण और फिनिशिंग में प्रयुक्त कैंसरकारी (कार्सिनोजेनिक) रसायन आसानी से नहीं निकलते, क्योंकि वे कपड़े के रेशों में समाए होते हैं या उनसे रासायनिक रूप से जुड़े होते हैं।
* कुछ पदार्थों को जानबूझकर टिकाऊ, जल - रोधी, शिकन - रहित या दाग - प्रतिरोधी बनाया जाता है — इसलिए साधारण धुलाई उन्हें नहीं हटाती।

2. कपड़ों में छिपे रसायन — जो धुलाई से नहीं हटते कई वस्त्र ऐसे रसायनों से युक्त होते हैं जो सामान्य गंदगी की तरह नहीं धुलते, क्योंकि वे कपड़े में स्थायी रूप से लगाए जाते हैंः

१. रंग और उनके उप - उत्पाद कुछ रंग, विशेषकर पुराने या अनियंत्रित एज़ो (Azo) डाई, टूटकर ऐसे अमाइन बना सकते हैं जिन्हें कैंसरकारी या संभावित कैंसरकारी माना जाता है। पसीने और रगड़ के साथ ये त्वचा में प्रविष्ट हो सकते हैं।

२. फॉर्मल्डिहाइड (Formaldehyde) कपड़ों को सिकुड़न - रोधी और शिकन - रहित बनाने के लिए इसका उपयोग किया जाता है। इसे संभावित मानव कैंसरकारी पदार्थ माना गया है। यह धुलाई के बाद भी कपड़े में रह सकता है, धीरे - धीरे गैस के रूप में निकलता है और त्वचा में स्थानांतरित हो सकता है।

३. भारी धातुएँ सीसा (Lead), कैडमियम (Cadmium), क्रोमियम (Chromium) जैसी धातुएँ कभी - कभी रंग और फिनिशिंग में प्रयुक्त होती हैं। ये धुलाई से नहीं निकलतीं, क्योंकि ये कपड़े की संरचना से बंधी होती हैं और शरीर में धीरे-धीरे जमा हो सकती हैं।

४. PFAS ("Forever Chemicals") पर - और पॉलीफ्लुओरोएल्किल पदार्थ (PFAS) जल - रोधी और दाग - प्रतिरोधी गुण देने के लिए उपयोग किए जाते हैं। ये अत्यंत स्थायी होते हैं, धुलाई से नहीं हटते, और प्रतिरक्षा तंत्र पर प्रभाव, हार्मोन असंतुलन तथा कुछ प्रकार के कैंसर से जुड़े पाए गए हैं।

५. अग्निरोधी रसायन एवं प्लास्टिसाइज़र जैसे पॉलीब्रोमिनेटेड डाइफिनाइल ईथर (PBDEs) और फ्थैलेट्स (Phthalates)। ये अग्नि से सुरक्षा या लचीलापन देने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। ये शरीर के ऊतकों में जमा हो सकते हैं और दीर्घकालिक स्वास्थ्य जोखिम, जिनमें कैंसर भी शामिल है, से जुड़े हैं।

3. केवल धुलाई पर्याप्त क्यों नहीं? सूक्ष्मजीवों के विपरीत, ये रसायनः

1. रेशों या कोटिंग में मजबूती से बंधे होते हैं
2. पानी में आसानी से घुलते नहीं
3. धुलाई - प्रतिरोधी बनाए जाते हैं

समय के साथ धीरे-धीरे निकल सकते हैं या सूक्ष्म कणों के रूप में झड़ सकते हैं

परिणामस्वरूपः धुलाई केवल सतही गंदगी या अवशेष हटाती है, लेकिन उन औद्योगिक रसायनों को नहीं जो स्थायी रूप से जुड़े होते हैं।

* कुछ रसायन धुलाई के दौरान अपशिष्ट जल में मिलकर पर्यावरण प्रदूषण भी बढ़ा सकते हैं।

4. नवीन वैज्ञानिक और नियामक विकास

१. बढ़ती जागरूकता और अनुसंधान शोधकर्ता यह अध्ययन कर रहे हैं कि वस्त्रों में मौजूद रसायन कैसे व्यवहार करते हैं।

* अध्ययन दर्शाते हैं कि पसीने और रगड़ के साथ रंग एवं फिनिशिंग रसायन त्वचा में प्रविष्ट हो सकते हैं।
* नैनो - कणों (Nanoparticles) पर भी शोध जारी है, जो विशेष वस्त्रों में उपयोग होते हैं और त्वचा में प्रवेश या धुलाई के दौरान मुक्त हो सकते हैं।

२. नियामक कदम दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में नियंत्रण कड़े किए जा रहे हैंः

* यूरोपीय संघ का REACH ढाँचा कई कैंसरकारी रसायनों को प्रतिबंधित या नियंत्रित करता है।
* अमेरिका के कैलिफ़ोर्निया राज्य का Proposition 65 कानून कुछ निर्धारित सीमा से अधिक कैंसरकारी पदार्थ होने पर चेतावनी अनिवार्य करता है।

३. सुरक्षित विकल्पों की ओर उद्योग का झुकाव अब PFAS - मुक्त जल - रोधी फिनिश और पर्यावरण - अनुकूल वस्त्र उपचार विकसित किए जा रहे हैं।

* जैव - आधारित रेशे और इको - फ्रेंडली रंगों पर भी शोध जारी है।

हालाँकि, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में इन सुरक्षित विकल्पों को व्यापक रूप से अपनाना अभी भी चुनौतीपूर्ण है।

5. व्यावहारिक निष्कर्ष

१. कपड़े धोने से कीटाणु हटते हैं, लेकिन गहरे समाए औद्योगिक रसायन नहीं।

२. नए कपड़े पहनने से पहले अवश्य धोएँ — कुछ निर्माण अवशेष त्वचा को उत्तेजित कर सकते हैं।

जहाँ संभव हो, प्रमाणित ऑर्गेनिक या इको - टेक्सटाइल चुनें, विशेष रूप से बच्चों और संवेदनशील त्वचा वाले लोगों के लिए सुरक्षित विकल्पों की जानकारी रखें।

बायो एंजाइम बेजान मिट्टी के लिए "संजीवनी"

पिंकी कुंडू

बायो एंजाइम बेजान मिट्टी के लिए किसी ₹संजीवनी₹ से कम नहीं है। अगर आपके गमले की मिट्टी सख्त हो गई है और पौधे की ग्रोथ रुक गई है, तो बायो एंजाइम उसे फिर से जीवित करने में बहुत प्रभावी साबित हो सकता है।

कैसे काम करता हैः

1. मिट्टी की संरचना में सुधार समय के साथ गमले की मिट्टी के सूक्ष्म पोषक तत्व खत्म हो जाते हैं और वह पत्थर जैसी सख्त हो जाती है। बायो एंजाइम मिट्टी के कणों को ढीला करता है, जिससेः

* वातन : जड़ों तक ऑक्सीजन बेहतर तरीके से पहुँचती है।
* जल धारण क्षमताः मिट्टी नमी को बेहतर तरीके से सोख पाती है।

2. सूक्ष्मजीवों की सक्रियता मिट्टी का ₹जीवित₹ होना उसमें मौजूद अच्छे बैक्टीरिया पर निर्भर करता है। बायो एंजाइम एक कैटेलिस्ट की तरह काम करता है जो मिट्टी में मौजूद सुप्त सूक्ष्मजीवों को सक्रिय कर देता है। ये सूक्ष्मजीव खाद को तोड़कर पौधों के लिए सुपाच्य बनाते हैं।

3. पीएच लेवल का संतुलन अक्सर रासायनिक उर्वरकों या खारे पानी के इस्तेमाल से मिट्टी का पीएच बिगड़ जाता है। बायो एंजाइम मिट्टी के पीएच को संतुलित करता है, जिससे पौधा मिट्टी में दबे हुए पोषक तत्वों को वापस खींचने में सक्षम हो जाता है।

इस्तेमाल का सही तरीका

बेजान मिट्टी में हमेशा डाइल्यूट करके डालें:

* 1 लीटर पानी में 2-5 ml बायो एंजाइम मिलाए।
* मिट्टी की हल्की गुड़ाई करें और फिर यह घोल डालें।
* महीने में 2 बार (हर 15 दिन में) प्रयोग करें।

जरूरी बातः

* अगर मिट्टी पूरी तरह से पोषक तत्व खो चुकी है, तो बायो एंजाइम के साथ थोड़ी वर्मीकम्पोस्ट या गोबर की खाद मिलाना सोने पर सुहागा होगा।
* एंजाइम खाद के असर को 10 गुना बढ़ा देगा। शाम के समय या सुबह जल्दी इसका इस्तेमाल करना सबसे अच्छा रहता है, ताकि तेज धूप में सूक्ष्मजीव नष्ट न हों।

प्रकृति रूप शरीर के नौ द्वार तथा नौ चक्र

पिंकी कुंडू

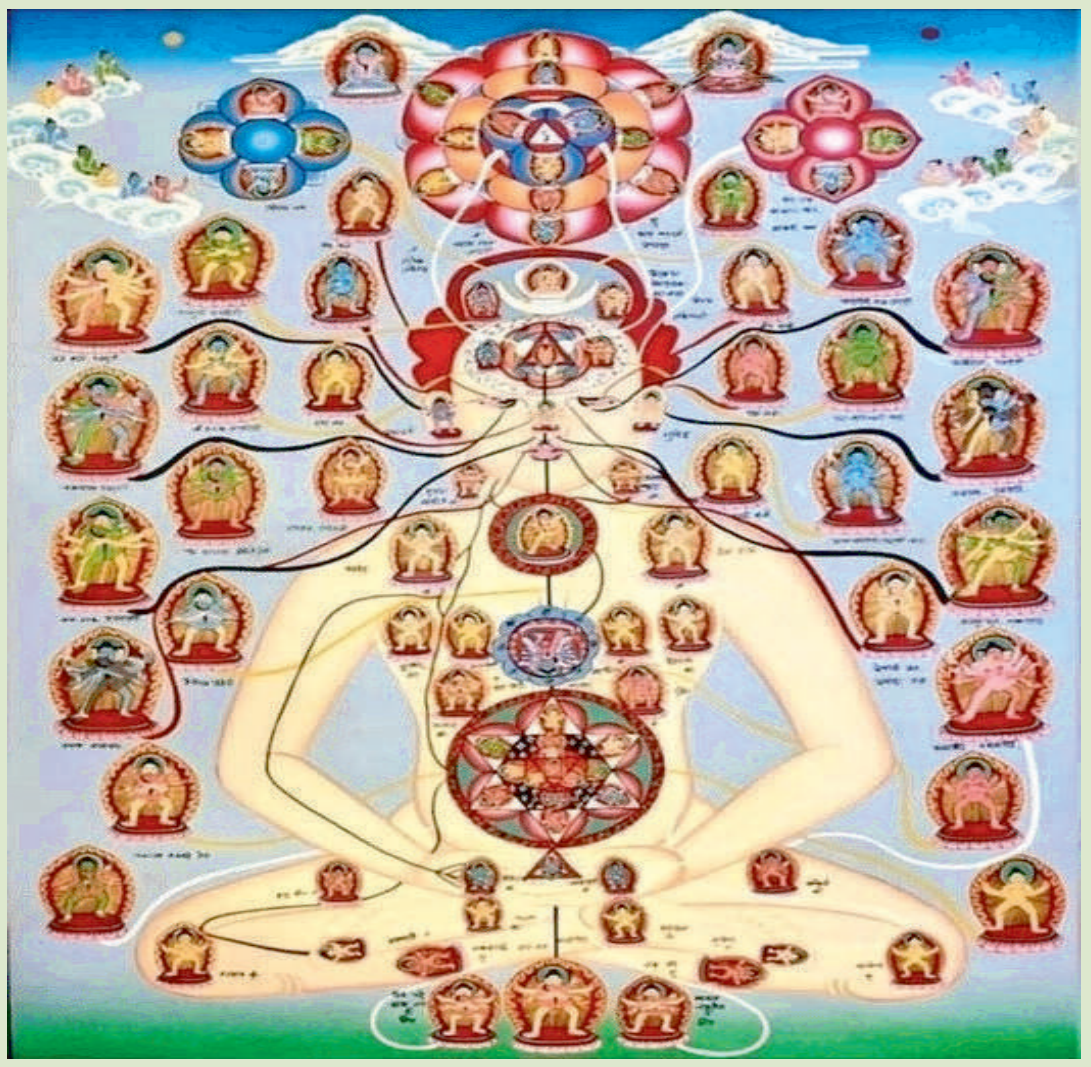

1. अस्तित्व में सभी कुछ जोड़ों में मौजूद है - स्त्री-पुरुष, दिन-रात, तर्क-भावना आदि। इस दोहरेपन को द्वैत भी कहा जाता है। हमारे अंदर इस द्वैत का अनुभव हमारी रीढ़ में बायीं और दायीं तरफ मौजूद नाड़ियों से पैदा होता है।

* त्रिदेव अर्धनारीश्वर है क्योंकि उनकी बायीं तरफ इड़ा नाड़ी तथा दायीं तरफ पिंगला नाड़ी हैं जो पुरुष और स्त्री ऊर्जा के संश्लेष्ण का प्रतिनिधित्व करता है। इड़ा और पिंगला जीवन की बुनियादी द्वैतता की प्रतीक हैं।

2. अर्धनारीश्वर शब्द का अर्थ है

* अर्ध – आधा, नारी – महिला, ईश्वर ..यानी की भगवान अपने आधे हिस्से मे स्त्री रूप मे है.

* इड़ा और पिंगला अर्थात स्त्री और पुरुष ऊर्जा का संश्लेष्ण सभी सृजन का आधार है।

* इसलिए शिव और शक्ति एक साथ मिलकर इस ब्रह्मांड का निर्माण करते हैं. अर्धनारी रूप से यह भी पता चलता है कि शक्ति का महिला सिद्धांत भगवान, शिव के पुरुष सिद्धांत से अविभाज्य है।

3. इस शरीर में नौ द्वार हैं, दो आँख, दो कान, दो नाभि का छिद्र, एक मुख इस प्रकार सिर में सात द्वार हुये (आठवाँ) गुद्दा द्वारा और नौवाँ मूत्र द्वार।

* सात द्वार देवताओं या दिव्य गुण युक्त, आत्माओं के ठहरने का स्थान है। इससे रहने वाले समस्त जड़ और चेतन देवता परस्पर एक दूसरे की भलाई के लिये अपने - अपने स्थान पर हर समय सतर्क व जागरुक हैं।

* अग्निदेव, नेत्र और जठराग्नि के रूप में;

* पवनदेव श्वाँस - प्रश्वाँस व दस प्राणों के रूप में;

* वरुण देव जिह्वा और रक्त आदि के रूप में रहते हैं।

* इसी प्रकार अन्य देव भी शरीर के भिन्न-2 स्थानों में निवास करते है।

4. चैतन्य देवों में आत्मा और परमात्मा का यही निवास स्थान है। ये समस्त देव इस शरीर में सद्भाव और सहयोग से प्रीतिपूर्वक वर्तते हैं। इनमें परस्पर प्रेम की गंगा बहती है, किसी को किसी से द्वेष नहीं, सबके काम बंटे हुये हैं। अपने - अपने कार्यों को सम्पादन करने में सभी सचेष्ट एवं दक्ष हैं।

क्या प्रकृति का अंतिम नवम द्वार (बिंदु चक्र) श्रीराधा (आत्मा का प्रतीक) हीं है?

1. नौ द्वार अर्थात नौ चक्र प्रकृति के है।तीन द्वार अधोमुखी तथा छह ऊर्ध्वमुखी हैं। मृत्यु जीवन का सबसे बड़ा सत्य हैं। मृत्यु के समय हमारे कर्मों के फल केअनुसार ,किसी एक द्वार से हमारे प्राण निकलते हैं।

2. दशम/दसवाँ द्वार जिसे शून्य चक्र भी कहते हैं; परमात्मा का स्थान, ब्रह्मरंध्र है। योगी जन इसी से होकर प्राण त्यागते हैं मरणोपरान्त कपाल क्रिया करने का उद्देश्य यही है कि प्राण का कोई अंश शेष रह गया हो तो वह उसी में होकर निकले और ऊर्ध्वगामी प्राप्त करे। योगशास्त्रों के अनुसार ब्रह्मसत्ता का मानव शरीर में प्रवेश सहस्रार स्थित इसी मार्ग से होता है।

*** क्या रहस्य है आज्ञाचक्र में ?-**

1. 114 चक्र में से 7 मुख्य चक्र, 21 माइनर चक्र और 86 सूक्ष्म चक्र है।

* 114 चक्र में से दो चक्र हमारे भौतिक शरीर से बाहर रहते हैं।

* मुख्य 7 चक्र में से एक सहस्रार चक्र भौतिक शरीर से बाहर होता हैं।

* माइनर 21 चक्र आंखें, नाक, कान, कन्धा, हाथ, घुटना, पैर आदि में होते है।

2. सभी चक्र हर समय कार्यशील नहीं रहते हैं ; कुछ निष्क्रिय भी रहते है अर्थात उन चार चक्रो की गुप्त शक्तियाँ प्रकट नहीं होती हैं।

* छठवा आज्ञाचक्र को, युक्त त्रिवेणी कहते हैं।

* 108 कार्यशील रहते हैं बाकी चार इनके सक्रिय होने पर फलीभूत होने लगते हैं।

* कुंडलिनी जब चक्रों का भेदन करती है तो बाकी चार में शक्ति का संचार हो उठता है।

3. अष्ट प्रकृति अर्थात आठ चक्र ;जो पांच तत्वों 1. पृथ्वी, 2.जल , आप, 3. अग्नि, 4 वायु 5. आकाश तथा 6. मन, 7. बुद्धि, 8. अहंकार का प्रतीक है।

* आज्ञाचक्र में ऊर्जा के तीन स्तर है, ईड़ा, पिंगला और सुषुम्ना या त्रिमूर्ति ब्रह्मा विष्णु और महेश की ऊर्जा।

* पहला तीन गुणों का प्रतीक है ,

* दूसरा उच्चतर शक्ति का प्रतीक है और

* तीसरी जो तीनो गुणों से परे जाती है।उन्हें विभिन्न नाम से जाना जाता है।जैसे

3.1- आज्ञा चक्र/भृकुटि चक्र(मन का प्रतीक);- मेरुदण्ड (SPINAL CORD) पोला है । उससे अस्थि खण्डों के बीच में होता हुआ यह छिद्र नीचे से ऊपर तक चला गया है । इसी के भीतर सुषुम्ना नाड़ी विद्यमान है। मेरुदण्ड के उर्पयुक्त पाँच प्रदेश सुषुम्ना में अवस्थित पाँच चक्रों से सम्बन्धित हैं परन्तु छठे आज्ञा चक्र का स्थान मेरुदण्ड में नहीं आता । यह दोनों भवों के बीच होता है।

3. 2- ललाट चक्र/कैलाश चक्र (बुद्धि का प्रतीक);- यह चक्र ललाट यानि माथे के बीच स्थित होता है।ललाट अथवा 'मस्तक' मानव शरीर में भौंहों के स्थान से लेकर सिर के केश तक तथा दाएँ कनपटी से लेकर बाएँ कनपटी तक के स्थान को कहा जाता है। यह पीनियल ग्रन्थि और तन्त्रिका तन्त्र को नियन्त्रित करता है।

3. 3- रोहिणी चक्र(अहंकार का प्रतीक);- रोहिणी चक्र के अंदर छिपा होता है नवम द्वार जहाँ पर शून्य चक्र तक पहुंचने का सरलतम मार्ग हैं। जिसका नाम है बिन्दु चक्र । बिंदु विसर्ग को संक्षेप में 'बिंदु' कहा जाता है।

* बिन्दु का अर्थ 'बूँद' है। विर्ग माने 'गिरना'। इस प्रकार बिंदु विसर्ग का तात्पर्य 'बूँद का गिरना' हुआ। यहाँ बिंदु का मतलब अमृत है। उच्चस्तरीय साधनाओं के दौरान जब मस्तिष्क से यह झरता है, तो ऐसी दिव्य मादकता का आभास होता है, जिसे साधारण नहीं, असाधारण कहना चाहिए।

* संपूर्ण मानव प्रगति काल के इतिहास में बिंदु की शक्ति अभी तक रहस्यात्मक ही बनी हुई है। इसे सृष्टि का मूल माना गया है।

* तंत्र में प्रत्येक बिन्दु शक्ति का केन्द्र है। यह शक्ति स्थायी चेतना के आधार की अभिव्यक्ति है।

* शास्त्रों में बिन्दु को वह आदिस्रोत माना गया है, जहाँ से सभी पदार्थों का प्रकटीकरण और अंततः जिसमें अभी का लय हो जाता है।

* आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी आदि सभी उसी की निष्पत्तियाँ हैं।

1. ललाट चक्र और रोहिणी चक्र(बिन्दु चक्र) की गुप्त शक्तियाँ प्रकट नहीं होती है बल्कि आज्ञा चक्र में ही छिपी रहती है ; इसीलिए आज्ञाचक्र को युक्त त्रिवेणी कहते हैं।

* आठवा रोहिणी चक्र तक प्रकृतिलय ही हैं।

* नवम द्वार बिन्दु चक्र आत्मा का का स्थान हैं, इस द्वैत को हम परंपरागत रूप से शिव और शक्ति या श्रीकृष्ण एवं राधा का नाम देते हैं।

* यह सृजन से पहले की अवस्था है,अर्थात ब्रह्मा की ऊर्जा।

* श्रीराधा से मिलकर श्रीकृष्ण आत्माराम हो जाते हैं अर्थात इड़ा और पिंगला का मिलन और सुषुम्ना में ऊर्जा का प्रवेश।

2. दो चक्र हमारे भौतिक शरीर से बाहर रहते हैं। इसके अलावा सहस्रार चक्र हैं जिसे ब्रह्मरंध्र भी कहते हैं, तथा दूसरा हैं निर्वाण चक्र।

*** क्या हैं सहस्रार चक्र ?-**

1. सहस्रार चक्र (आत्मा का प्रतीक) भौतिक शरीर से साढे 3 इंच ऊपर 1 हजार पंखुड़ियों का कमल है और अद्वैत, निर्गुण, निराकार ब्रह्मः का आसन हैं। यह वास्तव में चक्र नहीं है बल्कि साक्षात तथा सम्पूर्ण परमात्मा और आत्मा है।

2. सहस्रार चक्र मस्तिष्क के ऊपर ब्रह्मरंध में अपस्थित 6 सेंटीमीटर व्यास के एक अध खुले हुए कमल के फूल के समान होता है। ऊपर से देखने पर इसमें कुल 972 पंखुड़ियां दिखाई देता है। इसमें नीचे 960 छोटी - छोटी पंखुड़ियां और उनके ऊपर मध्य में 12 सुनहरी पंखुड़ियां सुशोभित रहती हैं।

3. इसे हजार पंखुड़ियों वाला कमल कहते हैं। इसका चिन्ह खुला हुआ कमल का फूल है जो असीम आनन्द के केन्द्र होता है। इसमें इंद्रधनुष के सारे रंग दिखाई देते हैं लेकिन प्रमुख रंग बैंगनी होता है। इस चक्र में अ से क्ष तक की सभी स्वर और वर्ण ध्वनि उत्पन्न होती है।

4. पिट्यूट्री और पिनियल ग्रंथि का आंशिक भाग इससे सम्बंधित है। यह मस्तिष्क का ऊपरी हिस्सा और दाई आंख को नियंत्रित करता है।यह आत्मज्ञान, आत्मदर्शन, एकीकरण,स्वर्गीय अनुभूति के विकास का मनोवैज्ञानिक केन्द्र है।यह आत्मा का उच्चतम स्थान है।

5. सहस्रार का सम्बन्ध भी रीढ़ की हड्डी से सीधा नहीं है। इतने पर भी सूक्ष्म शरीर का सुषुम्ना मेरुदण्ड पाँच रीढ़ वाले और दो बिना रीढ़ वाले सभी सातों चक्रों को श्रृंखला में बाँधे हुए है। सूक्ष्म शरीर की सुषुम्ना में यह सातों चक्र जंजीर की कड़ियों की तरह परस्पर पूरी तरह सम्बन्ध हैं । सहस्रार चक्र मस्तिष्क के मध्य भाग में है।

6. शरीर संरचना में इस स्थान पर अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथियों से सम्बन्ध रैटिकुलर एक्टिवेटिंग सिस्टम का अस्तित्व है। वहाँ से जैवीय विद्युत का स्वयंभू प्रवाह उभरता है। वे धाराएँ मस्तिष्क के अगणित केन्द्रों की ओर दौड़ती हैं। इसमें से छोटी - छोटी चिनगारियाँ तरंगों के रूप में उड़ती रहती हैं। उनकी संख्या की सही गणना तो नहीं हो सकती, पर वे हैं हजारों।

7. इसलिए हजार या हजारों का उद्बोधक 'सहस्रार' शब्द प्रयोग में लाया जाता है। सहस्रार चक्र का नामकरण इसी आधार पर हुआ है सहस्र फन वाले शेषनाग की परिकल्पना का यही आधार है। यह संस्थान ब्रह्माण्डीय चेतना के साथ सम्पर्क साधने में अग्रणी है इसलिए उसे ब्रह्मरन्ध्र या ब्रह्मलोक भी कहते हैं। आज्ञाचक्र को सहस्रार का उत्पादन केन्द्र कह सकते हैं ।

*** क्या हैं निर्वाण चक्र ?-**

1. सहस्रार चक्र के भीतर विद्यमान है निर्वाण चक्र जिसके भीतर निर्गुण, निराकार ब्रह्मः विराजमान है ।निर्वाण का सटीक अर्थ है - ज्ञान की प्राप्ति - जो मन (चित्त) की पहचान को खत्म करके मूल तथ्य से जुड़ाव पैदा करता है। सैद्धांतिक तौर पर निर्वाण एक ऐसे मन को कहा जाता है जो ₹न आ रहा है (भाव) और न जा रहा है (विभाव)₹ और उसने शाश्वतता की स्थिति को प्राप्त कर लिया है, जिससे ₹मुक्ति₹ (विमुक्ति) मिलती है।

2. निर्वाण शरीर (बाडीलेस बाडी) - सहस्रार सामान्य मृत्यु में केवल हमारा स्थूल शरीर ही नष्ट होता है।शेष छः शरीर बचे रहते हैं जिनसे जीवात्मा अपनी वासनानुसार अगला जन्म प्राप्त करती है किंतु महामृत्यु में सभी छः शरीर नष्ट हो जाते हैं फ़रि पुनरागमन संभव नहीं होता। इसे ही अलग - अलग पंथों में मोक्ष, निर्वाण, कैवल्य कहा जाता है।माना जाता है की मृत्यु के समय जिसका सहत्रार खुल गया उसकी मोक्ष हो जाती है। अंतिम क्रिया की कपाल क्रिया इसी केंद्र पर आधारित होती है।

3. स्थिरता, शीतलता और शांति भी इसके अर्थ हैं। निर्वाण की प्राप्ति की तुलना अविद्या (अज्ञानता) के अंत से की जाती है। जिससे उस मनःस्थिति की इच्छा (चेतना) जागृत होती है जो जीवन चक्र (संसार) से मुक्ति दिलाती है। एक स्तर का ज्ञान प्राप्त करने के बाद व्यक्ति निर्वाण को मानसिक चेतना की तरह अनुभव करता है।

4. संसार मूलतः तृष्णा और अज्ञानता की उपज है । व्यक्ति बिना मृत्यु के भी निर्वाण की प्राप्ति कर सकता है। जब निर्वाण प्राप्त कर चुके व्यक्ति की मृत्यु होती है, तो उस मृत्यु को मोक्ष कहते हैं, क्योंकि वह जीवन - मरण और पुनर्जन्म (संसार) के आखिरी जुड़ाव से पूर्ण रूप से छूट जाता है और उसका फिर से जन्म नहीं होता ।

5. पुराण कथा के अनुसार राजा बलि का राज्य तीनों लोकों में था। भगवान ने वामन रूप में उससे साढ़े तीन कदम भूमि की भीक्षा माँगी। बलि तैयार हो गये। तीन कदम में तीन लोक और आधे कदम में बलि का शरीर नाप कर विराट् ब्रह्म ने उस सबको अपना लिया।

6. हमारा शरीर साढ़े तीन हाथ लम्बा है ।चक्रों के जागरण में यदि उसे लघु से महान्- अण्ड से विभु कर लिया जाय तो उसकी साढ़े तीन हाथ की लम्बाई - साढ़े तीन एकड़ जमीन न रहकर लोक - लोकान्तरों तक विस्तृत हो सकती है और उस उपलब्धि की याचना करने के लिए भगवान् वामन रूप धारण करके हमारे दरवाजे पर हाथ पसारे हुए उपस्थित हो सकते हैं।

श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा के रहस्य;- प्रत्येक आत्मा श्रीकृष्ण हैं:- जेंडर को लेकर कन्फ्यूज न होना ज़रूरी है। फैक्ट्स - फॉर्मेट को आसान बनाने के लिए जेंडर रेफरेंस ज़रूरी हैं। अगर आप पुरुष हैं – तो जेंडर रेफरेंस लागू होता है; अगर आप महिला हैं – तो अपने पार्टनर का जेंडर उसी हिसाब से बदलें।

'कृष्ण' आपकी आत्मा का पुरुष वाला हिस्सा हैं; 'राधा' आपकी आत्मा का महिला वाला हिस्सा हैं। वे दोनों आपके 'अंदर' मौजूद हैं। क्योंकि ज़िंदगी के सबक कृष्ण सिखाएंगे, राधा नहीं; इसलिए सर्प जैसी एनर्जी के कृष्ण - एस्पेक्ट पर फोकस रहना ज़रूरी है।

1. भगवान विष्णु खुद को कृष्ण और राधा की पुरुष और महिला एनर्जी में, यानी सर्प (कुंडलिनी शक्ति) की दो अलग - अलग एनर्जी में बांटते हैं। इस सर्प को एक्टिवेट करने वाली एनर्जी 'प्यार' है।

2. राधा नरम, पैसिव एनर्जी का प्रतीक हैं; कृष्ण इसके उलट हैं; राधा का टॉप तक का सफ़र ज़्यादा तेज़ है; कृष्ण का सफ़र ज़्यादा मुश्किल है।

3. सर्प की एनर्जी (कुंडलिनी) के आधे हिस्से, 16'100 सेकेंडरी चैनल से गुज़रते हैं; 8 मेन चैनल; 2 प्राइमरी चैनल; फिर 1 में मिल जाते हैं।

4. 16'100 सेकेंडरी चैनल आसानी से पार किए जा सकते हैं; लेकिन 8 प्राइमरी चैनल चिपचिपे होते हैं; उनका मकसद सर्प (कुंडलिनी) को दबाए रखना/ब्लॉक करना होता है।

5. प्राइमरी 8 चैनल में से हर एक सर्प (कुंडलिनी) को अपने अंदर रखना चाहता है; ये वो जगहें हैं जहाँ कुंडलिनी "फंस जाएगी"।

6. हर 'पत्नी' एक खास लव-एनर्जी दिखाती है जिसका हम इस दुनिया में सामना कर सकते हैं; अक्सर हम 8 में से 1 से शादीशुदा/कमिटेड भी हो सकते हैं।

7. कृष्ण की 8 पत्नियों में से, 4 दूसरों की तुलना में ज़्यादा ज़रूरी हैं, क्योंकि वे ज़्यादा चिपचिपी, मुश्किल और नेविगेट करने में ज़्यादा मुश्किल हैं।

8. कृष्ण और राधा दो जुड़वां DNA जैसे चैनल के रूप में सामने आएंगे; कृष्ण के 16'100 + 8 चैनल से अपनी सफल यात्रा पूरी करने के बाद।

नाग ऊर्जा कुंडलिनी (राधा और कृष्ण) के 9 हिस्से, 16'100 सेकेंडरी और 8 प्राइमरी चैनल से यात्रा करते हैं; 2 जुड़वां डीएनए जैसे चैनल; फिर एक में मिल जाते हैं

श्री कृष्ण रासलीला काअर्थ;-

1. गुजरात राज्य का एक लोकप्रिय लोक नृत्य है डांडिया रास। इसकी शुरुआत श्रीकृष्ण की लीला और श्रीराधा तथा गोपियों के साथ उनके रास से मानी जाती है। 'रस शब्द से मतलब जूस या अर्क है, लेकिन वह जुनून को भी दर्शाता है।

2. गुजरात की अधिकांश लोक संस्कृति और लोकगीत हिन्दू धार्मिक साहित्य पुराण में वर्णित भगवान श्रीकृष्ण से जुड़ी किंवदंतियों की पुष्टि करती है।श्रीकृष्ण के सम्मान में किया जाने वाला रास नृत्य और रासलीला प्रसिद्ध लोकनृत्य गरबा के रूप में अब भी प्रचलित है।

* गरबी और गरबा;-

3. गरबा लोकनृत्य गरबी व गरबा इन दो प्रकार का है। जब पुरुष गोला बनाकर तथा खड़े होकर सामूहिक रूप से तालियां बजाकर गाते हुए नृत्य करते हैं तो उस नृत्य को गरबी कहा जाता है और जब स्त्रियां परंपरागत परिधान तथा आभूषण पहनकर नृत्य करती हैं, तो उसे गरबा कहा जाता है। कहा जाता है कि बाणासुर की पुत्री उषा ने माता पार्वती से सीखा हुआ लास्य नृत्य गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र की गोपियों को सिखाया था।

4. रासलीला के पात्रों में राधा - कृष्ण तथा गोपिकाएँ रहती है। बीच - बीच में हास्य का प्रसंग भी रहता है। विदूषक के रूप में 'मनसुखा' रहता है, जो विभिन्न गोपिकाओं के साथ प्रेम एंव हँसी की बातें करके श्रीकृष्ण के प्रति उनके अनुराग को व्यंजित करता है;

5. रासलीला में श्रीकृष्ण का गोपियों, सखियों के साथ अनुरागपूर्ण वृताकार नृत्य होता है। कभी श्रीकृष्ण गोपियों के कार्यों एवं चेष्टाओं का अनुकरण करते है और कभी गोपियाँ श्रीकृष्ण की रूप चेष्टादि का अनुकरण करती है और कभी श्रीराधा सखियों के, श्रीकृष्ण की रूपचेष्टाओं का अनुकरण करती है। यही लीला है। कभी श्रीकृष्ण गोपियों के हाथ में हाथ बाँधकर नाचते है इन लीलाओं की कथावस्तु प्रायः श्रीराधा - कृष्ण की प्रेम क्रीड़ाएँ होती है, जिनमें सूरदास आदि श्रीकृष्ण भक्त कवियों के भजन गाये जाते हैं।

*** रासलीला का तात्विक अर्थ;-**

1. रासलीला में गोपियों, के साथ वृताकार नृत्य में श्रीकृष्ण मुख्य रूप से बीच की, भीतरी परत में स्थिति वृत की ओर बढ़ते जाते हैं। 16,100 गोपियों प्रतीकात्मक शक्ति वाहिनी नारिया (नाडिया/नसे)है जो श्रीकृष्ण को सहयोग करती हैं। 8 नाडिया अष्ट प्रकृति का प्रतीक है जो श्रीकृष्ण को फँसाने का प्रयत्न करती हैं। श्री कृष्ण उनको सहयोग करते हुए आगे बढ़ते जाते हैं ।

2. श्रीराधा जो श्रीकृष्ण की आत्मा हैं, वृत के केंद्र में विराजमान रहती हैं तथा अपनी आत्मा में रमण करने के कारण ही श्रीकृष्ण आत्माराम हैं। जैसे ही श्री कृष्ण आगे बढ़ते हुए श्रीराधा के पास पहुंचते हैं तो यह ईड़ा और पिंगला का मिलन है सुष्म्ना की अवस्था है। श्रीराधा कृष्ण का नित्य मिलन ही श्री राधा का रहस्य है। यही बिन्दु चक्र है जहां दोनों अदृश्य हो जाते हैं, अद्वैत, निर्गुण, निराकार ब्रह्मः के रूप में प्रवेश कर जाते हैं।

3. हमारे शरीर के मेरुदंड पर 16,108 नाड़ी हैं जिसमे सात चक्र अवस्थित हैं। इन सात उर्पयुक्त शक्तियों का उल्लेख साधना ग्रंथों में अलंकारिक रूप में हुआ है। उन्हें सात लोक, सात समुद्र, सात द्वीप, सात पर्वत, सात ऋषि आदि नामों से चित्रित किया गया है। सामान्य शक्ति धाराओं में प्रधान गिनी जाने वाली (१) गति (२) शब्द (*) ऊष्मा (४) प्रकाश (५) (Electric Fluid) संयोग (६) विद्युत (७) चुम्बक यह सात हैं। इन्हें सात चक्रों का प्रतीक ही मानना चाहिए।

4. चक्र' शक्ति संचरण के एक व्यवस्थित, सुनिश्चित क्रम को कहते हैं। वैज्ञानिक क्षेत्र में विद्युत, ध्वनि, प्रकाश सभी रूपों में शक्ति के संचार क्रम की व्याख्या चक्रों (साइकिल्स) के माध्यम से ही की जाती है। इन सभी रूपों में शक्ति का संचार, तरंगों के माध्यम से होता है। एक पूरी तरंग बनने के क्रम को एक चक्र (साइकिल) कहते हैं। एक के बाद एक तरंग, एक के बाद एक चक्र (साइकिल) बनने का क्रम चलता रहता है और शक्ति का संचरण होता रहता है।

5. शक्ति की प्रकृति (नेचर) का निर्धारण इन्हीं चक्रों के क्रम के आधार पर किया जाता है। औद्यौगिक क्षेत्र में प्रयुक्त विद्युत के लिए अंतराष्ट्रीय नियम है कि वह 50 साइकिल्स प्रति सेकेन्ड के चक्र क्रम की होनी चाहिए। विद्युत की मोटरों एवं अन्य यंत्रों को उसी प्रकृति की बिजली के अनुरूप बनाया जाता है। इसीलिए उन पर हार्सपावर, वोल्टेज आदि के साथ 50 साइकिल्स भी लिखा रहता है। शक्ति संचरण के साथ 'चक्र' प्रक्रिया जुड़ी ही रहती है। वह चाहे स्थूल विद्युत शक्ति हो अथवा सूक्ष्म जैवीय विद्युत शक्ति।

6. नदी प्रवाह में कभी - कभी कहीं भँवर पड़ जाते हैं। उनकी शक्ति अद्भूत खो बैठती है। उनमें फँसकर नौकाएँ अपना संतुलन खो बैठती हैं और एक ही झटके में उल्टी डूबती दृष्टिगोचर होती हैं। सामान्य नदी प्रवाह की तुलना में इन भँवरों की प्रचण्डता सैकड़ों गुनी अधिक होती है। शरीरगत विद्युत प्रवाह को एक बहती हुई नदी के सदृश माना जा सकता है और उसमें जहाँ - तहाँ पाये जाने वाले चक्रों की 'भँवरों' से तुलना की जा सकती है।

7. सात चक्र, सात भँवर के सदृश माना जा सकता है जो भगवान कृष्ण की सात अष्ट (देह) प्रकृति रूप सात पटरानियां है। उनकी शक्ति अद्भूत है परंतु श्री कृष्ण उनसे उलझते नहीं बल्कि उनको सहयोग करते हुए, आगे बढ़ते जाते हैं ।

8. प्रमुख पटरानी रुक्मिनणी अष्ट (देह) प्रकृति रूप अंतिम भँवर हैं, ललाट चक्र हैं; जो श्रीराधा रूप आत्मा अर्थात बिन्दु चक्र तक पहुंचने में सहयोग करती है

*** रासलीला विधि;-**

1. रास लीला' में संकेंद्रित वृत्तों का निर्माण होता है, जिसमें आंतरिक वृत्त में महिलाएं और बाहरी वृत्त में पुरुष एक - दूसरे के आमने - सामने होते हैं। वृत्तीय छल्लों की संख्या नृत्य में भाग लेने वाले लोगों की संख्या पर निर्भर करेगी; पुरुष और महिलाएं विपरीत दिशाओं में चलते हैं। प्रत्येक निर्णायक नृत्य ताल के साथ, आप साथी बदलते हैं; इस प्रकार, प्रत्येक पुरुष प्रत्येक महिला के साथ नृत्य करता है और इसके विपरीत।

2. कृष्ण वृत्तों के घेरे की परिधि से अपना नृत्य (रास लीला) शुरू करते हैं; कुशलता से नृत्य करते हुए, वह 16'100 गोपियों (लड़कियों) के बीच से होते हुए 8 के सबसे आंतरिक घेरे तक पहुँचते हैं; यहाँ यह मुश्किल और लंबित स्थिति में होना हो जाता है; (मुश्किल एवं लंबित स्थिति में होना)

3. लड़कियां बहुत चौकस हैं और उन्हें नज़रों से ओझल नहीं होने देतीं। कृष्ण किसी को नाराज नहीं कर सकते; सबक कृष्ण की चतुराई में निहित है; उन्हें अपने आंतरिक-8 को प्रसन्न करना है, फिर भी बच निकलने के लिए पर्याप्त सतर्क रहना है। यहाँ वे (राधा और कृष्ण) सुबह तक सब कुछ भूलकर नाचते हैं; फिर अचानक वे गायब हो जाते हैं। राधा और कृष्ण का सर्कल के सेंटर से अचानक गायब होना उनका एक में 'मिलन/मर्जर' है।

श्री कृष्ण और कुण्डलिनी का रहस्य, दुनिया की भाषा में (दुनिया की भाषा में):- 22 तथ्य;-

1. कुंडलिनी शक्ति (सोल एनर्जी) आप खुद हैं।

2. आपको (कुंडलिनी शक्ति/सोल एनर्जी) अपने जुड़वां आधे हिस्से तक पहुँचने से पहले 16'100 सेकेंडरी और 8 प्राइमरी चैनल को सफलतापूर्वक नेविगेट करना होगा।

3. यहाँ, 16'100 सेकेंडरी चैनल = 16'100 लोग जो कई जन्मों तक आपकी ज़िंदगी में बड़ा बदलाव लाएँगे।

4. यहाँ, 8 प्राइमरी चैनल = 8 बहुत मज़बूत लव-एनर्जी जिन्हें आपको जन्मों तक सफलतापूर्वक नेविगेट करना होगा।

5. आपको (कुंडलिनी शक्ति/सोल एनर्जी) हर चैनल को `खुश और संतुष्ट' छोड़ना होगा, तभी आप उस चैनल (लव-एनर्जी) से बाहर निकल सकते हैं।

6. अपने 8 प्राइमरी (जिन्हें स्टिकी और ट्रिकी के तौर पर दिखाया गया है) चैनलों को नेविगेट करने में आपको कितने जन्म लगेंगे, यह आपकी `अवेयरनेस' पर निर्भर करता है।

7. सिर्फ़ `अवेयर होना' और इन 8 (खासकर 4/8) को `पहचान पाना' का मतलब है कि आपने ज्ञान की एक बड़ी रुकावट को तोड़ दिया है।

8. असली सफ़र तब शुरू होता है जब आप अपने ट्विन से मिलते हैं; आपको अपने ट्विन के साथ कई जन्म धरती के कामों के लिए देने होंगे।

9. एक बार जब आप अपनी ट्विन-सोल के साथ धरती माँ में बड़ा बदलाव ला देते हैं, तो आप विलय का ऑप्शन चुन सकते हैं।

10. अपने 8 प्राइमरी चैनलों को पहचानने और समझने का जवाब – भगवान कृष्ण की 8 पत्नियों को समझने में है। दुनिया की भाषा में:-

11. कृष्ण की "अष्ट-भार्याओं", यानी 8 पत्नियों को इंडियन क्लासिकल डांस में कई बार "अष्ट-नायिकाओं" – यानी प्यार के 8 रूपों के तौर पर दिखाया गया है।

12. इन मुख्य 8 पत्नियों में से, 4 की एनर्जी चिपचिपी और नुकसान पहुंचाने वाली/हानिकारक होती हैं; 4 की एनर्जी चिपचिपी होती हैं लेकिन नुकसान नहीं पहुंचातीं।

13. ज्योतिषी नुकसान पहुंचाने वाली एनर्जी के खिलाफ सलाह देते हैं, क्योंकि वे आम भारतीय बड़े परिवार के सेट-अप के लिए सही नहीं होतीं।

14. नुकसान पहुंचाने वाली एनर्जी ज़्यादा शेयरिंग नहीं होतीं; वे अपने कृष्ण को सिर्फ़ अपने लिए चाहती हैं; नुकसान न पहुंचाने वाली एनर्जी को नेविगेट करना (काबू पाना) आसान होता है।

15. आत्मा के विकास के ऊंचे स्टेज में, पक्का, लगभग सभी 8 एनर्जी आपके रास्ते में आई होंगी, और आपने एक को चुना होगा।

16. यहां, 'सही चॉइस' या 'गलत चॉइस' जैसा कुछ नहीं है। हर चुनाव अपनी चुनौतियाँ पेश करता है और आपको विकास में और आगे ले जाता है।

17. हर उस `एनर्जी' से जुड़े रहना ज़रूरी है जिसे आप पहचानते हैं; अगर पार्टनर के तौर पर नहीं, तो दोस्त, मेंटर, गाइड के तौर पर।

* कभी-कभी, विकास के ऊँचे स्टेज में आत्माएँ जान-बूझकर बच सकती हैं, अगर उन्हें लगता है कि वे ठीक से रास्ता नहीं बना पा रही हैं। कोई भी इंसान चाहे कोई भी चुनाव करे, अगर वे किसी एनर्जी का `एसेस' जान लेते हैं, तो वे बिना अटके सफलतापूर्वक रास्ता बना सकते हैं।

18. कृष्ण की जुड़वां आत्मा राधा, कृष्ण की सभी 8 पत्नियों के गुणों का मिश्रण हैं – लेकिन यहाँ सुझाव, समझ और जागरूकता है। राधा को 8 पत्नियों के गुणों से नहीं बताया गया है; वह बस उन्हें रास-लीला (कृष्ण के साथ उनका डांस) में हमारे जैसे नश्वर आत्माओं के लिए एक हल्की याद दिलाने के तौर पर दिखाती हैं। और (कृष्ण के रूप में) आप इसे बिना मारे कैसे संभालते हैं। कृष्ण की 8 पत्नियों में।

रात्रि ठहराव एक परिवर्तनकारी प्रयास, प्रभावी शासन को आमजन के करीब लाना ही मुख्य उद्देश्य : एडीसी

एडीसी जगनिवास ने कहा, नागरिकों की समस्याओं का निदान हमारी प्राथमिकता, सरकार की योजनाओं का लाभ उठाएं ग्रामीण, गांव रायपुर में रात्रि ठहराव कार्यक्रम आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 21 फरवरी। अंत्योदय उत्थान लक्ष्य के साथ हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ तय समय में मिलें व उनकी शिकायतों का प्राथमिकता के साथ निवारण किया जा सके, इन्हीं उद्देश्य के साथ झज्जर जिला के गांव रायपुर में जिला प्रशासन द्वारा रात्रि ठहराव कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस दौरान एडीसी जगनिवास ने विभिन्न विभागीय स्टॉल का निरीक्षण करने उपरान्त ग्रामीणों की दो दर्जन से ज्यादा शिकायतों की सुनवाई करते हुए उनके निवारण की दिशा में संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए।

रात्रि ठहराव कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए एडीसी जगनिवास ने विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ ग्रामीणों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं सुन मौके पर समाधान किया। इससे पहले गांव रायपुर पहुंचने पर एडीसी जगनिवास, डीसीपी लोगेश कुमार पी,एसडीएम अंकित कुमार चौकसे सहित अन्य अधिकारियों का ग्रामीणों ने पगड़ी व फूलमालाओं के साथ भव्य स्वागत किया। एसडीएम अंकित कुमार चौकसे ने उपमंडल प्रशासन की तरफ से सभी अधिकारियों का स्वागत किया।

प्रभावी शासन को आमजन के करीब लाना ही कार्यक्रम का उद्देश्य : एडीसी

एडीसी जगनिवास ने ग्रामीणों से रूबरू होते हुए कहा कि हरियाणा सरकार के सुशासन के उद्धेश्य में रात्रि ठहराव कार्यक्रम महत्वपूर्ण कड़ी है। उन्होंने कहा कि अंत्योदय उत्थान के ध्येय में यह एक परिवर्तनकारी प्रयास है जिसका उद्देश्य प्रभावी शासन को ग्रामीण लोगों के करीब लाना है। यही लोकतंत्र की सही परिभाषा है जहां जनता और शासन एक दूसरे के समानांतर दिखाई दे। जनसेवा को समर्पित समाधान शिविर के साथ ही लोगों के घर द्वार उनकी जन सुनवाई करने के उद्देश्य से रात्रि ठहराव कार्यक्रम के तहत प्रशासन गांव में पहुंच रहा है।

रात्रि ठहराव कार्यक्रम के जरिए हो रहा आमजन की समस्याओं त्वरित समाधान

रात्रि ठहराव कार्यक्रम में ग्रामीणों से संवाद करते हुए एडीसी जगनिवास ने कहा कि रात्रि ठहराव कार्यक्रम सरकार का फ्लैगशिप प्रोग्राम है। मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के कुशल नेतृत्व में सरकार द्वारा रात्रि ठहराव कार्यक्रम के माध्यम से आमजन की समस्याओं के समाधान के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी की सोच है कि जिला प्रशासन के अधिकारी गांव में ठहरें और जनसमस्या सुनते हुए मौके पर ही उनका समाधान करें। उन्होंने कहा कि जनप्रतिनिधियों का सम्मान करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। रात्रि ठहराव कार्यक्रम में गांव रायपुर,गिजड़ौद, सहित आसपास के ग्रामीणों ने सडक़, जल निकासी, बीमा, आंगनवाड़ी भवन, पशु बिजली और शिक्षा से जुड़ी समस्याएं खुलकर रखीं।

एडीसी ने मौके पर संबंधित अधिकारियों को निर्देश देकर अधिकांश शिकायतों का समाधान कराया।

इस बीच पुलिस उपनिरीक्षक अनिल कुमार ने ग्रामीणों को यातायात नियमों के पालन, साइबर फ्रॉड से बचाव तथा नशामुक्त जीवन की आवश्यकता पर संबोधित किया। उन्होंने कहा कि अपराधों से बचाव के लिए समाज को सजग रहना जरूरी है और किसी भी फ्रॉड की स्थिति में तुरंत 1930 नंबर पर शिकायत करें। इसके अलावा 112 की जानकारी दी।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों व स्टॉलों से योजनाओं के प्रति जागरूकता का प्रसार

कार्यक्रम में सूचना, जनसंपर्क एवं भाषा विभाग की कलाकार मंडली ने हरियाणवी लोकगीतों और नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से स्वच्छता पखवाड़ा, नशा मुक्ति और सरकारी योजनाओं की जानकारी देकर ग्रामीणों को जागरूक किया।

स्वास्थ्य विभाग की टीम ने निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर लगाकर 4 दर्जन ग्रामीणों की शुगर, बीपी और सामान्य जांच की तथा आवश्यक दवाइयां उपलब्ध कराईं।

इन विभागों के अधिकारी रहे उपस्थित

इस अवसर पर एसीपी सुरेंद्र कुमार, डीडीपीओ निशा तंवर, एलडीएम विजय सिंह, एक्सईएन जन स्वास्थ्य अश्विनी सांगवान, डीएफओ प्रवीण यादव, डीईओ रतिंद्र सिंह, डीडीए डॉ जितेंद्र अहलावत, बीडीपीओ माछरौली धर्मपाल, एएफएसओ अमरजीत सिंह, सरपंच मोनिका रानी, समाजसेवी रामेश्वर सहित संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

खेल नर्सरी आवंटन के लिए आवेदन की अंतिम तिथि आज

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 21 फरवरी। जिला खेल अधिकारी झज्जर सत्येन्द्र कुमार ने बताया कि खेल विभाग, हरियाणा द्वारा सत्र 2026-27 में खेल नर्सरी आवंटन के लिए सरकारी स्कूलों, ग्राम पंचायतों एवं निजी शिक्षण संस्थानों से ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं, जिसके लिए आवेदन की अंतिम तिथि 22 फरवरी है। इच्छुक संस्थान विभाग की वेबसाइट http://www.haryanasports.gov.in पर निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

जिला खेल अधिकारी ने बताया कि खेल नर्सरियां केवल ओलंपिक, एशियन तथा कॉमनवेल्थ खेलों में शामिल खेल विधाओं के लिए ही खोली जाएंगी। उन्होंने संबंधित संस्थानों से अपील की कि वे निर्धारित समय में आवेदन प्रक्रिया पूर्ण करना सुनिश्चित करें, ताकि अधिक से अधिक प्रतिभाओं को खेल के क्षेत्र में आगे बढने का अवसर मिल सके।

कुरुक्षेत्र में 23 से 27 फरवरी तक होगा 'सांग महोत्सव' का आयोजन : एडीसी

श्री धनपत सिंह सांगी स्मृति पुरस्कार' के उपलक्ष्य में आयोजित किया जाएगा महोत्सव

झज्जर, 21 फरवरी।

एडीसी जगनिवास ने बताया कि धर्मनगरी कुरुक्षेत्र में 23 से 27 फरवरी तक पांच दिवसीय सांग महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें प्रदेशभर के कलाकार सांगों की प्रस्तुति देंगे।

उन्होंने बताया कि सूचना, लोक संपर्क एवं भाषा विभाग हरियाणा द्वारा 'श्री धनपत सिंह सांग स्मृति पुरस्कार' के उपलक्ष्य में 23 से 27 फरवरी 2026 तक भव्य 'सांग महोत्सव' का आयोजन किया जाएगा। यह कार्यक्रम प्रतिदिन प्रातः 11 बजे से कलाकृति भवन, हरियाणा कला परिषद नजदीक ब्रह्मसरोवर, कुरुक्षेत्र में आयोजित किया जाएगा। 'सांग महोत्सव' में हरियाणा की समृद्ध लोकनाट्य परंपरा 'सांग' की प्रस्तुतियां प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए कलाकारों द्वारा दी जाएंगी। पांच दिवसीय इस सांस्कृतिक आयोजन में कुल 24 सांग प्रस्तुत किए जाएंगे, जिनमें ऐतिहासिक, पौराणिक एवं लोककथाओं पर आधारित कथानक शामिल हैं।

डीआईपीआरओ सतीश कुमार ने विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि कलाकृति भवन, हरियाणा कला परिषद नजदीक ब्रह्मसरोवर, कुरुक्षेत्र में आयोजित होने वाले सांग महोत्सव के अंतर्गत 23 फरवरी को 'वीर विक्रमजीत', 'हीर-रांझा', 'राजा नल दमयंती' और 'पिंगला भरथरी' जैसे सांग मंचित होंगे। 24 फरवरी को 'हीरामल जमाल', 'जानी चोर', 'बणबेटी', 'गोपी चंद' और 'चंद्रमा मदनपाल' की प्रस्तुतियां होंगी। 25 फरवरी को 'लीलो चमन', 'बणबेटी', 'पिंगला भरथरी', 'शाही लकड़हारा' और 'दुःखभंजन' जैसे सांग दर्शकों को आकर्षित करेंगे। 26 फरवरी को 'बणबेटी', 'राजा नल दमयंती', 'हीरा मल जमाल', 'गोपी चंद' और 'सेठ ताराचंद' का मंचन किया जाएगा। समापन दिवस पर 27 फरवरी को 'धर्म की जीत', 'बणबेटी', 'राजा उत्तानपाद ध्रुव का जन्म' और 'विराट पर्व' जैसे सांग प्रस्तुत किए जाएंगे।

डीआईपीआरओ ने बताया कि इस महोत्सव का उद्देश्य हरियाणा की लोक सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित एवं प्रोत्साहित करना है, साथ ही नई पीढ़ी को सांग कला से जोडना है। उन्होंने नागरिकों से अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर कलाकारों का उत्साहवर्धन करने की अपील की है।

अखण्ड काव्य धारा-2026 साझा संकलन का हुआ ऑन लाइन लोकार्पण

अखण्ड काव्य धारा पावन गंगधार की तरह : प्रख्यात साहित्यकार "यूपी रत्न" डॉ. गोपाल चतुर्वेदी

परिवहन विशेष न्यूज

वृन्दावन।देश की जानी मानी प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था ₹अखण्ड संडेर (इन्दौर) के 29 वें स्थापना दिवस के अवसर पर प्रकाशित साझा संकलन ₹अखण्ड काव्य धारा 2026₹ भाग-6 का 118वां ऑन लाइन लोकार्पण प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी के द्वारा किया गया।

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि 131 रचनाकारों की 263 उत्कृष्ट रचनाओं कविता, गीत, गजल, दोहों से सुसज्जित ₹अखण्ड काव्य धारा₹ साझा संकलन की अविरल काव्य धारा पावन गंगधार की तरह समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर कर सभी को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करेगी।

प्रख्यात ललित निबंधकार नर्मदा प्रसाद उपाध्याय ने कहा कि कविता मनुष्य की मौन संवेदना की मुखर अभिव्यक्ति है। यही अभिव्यक्ति मनुष्यता की पहचान है। अखण्ड संडे संस्था का समर्पण इस संवेदना के प्रति अदभुत है। धारा चाहे जल की हो या काव्य की यह जब तक अटूट न हो तब तक यह धारा नहीं कही जाती। हम ऐसी ही अखंड काव्य धारा के साक्षी हैं, जो पिछले 29 वर्षों में अटूट अविरल और अविराम है। मैं इसका हृदय में अभिनंदन करता हूँ।मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. विकास दवे ने कहा कि प्रख्यात साहित्यिक संस्था ₹अखण्ड संडेर लम्बे समय से अखण्ड साधना की तरह इस काव्य अनुष्ठान को, साहित्य अनुष्ठान को सुचारू रूप से चलाने का काम कर रही है; जो अद्भुत है।

₹अखण्ड संडेर के संस्थापक अध्यक्ष मुकेश इन्दौरी ने कहा कि अखंड काव्य धारा अनवरत बहती रहती है। यह धारा न किसी काल खंड में ठहरती है, न किसी विचार धारा की सीमा में बंधती है। अखंड काव्य धारा जोड़ने का काम करती है। वो अतीत की स्मृति, वर्तमान की चुनौती और भविष्य की आशा-तीनों को एक सूत्र में पिरोती है। मेरा आग्रह यही है कि हम कविता को केवल पढ़ें नहीं, उसे जिएं; क्योंकि जब तक मनुष्य है, तब तक कविता है-और जब तक कविता है, तब तक मनुष्य की संवेदना सुरक्षित है। कविता न रुकी है, न रुकेगी कभी। यह मनुष्यता की सांस है, चलती रहेगी।

ऑन लाइन लोकार्पण समारोह में प्रख्यात साहित्यकार डॉ. योगेन्द्रनाथ शुक्ल, मुम्बई से डॉ. रमेश गुप्त मिलन, कार्तिकेय त्रिपाठी, अनिल ओझा, रमेशचंद्र शर्मा, लखनऊ से डॉ. सुधा वशिष्ठ, ज्योति जैन, डॉ. शशिकला अवस्थी, आशा जाकड़, डॉ. शशि निगम, डॉ. दीपि गुप्ता सहित देश के विभिन्न प्रांतों के कई जाने-माने साहित्यकार उपस्थित रहे।संचालन मुकेश इन्दौरी ने किया।

आगरा में विश्वस्तरीय बुद्ध स्मारक से बदलेगी प्रदेश की पहचान: राजेश खुराना

आगरा में बन रहे वर्ल्ड क्लास बुद्धा स्मारक से यूपी की छवि को भी नई दिशा और पहचान मिलेगी : वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना

वर्ल्ड क्लास बुद्धा स्मारक बनाने का श्रेय योगीजी को जाता हैं, लोग बोलें - धन्यवाद महाराजजी

वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने इस महत्वपूर्ण निर्माण को एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताते हुए मुख्यमंत्री योगी महाराजजी का हृदय से अभिनंदन और आभार प्रकट किया

कालिंदी विहार के वर्ल्ड क्लास बुद्ध पार्क में तेज़ी से चल रहे विकास कार्यों पर क्षेत्र में उत्साह का माहौल

आगरा, संजय सिंह। अग्रनगरी आगरा अब एक और ऐतिहासिक पहचान की ओर बढ़ रही है। कालिंदी विहार (शाहदरा) स्थित बुद्ध पार्क में प्रस्तावित विश्वस्तरीय बुद्ध स्मारक का निर्माण कार्य तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। इस महत्वाकांक्षी परियोजना को लेकर क्षेत्रवासियों में उत्साह और प्रसन्नता का वातावरण है। वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने इसे प्रदेश के विकास की दिशा में एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया है।

राजेश खुराना ने कहा कि आगरा में बन रहा यह वर्ल्ड क्लास बुद्ध स्मारक न केवल सामाजिक एकता और सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ करेगा, बल्कि बौद्ध मूल्यों के प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में प्रदेश में विकास की रफ्तार अभूतपूर्व है और आगरा में पार्कों, सड़कों, पेयजल एवं सौंदर्यीकरण कार्यों में उल्लेखनीय प्रगति इसका प्रमाण है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि इस भव्य स्मारक के निर्माण का श्रेय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को जाता है और क्षेत्र के लोग भावुक होकर कह रहे हैं -"धन्यवाद महाराजजी।"

भारतीय जाटव समाज के प्रयास रंग लाए

श्री खुराना ने भारतीय जाटव समाज के प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि भारतीय जाटव समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र सिंह के सतत प्रयासों से बुद्ध पार्क के विकास कार्यों को गति मिली है। समाज के प्रतिनिधिमंडल ने 3 अगस्त 2025 को लखनऊ स्थित मुख्यमंत्री आवास पर भेंट कर ज्ञापन सौंपा था, जिसके बाद राज्य सरकार ने गंभीरता दिखाते हुए सकारात्मक निर्णय लिया। इस पहल में राष्ट्रीय संगठन सचिव अनिल कुमार (पूर्व न्यायाधीश) एवं प्रदेश अध्यक्ष नेत्रपाल सिंह की भी सक्रिय भूमिका रही। समाज के प्रयासों और सरकार के त्वरित निर्णय का परिणाम अब धरातल पर दिखाई दे रहा है।

क्षेत्र में खुशी की लहर

स्थानीय नागरिकों का कहना है कि वर्षों से उपेक्षित पड़े बुद्ध पार्क का कायाकल्प क्षेत्र की तस्वीर बदल देगा। पार्क के सौंदर्यीकरण, आधुनिक सुविधाओं के विस्तार और व्यवस्थित विकास से यह स्थल भविष्य में उत्तर प्रदेश ही नहीं, बल्कि देश और विश्व स्तर पर एक आदर्श सार्वजनिक स्थल के रूप में स्थापित होगा।

क्षेत्रवासियों ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, वरिष्ठ नेता उपेंद्र सिंह एवं नगर निगम प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह परियोजना सामाजिक समानता और समावेशी विकास का प्रतीक है। पार्क का विकास बच्चों, युवाओं और बुजुर्गों के लिए एक सुरक्षित, स्वच्छ और प्रेरणादायी सार्वजनिक स्थल उपलब्ध कराएगा।

राजेश खुराना ने कहा कि यह निर्णय वंचित वर्गों के अधिकारों और अवसरों को सुरक्षित रखने की सरकार की प्रतिबद्धता को भी प्रमाणित करता है। उन्होंने इस निर्माण को ऐतिहासिक बताते हुए मुख्यमंत्री का अभिनंदन किया और विश्वास जताया कि यह स्मारक आगरा की छवि को नई दिशा और विशिष्ट पहचान प्रदान करेगा।

आखिर में उन्होंने अग्रनगरी में बुद्ध स्मारक को लेकर उमंग और आशा का जो वातावरण बना है, वह आने वाले समय में आगरा के सांस्कृतिक मानचित्र को और अधिक समृद्ध करने का संकेत दे रहा है।

असम में विकास और सुरक्षा का संदेश: अमित शाह ने कामरूप में पुलिस बटालियन मुख्यालय की रखी नींव

संगिनी घोष

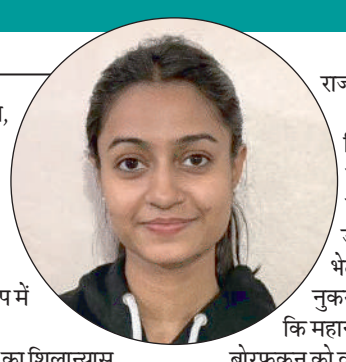

जनसभा से विकास, सुरक्षा और पूर्वोत्तर प्राथमिकता का संकेत केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने असम के कामरूप में असम पुलिस की 10वीं बटालियन के मुख्यालय का शिलान्यास किया और एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए राज्य के विकास, सुरक्षा और सांस्कृतिक पहचान को लेकर केंद्र सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर क्षेत्र अब राष्ट्रीय विकास रणनीति का प्रमुख केंद्र बन चुका है।

ऐसे देखें तो, यह कार्यक्रम केवल आधारशिला समारोह नहीं बल्कि क्षेत्रीय विकास और राजनीतिक संदेश दोनों का मंच बना। विपक्ष पर सांस्कृतिक और विकासात्मक मुद्दों को लेकर निशाना अपने संबोधन में मंत्री ने विपक्षी दलों पर आरोप लगाया कि उन्होंने राज्य की "जाति, माटी और भेटी" की सांस्कृतिक पहचान को नुकसान पहुँचाया। उन्होंने यह भी कहा कि महान अहोम सेनानायक लाचित बोरफुकन को वह सम्मान पहले नहीं मिला जिसके वे हकदार थे, जबकि वर्तमान समय में देशभर के लोग उनकी वीरता से परिचित हैं।

पूर्वोत्तर को राष्ट्रीय विकास का इंजन बनाने का दावा

उन्होंने कहा कि आने वाले पाँच वर्षों में असम पूर्वी भारत और पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र का औद्योगिक केंद्र बनने की क्षमता रखता है। सरकार की प्राथमिकता क्षेत्रीय कनेक्टिविटी, उद्योग और रोजगार अवसरों को बढ़ाना है।

इन्फ्रास्ट्रक्चर और सुरक्षा पर जोर

मंत्री ने उदाहरण देते हुए कहा कि जिन इलाकों में कभी सड़क बनाना भी मुश्किल था, वहाँ आज आधुनिक हाईवे और रक्षा उपयोग की सुविधाएँ विकसित हो चुकी हैं। उन्होंने नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बुनियादी ढाँचे और सुरक्षा व्यवस्था में सुधार का उल्लेख किया।

घुसपैठ और उग्रवाद पर सख्त रुख

अपने भाषण में उन्होंने कहा कि देश नक्सलवाद से मुक्त होने की दिशा में आगे बढ़ रहा है और इसी तरह असम सहित पूरे देश को घुसपैठ से मुक्त बनाना सरकार का लक्ष्य है। उन्होंने "घुसपैठिया-मुक्त, हिंसा-मुक्त, बेरोजगारी-मुक्त और विकासयुक्त असम" की परिकल्पना रखी।

राष्ट्रीय एकता का संदेश

उन्होंने "कच्छ हो या गुवाहाटी, अपना देश, अपनी माटी" के नारे के साथ देशभर में जनसांख्यिकीय संतुलन और सांस्कृतिक सुरक्षा को लेकर प्रतिबद्धता जताई।

मुख्य बिंदु

* कामरूप में असम पुलिस की 10वीं बटालियन मुख्यालय का शिलान्यास।
* पूर्वोत्तर को राष्ट्रीय विकास की प्राथमिकता बताया।
* विपक्ष पर सांस्कृतिक पहचान को नुकसान पहुँचाने का आरोप।
* लाचित बोरफुकन के सम्मान का मुद्दा उठाया।
* असम को 5 वर्षों में औद्योगिक हब बनाने का दावा।
* घुसपैठ-मुक्त और विकासयुक्त राज्य का लक्ष्य दोहराया।

आगे की दिशा

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि घोषित योजनाएँ समयबद्ध तरीके से लागू होती हैं, तो असम पूर्वोत्तर क्षेत्र में औद्योगिक और रणनीतिक केंद्र के रूप में उभर सकता है। आने वाले वर्षों में बुनियादी ढाँचे, निवेश और सुरक्षा सुधारों के वास्तविक प्रभाव पर सबकी नजर रहेगी।

---- "बहाने V/S सफलता" ----

विद्या भूषण भारद्वाज

1. मैं इतनी बार हार चुका , अब हिम्मत नही... !
अब्राहम लिंकन 15 बार चुनाव हारने के बाद राष्ट्रपति बने।
2.मै अत्यंत गरीब घर से हूँ... !
पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम भी गरीब घर से थे ।
3. मुझे उचित शिक्षा लेने का अवसर नही मिला... !
उचित शिक्षा का अवसर भारत के संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर को भी भारत मे नही मिला था..फिर उन्होंने अमेरिका में स्कालरशिप से पढ़ाई की
4.बचपन से ही अस्वस्थ था... !
आँस्कर विजेता अभिनेत्री मरली मेटलिन भी बचपन से बहरी व अस्वस्थ थी ।
5.मैने साइकिल पर घूमकर आधी ज़दिगी गुजारी है... !
निरमा के मालिक करसन भाई पटेल ने भी साइकिल पर निरमा बेचा और एम डी एच के ताउ ने टांगे पर मसाला बेचा और ज़दिगी गुजारी ।
6.एक दुर्घटना मे अपाहिज होने के बाद मेरी हिम्मत चली गयी... !
प्रख्यात नृत्यांगना सुधा चन्द्रन को देख लो इनके पैर नकली है ।
7.मुझे बचपन से मंद बुद्धि कहा जाता है... !
थामस अल्वा एडीसन को भी बचपन से मंदबुद्धि कहा जता था।
8.बचपन मे ही मेरे पिता का देहाँत हो गया था... !
प्रख्यात संगीतकार ए.आर.रहमान के पिता का भी देहांत बचपन मे हो गया था।
9.मुझे बचपन से परिवार की जिम्मेदारी उठानी पडी... !
लता मंगेशकर को भी बचपन से परिवार की जिम्मेदारी उठानी पडी थी।
10.मेरी लंबाई बहुत कम है... !
सचिन तेंदुलकर की भी लंबाई कम है।
11.मै एक छोटी सी नौकरी करता हूँ... !
इससे क्या होगा... धीरु अंबानी भी छोटी नौकरी करते थे ।पम्प पे तेल भरने की ।
12.मेरी कम्पनी एक बार दिवालिया हो चुकी है , अब मुझ पर कौन भरोसा करेगा... !
दुनिया की सबसे बडी शीतल पेय निर्माता पेप्सी कोला भी दो बार दिवालिया हो चुकी है ।
13.मेरा दो बार नर्वस ब्रेकडाउन हो चुका है , अब क्या कर पाउँगा... !
डिज्नीलैंड बनाने के पहले वाल्ट डिज्नी का तीन बार नर्वस ब्रेकडाउन हुआ था।
14.मेरी उम्र बहुत ज्यादा है.... !
विश्व प्रसिद्ध केंटुकी फ्राइड चिकेन के मालिक ने 60 साल की उम्र मे पहला रेस्तरा खोला था।
अभिताभ ने अपनी पहली फिलम 27 की उम्र में बनाई थी.
15.मेरे पास बहुमूल्य आइडिया है पर लोग अस्वीकार कर देते है... !
जेराँक्स फोटो कापी मशीन के आईडिया को भी ढेरो कंपनियो ने अस्वीकार किया था पर आज परिणाम सामने है ।
16.मेरे पास धन नही... !
इन्फोसिस के पूर्व चेयरमैन नारायणमूर्ति के पास भी धन नही था उन्हे अपनी पत्नी के गहने बेचने पडे ।
17.मुझे ढेरो बीमारियां है.. !
वर्जिन एयरलाइंस के प्रमुख भी अनेको बीमारियो मे थे ।
राष्ट्रपति रुजवेल्ट के दोनो पैर काम नही करते थे।
स्टीफन हांकिंग को तो आप जानते ही होंगे।
आज आप जहाँ भी है या कल जहाँ भी होगे इसके लिए आप किसी और को जिम्मेदार नही ठहरा सकते ,
हर कामयाब और नाकामयाब इंसान को बिल्कुल उतना ही समय मिलता है, 24 घंटे ये डिपेंड करता है कि आप कैसे इन्हें खर्च करते हो.
इसलिए आज चुनाव करिये - सफलता और सपने चाहिए या खोखले बहाने...
अच्छा प्रिय जनो फिर मिलेंगे
हमेशा मुस्कुराते रहना...
कभी अपने लिए...
तो कभी अपनोके लिए...

डॉ. मिताली खोड़ियार को 'सर्वश्रेष्ठ केस स्टडी' पुरस्कार

ब्राइटन इंटरनेशनल स्कूल में भव्य सम्मान समारोह

सुनील चिंचोलकर

रायपुर,छत्तीसगढ़। रायपुर के ब्राइटन इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में शहर की प्रतिभाशाली शिक्षाविद् एवं कलाकार डॉ. मिताली खोड़ियार को 'सर्वश्रेष्ठ केस स्टडी' के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर शिक्षा जगत की कई प्रतिष्ठित हस्तियाँ उपस्थित रहीं। डॉ. मिताली को पूर्व में भी शिक्षा और समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु विभिन्न सम्मानों से नवाजा जा चुका है।

बहुमुखी प्रतिभा की धनी

कहानी, कॉमेडी और वेंट्रिलोक्विज़्म

डॉ. मिताली खोड़ियार एक प्रख्यात स्टोरी टेलर, स्टैंड-अप कॉमेडियन तथा छत्तीसगढ़ की पहली महिला वेंट्रिलोक्विस्ट के रूप में जानी जाती हैं। उन्होंने नॉर्थ अमेरिका की प्रसिद्ध स्टोरी टेलर सेज से प्रशिक्षण एवं प्रमाणपत्र प्राप्त किया है। उनकी

कहानियाँ और कविताएँ लंदन और कनाडा के रेडियो चैनलों पर भी प्रसारित हो चुकी हैं, जिससे उनकी रचनात्मकता को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय भूमिका

डॉ. मिताली हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में भी सक्रिय हैं। वे विदेशी छात्रों को हिंदी सिखा रही हैं और कई अंतरराष्ट्रीय ब्लॉगर तथा यूट्यूबरों को भी हिंदी भाषा का प्रशिक्षण दे चुकी हैं। अपनी कठपुतली कला और वेंट्रिलोक्विज़्म के माध्यम से वे बच्चों में कहानी सुनने और पढ़ने की रुचि पुनः जागृत करने का प्रयास कर रही हैं, ताकि मोबाइल संस्कृति के प्रभाव से बच्चों की रचनात्मकता प्रभावित न हो।

अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहचान

डॉ. मिताली की कला से प्रभावित होकर अमेरिका के Frank Logan ने अपने कार्यक्रम में उनका विशेष साक्षात्कार लिया, जिसमें उन्होंने अपनी वेंट्रिलोक्विज़्म यात्रा साझा की। वे छत्तीसगढ़ को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।

शिक्षा एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि

डॉ. मिताली ने बिलासपुर स्थित बजेंश स्कूल तथा शासकीय बिलासा महाविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की है।वे स्वर्गीय विजीया खोड़ियार एवं एच. एल. खोड़ियार की सुपुत्री तथा प्रो. निमेष खोड़ियार की बहन हैं। डॉ. मिताली खोड़ियार का अपनी कला, शिक्षा और समाजसेवा के माध्यम से छत्तीसगढ़ का नाम राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित करना है।

विख्यात कहावत:- "हर सफल आदमी के पीछे एक औरत होती है।" का सही उदाहरण

विद्या भूषण भारद्वाज

मुंबई में एक होटल मालिक ने अपने मेहमानों को एक चौंकाने वाला ऑफर दिया:

* "जो कोई भी मगरमच्छों से भरे इस तालाब में कूदकर ज़िंदा बाहर आएगा, उसे ₹5 करोड़ मिलेंगे। अगर मगरमच्छ उसे खा गए, तो उसके * परिवार को ₹2 करोड़ मिलेंगे।"

सब डर गए।

किसी की कूदने की हिम्मत नहीं हुई।

अचानक — छप की आवाज आई!

कोई तालाब में कूद गया था!

लोग हैरान रह गए।

सबकी नज़रें पानी में उस आदमी पर गईं।

वह अपनी जान बचाने के लिए लड़ रहा था, बिजली की तेज़ी से पानी में से निकल रहा था।

एक मगरमच्छ उसका पीछा कर रहा था!

लेकिन उसने हार नहीं मानी।

वह संघर्ष करता रहा, आगे बढ़ता रहा...

और फिर — वह कामयाब हो गया!

वह दूसरी तरफ से निकला, हाँफते हुए ज़िंदा।

भीड़ तालियों से गूंज उठी।

वे उसे बधाई देने के लिए दौड़े।

जैसे ही उसने अपनी सांस संभाली और महसूस किया कि वह अब करोड़ों का विनर बन गया है, उसने पूछा:

"पहले मुझे बताओ — मुझे किसने धक्का दिया?"

भीड़ में से एक औरत ने हाथ उठाया।

वह उसकी पत्नी थी।

उसने कहा:

"तुम किसी काम के नहीं हो!

अगर तुम बच गए, तो हमें ₹5 करोड़ मिलेंगे।

अगर तुम मर गए, तो ₹2 करोड़।

दोनों ही तरह से — मैं जीत जाऊंगा!"

और इस तरह यह कहावत बनी: "हर सफल आदमी के पीछे एक औरत होती है।"

क्या कहती है तृतीय पक्ष से संबंधित सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 की धारा 11

नरेश गुणपाल

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 की धारा 11 तृतीय पक्ष सूचना से संबंधित है। जब आप ऐसी जानकारी की मांग करते हैं, जो किसी दूसरे व्यक्ति (पब्लिक अथॉरिटी के अलावा किसी अन्य) से जुड़ी है और उस व्यक्ति ने गोपनीय माना है, तब सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 की धारा 11 की प्रक्रिया लागू होती है।

कोई भी जन सूचना अधिकारी इस प्रक्रिया को पूरा किए बिना, सीधे अपनी तरफ से यह लिख कर जानकारी देने से इंकार नहीं कर सकता है कि तृतीय पक्ष से संबंधित होने के कारण यह जानकारी नहीं दी जा सकती है।

आवश्यक प्रक्रिया :-

यदि जन सूचना अधिकारी को लगता है कि मांगी गई सूचना किसी तीसरे पक्ष से संबंधित है, तो उसे अनिवार्य रूप से ये कदम उठाने होंगे -

नोटिस देना :- आरटीआई आवेदन प्राप्त होने के 5 दिनों के भीतर, जन सूचना अधिकारी उस तीसरे पक्ष को आरटीआई आवेदन की छायाप्रति के साथ लिखित नोटिस देगा कि वह जानकारी सार्वजनिक करना चाहता है या नहीं। इस बारे में वह (तृतीय पक्ष) अपनी सहमति या असहमति से 10 दिन के भीतर लिखित या मौखिक रूप से अवगत कराए।

पक्ष रखने का अवसर :-

अर्थात तीसरे पक्ष को नोटिस मिलने के 10 दिनों के भीतर अपनी बात रखने का मौका दिया जाता है कि वह जानकारी सार्वजनिक की जानी चाहिए या नहीं।

निर्णय लेना :- तीसरे पक्ष के जवाब पर विचार करने के बाद, जन सूचना अधिकारी को आरटीआई आवेदन प्राप्त होने की तिथि से 40 दिनों के भीतर यह तय करना होता है कि सूचना देनी है या नहीं।

तृतीय पक्ष की असहमति प्राप्त होने पर भी लोक सूचना अधिकारी को सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के प्रावधानों के अनुसार अपने विवेक से सूचना के प्रकटन के बारे में निर्णय करना होता है।

वह तीसरे पक्ष की असहमति को मानने के लिए बाध्य नहीं है। यानी ऐसी असहमति के बाद भी जन सूचना अधिकारी जानकारी दे सकता है।

आज जो हुआ उससे पुनः शर्मसार हुआ अपना इन्दौर

अभियान आजतक स्वतंत्र पत्रकार व लेखक की कलम से।।

मिडिया कर्मि भी घायल हुए पुलिस के अधिकारियों को भी नहीं बक्शा

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

इन्दौर में प्रदेश मंत्री के औकात वाले बयान के विरोध में में पुतला दहन तो हुआ। वहीं एआई इम्पैक्ट सामिट के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा दिल्ली में किये गये अर्धनग्न प्रदर्शन के विरोध में आज दोपहर में कांग्रेस कार्यालय का घेराव करने की घोषणा के बाद कांग्रेस भाजपा के नेता व कार्यकर्ता आमने-सामने आ गए। इन्दौर

भागीरथ पूरा कांड अभी ठंडा ही हुआ नहीं था। कि आज इस तरह की अशोभनीय प्रदर्शन की इस घटना से शहर की शाख घट गई है, कारण कोई भी हो बदनाम तो अपना शहर ही हुआ है। क्यो की सब के अपने अपने मत होंगे अपनी अपनी कहानी बहरहाल आज जो हो रहा है नहीं होना था, मन आहत है ,दोनो पक्ष अपने इस शहर के नागरिक ओर सचेतक है हर किसी को अपनी बात कहने का हक है ,मगर इस स्तर पर,,,कभी नही पक्ष विपक्ष में विरोध-नारेबाजी हो मगर किसी की जान माल को खतरा बन पड़े तो ऐसा कृत्य निंदनीय है , आज इस घटनाक्रम ने फिर राजनीतिक दलों को और उनके कार्यकर्ताओ को सोचने के लिए मजबूर कर दिया। कहां जा रहा है राजनीति का स्तर ? गांधी भवन कांग्रेस के कार्यालय के समाने जो कुछ भी हुआ उससे बहुत सारे पुलिसकर्मी व पत्रकार साथी घायल हुए। इस की जिम्मेदारी कौन लेगा आज फिर पुनः एक बार अपना शहर इन्दौर ही शर्मसार हुआ।

₹6.78 की थाली: क्या देश का भविष्य इतना सस्ता है?

– डॉ. सत्यवान सौरभ

संपादकीय

चिंतन-मनन

मध्याह्न भोजन योजना भारत की सबसे महत्वाकांक्षी और प्रभावशाली सामाजिक योजनाओं में से एक रही है। इसका उद्देश्य केवल बच्चों की भूख मिटाना नहीं था, बल्कि कुपोषण से लड़ना, विद्यालयों में उपस्थिति बढ़ाना और सामाजिक समानता को बढ़ावा देना भी था।

सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले करोड़ों बच्चों के लिए मध्याह्न भोजन योजना के तहत प्रति विद्यार्थी प्रतिदिन मात्र ₹6.78 (प्राइमरी) और ₹10.17 (अपर प्राइमरी) की कुकिंग कॉस्ट—क्या इससे पोषण और सम्मान दोनों संभव हैं?

भारत में शिक्षा को राष्ट्र निर्माण की सबसे मज़बूत नींव माना जाता है। बार-बार यह कहा जाता है कि बच्चे ही देश का भविष्य हैं और उनके विकास में किया गया निवेश ही सच्चा विकास है। लेकिन जब हम सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले करोड़ों बच्चों के लिए प्रति विद्यार्थी प्रतिदिन मात्र ₹6.78 (प्राइमरी) और ₹10.17 (अपर प्राइमरी) की कुकिंग कॉस्ट पर नज़र डालते हैं, तो यह आदर्शवाद कठोर यथार्थ से टकराता हुआ दिखाई देता है।

स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उठता है—क्या वाकई इतने पैसों में बच्चों को पौष्टिक, पर्याप्त और सम्मानजनक भोजन उपलब्ध कराया जा सकता है, या फिर हम अनजाने में बच्चों के भविष्य के साथ एक सामूहिक मज़ाक कर रहे हैं?

मध्याह्न भोजन योजना भारत की सबसे महत्वाकांक्षी और प्रभावशाली सामाजिक योजनाओं में से एक रही है। इसका उद्देश्य केवल बच्चों की भूख मिटाना नहीं था, बल्कि कुपोषण से लड़ना, विद्यालयों में उपस्थिति बढ़ाना और सामाजिक समानता को बढ़ावा देना भी था। विशेष रूप से गरीब, दलित, आदिवासी और वंचित वर्ग के बच्चों के लिए यह योजना कई बार दिन का एकमात्र सुनिश्चित भोजन बन जाती है। ऐसे में इस योजना के लिए तय की गई लागत का यथार्थवादी, संवेदनशील और मानवीय होना अत्यंत आवश्यक है।

आज का आर्थिक परिदृश्य किसी से छिपा नहीं है। महंगाई लगातार बढ़ रही है। सब्ज़ियों के दाम रोज़ बदलते हैं, दालें और तेल आम आदमी की थाली से दूर होते जा रहे हैं, गैस सिलेंडर की कीमत हर घर को परेशान कर रही है और दूध जैसी बुनियादी पोषण सामग्री भी लगातार महंगी हो रही है। ऐसे में यह मान लेना कि कुछ ही रुपयों में एक बच्चे के लिए संतुलित और गुणवत्तापूर्ण भोजन तैयार किया जा सकता है, जमीनी सच्चाई से कोसों दूर प्रतीत होता है।

सरकारी आदेशों और दिशा-निर्देशों में कुकिंग कॉस्ट का जो विभाजन दिखाया जाता है, वह काग़ज़ पर भले ही संतुलित लगे, लेकिन व्यवहार में यह लगभग असंभव चुनौती बन जाता है। सब्ज़ी, दाल, दूध, मसाले, तेल, गैस और अन्य आवश्यक खर्चों को जोड़ दिया जाए, तो तय राशि कई बार पहले ही दिन समाप्त हो जाती है। परिणामस्वरूप विद्यालयों को या तो भोजन की गुणवत्ता से समझौता करना पड़ता है, या मात्रा से—और कई बार दोनों से।

इसका सबसे बड़ा नुकसान बच्चों को उठाना पड़ता है। भोजन में विविधता की कमी, पोषक तत्वों का अभाव और स्वादहीनता बच्चों की रुचि को भी प्रभावित करती है। कई बच्चे भोजन पूरा नहीं करते, कुछ की स्कूल में उपस्थिति कम होने लगती है और कुछ धीरे-धीरे पढ़ाई से भी कटने लगते हैं। यह प्रभाव तुरंत आँकड़ों में नहीं दिखता, लेकिन लंबे समय में यह बच्चों की सीखने की क्षमता, स्वास्थ्य और

आत्मविश्वास को गहराई से प्रभावित करता है।

इस पूरी व्यवस्था का एक और अक्सर अनदेखा किया जाने वाला पहलू है—रसोइये और विद्यालय स्टाफ। बेहद कम मानदेय में काम करने वाले रसोइयों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे हर दिन सैकड़ों बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण भोजन तैयार करें। कई बार उन्हें स्थानीय स्तर पर उधार लेना पड़ता है, अपनी जेब से खर्च करना पड़ता है या फिर शिकायतों और आलोचनाओं का सामना करना पड़ता है। यह स्थिति न केवल अन्यायपूर्ण है, बल्कि योजना की मूल भावना के भी विरुद्ध है।

विडंबना यह है कि एक ओर हम "सुपोषित भारत", "नई शिक्षा नीति" और "मानव संसाधन विकास" जैसे बड़े-बड़े शब्दों का प्रयोग करते हैं, वहीं दूसरी ओर बच्चों के भोजन के लिए बजट तय करते समय अत्यधिक कंजूसी दिखाई देती है। क्या यह स्पष्ट विरोधाभास नहीं है? क्या हम सचमुच मानते हैं कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, गुणवत्तापूर्ण पोषण के बिना संभव है? शोध और अनुभव—दोनों ही यह सिद्ध करते हैं कि शिक्षा और पोषण का गहरा संबंध है। भूखा या कुपोषित बच्चा न तो ध्यान केंद्रित कर सकता है और न ही सीखने में रुचि ले सकता है। यदि मध्याह्न भोजन योजना कमजोर होगी, तो उसका सीधा असर सीखने के स्तर, उपस्थिति और ड्रॉपआउट दर पर पड़ेगा। यह केवल एक कल्याणकारी योजना का प्रश्न नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय विकास और सामाजिक न्याय का मुद्दा है।

एक और गंभीर समस्या यह है कि कुकिंग कॉस्ट का निर्धारण अक्सर एकरूपता के आधार पर किया जाता है, जबकि देश के अलग-अलग हिस्सों में महंगाई और बाजार दरें अलग-अलग हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में लागत का अंतर स्पष्ट है, फिर भी तय राशि लगभग समान रहती है। इससे कई क्षेत्रों में विद्यालयों के लिए इस योजना को प्रभावी ढंग से लागू करना और भी कठिन हो जाता है।

समय की मांग है कि सरकारें इस विषय को केवल प्रशासनिक औपचारिकता के रूप में न देखें, बल्कि इसे नैतिक और मानवीय जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार करें। कुकिंग कॉस्ट का नियमित और स्वचालित पुनर्मूल्यांकन किया जाना चाहिए, जिसे महंगाई दर और स्थानीय बाजार मूल्यों से जोड़ा जाए। साथ ही निगरानी व्यवस्था को मज़बूत किया जाए, ताकि बढ़ी हुई राशि वास्तव में बच्चों के भोजन पर ही खर्च हो। यह भी आवश्यक है कि ज़मीनी स्तर पर काम करने वाले शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों और रसोइयों की आवाज़ को नीति-निर्धारण की प्रक्रिया में शामिल किया जाए। वे रोज़ इस व्यवस्था की वास्तविक चुनौतियों का सामना करते हैं और उनके अनुभव किसी भी फाइल नोटिंग से कहीं अधिक मूल्यवान हैं।

सरकारों को यह समझना होगा कि मध्याह्न भोजन योजना कोई बोझ नहीं, बल्कि भविष्य में किया गया निवेश है। आज अगर बच्चों की थाली मजबूत होगी, तो कल देश की अर्थव्यवस्था, समाज और लोकतंत्र भी मजबूत होंगे। लेकिन यदि हम आज भी बच्चों के भोजन को खर्च समझकर न्यूनतम बजट में चलाने की सोच रखते हैं, तो इसके दुष्परिणाम आने वाली पीढ़ियों को भुगतने पड़ेंगे।

अंततः प्रश्न वही है—क्या ₹6.78 या ₹10.17 में बच्चों का पोषण वास्तव में संभव है, या यह केवल आंकड़ों का खेल बनकर रह गया है? अब भी समय है कि नीति-निर्माता इस सच्चाई को स्वीकार करें और साहसिक निर्णय लें। क्योंकि यह बहस केवल भोजन की नहीं है— यह बच्चों के सम्मान, स्वास्थ्य और देश के भविष्य की है।

(डॉ. सत्यवान सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), एक कवि और

अथ यूजीसी कांड द्वितीय सर्ग : इति घुटने का पेट की तरफ मुड़ना

(आलेख : बादल सरोज)

इति सिरी संघ पुराणे, भारत खण्डे, यूजीसी काण्डे, द्वितीयो अध्याय के साथ रंगमंच पर जो शुरू हुआ है, उसमे नाटक के छहों तत्व पूरे उरूज पर हैं। एकदम चुस्त और ठीये तक पहुंचाने वाला कथानक है, अपनी-अपनी भूमिकाएं पूरे तालमेल के साथ निबाहने वाले पात्र हैं, दादा कोंडके की अगली पीढ़ी के द्विअर्थी से बहुअर्थी होते संवाद हैं, मोनालिसा दृष्टि से हरेक के अनुकूल दीखते हुए भी प्रतिकूल बनी रहने वाली मंच सज्जा है, सुव्यवस्थित थीम है, पात्रों की सज्जा है : रूप बदल-बदल कर, कई बार तो बिना रूप बदले ही वही अभिनेता लौट-फिरकर अनेक-अनेक भूमिकाओं में अवतरित हो रहा है : एक पल में एक इंसान -- डॉ जैकिल — नजर आता है, अगले पल में बिना चोला बदले शैतान -- मिस्टर हाईड — में बदल जाता है। विडम्बना से भरपूर कथानक में रहस्य भी है, रोमांच भी है। त्रासद व्यंग और जुगुप्सित हास्य -- ब्लैक ह्यूमर और डार्क कॉमेडी — के साथ एक डरावने दु:स्वप्न को यथार्थ में बदलने की मंशा भी है। निर्माता, निर्देशक, सूत्रधार और पटकथा लेखक एक ही है, इसलिए इस तरह की विसंगतियों का संगति में होने जैसा अस्वाभाविक, स्वाभाविक भी है।

इस बार शुरुआत सर्वोच्च व्यास पीठ से हुई। उस सुप्रीम कोर्ट ने, जिसने असम के मुख्यमंत्री का नरसंहार के लिए उकसाने वाला वीडियो, मुस्लिम समुदाय के प्रति हिंसा के खुले आव्हान का प्रमाण सामने आने और यूपी के मुख्यमंत्री योगी के ऐसे ही विभाजनकारी बयानों को प्रस्तुत किये जाने के बाद भी उसका संज्ञान लेने से इंकार कर दिया था। सीपीएम और अन्य जागरूक भारतीयों की याचिका को खारिज करते हुए कहा कि उसके पास 'पहले से ही बहुत से काम है'। जिसके पास ऐसे भड़काऊ, आग लगाऊ मामलों की सुनवाई के लिए वक्त नहीं था, उसी सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश की अगुआई वाली युगल खंडपीठ ने आनन-फानन में इतनी फुर्ती दिखाई कि दूसरे पक्षों को समुचित अवसर दिए बिना ही, पहली और आरंभिक सुनवाई में ही उच्च शिक्षा संस्थानों में समानता को मजबूत बनाने वाली यूजीसी की गाइड लाइन्स -- प्रमोशन ऑफ़ इक्विटी इन हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशंस रेगुलेशन २०२६ — पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी।

माननीय जज यह तक भूल गए कि ये गाइड लाइन्स — नए नियम — अचानक से नहीं बन गए थे। यूजीसी या केंद्र सरकार ने अपने आप स्व-विवेक से नहीं बनाए थे। जातिगत आधार पर उत्पीडन के चलते आत्महत्या जैसा भयानक कदम उठाने वाले रोहित वेमुला और मुम्बई की युवा डॉक्टर पायल तडवी की माँओं द्वारा दायर याचिकाओं के निराकरण में दिए स्वयं उनके -- सुप्रीम कोर्ट के -- फैसले का परिणाम थे। उन्होंने बहुत सोचे-समझे से तरीके से इस तथ्य को अनदेखा कर दिया कि ये कथित गाइड लाइन्स खुद उन्हीं — मतलब सुप्रीम कोर्ट — के हस्तक्षेप, निर्देश और देखरेख में, सभी राजनीतिक दलों की भागीदारी वाली संसदीय समिति के सर्वसम्मत अनुमोदन और देश भर के लोगों से राय, सलाह, सुझाव और आपत्तियों को मांगे जाने की प्रक्रिया पूरी किये जाने के बाद पूरे छह साल में बनी थीं। कि ये 14 साल पहले २०१२ में बने ऐसे ही नियमों का थोड़ा-सा सुथरा और सुधरा रूप थीं। कि खुद इसी कोर्ट ने ही सारे तथ्यों की जांच के बाद यह पाया था कि २०१२ के नियम अपना मकसद पूरा करने में असफल रहे हैं, इसलिए उन्हें थोड़ा दुरुस्त करने, शिकायत मिलने और उसके निराकरण होने की प्रक्रिया की समय सीमा तय करते हुए उसे पारदर्शी बनाये जाने की जरूरत है।

मसला सिर्फ इतना भर नही है कि सीजेआई सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की खण्डपीठ ने यह सब जानने के बावजूद स्टे दे दिया, यह भर भी नहीं है कि केंद्र सरकार और यूजीसी की तरफ से खड़े हुए सोलिसिटर जनरल तुषार मेहता के मुंह से बोल तक नहीं फूटे, उन्होंने जो ऊपर लिखा जा चुका है, उसकी याद तक माननीय न्यायमूर्तियों को नहीं दिलाई। जिस बात की उन्हें तनखा मिलती है, वह — याचिका का विरोध करने और सरकार का पक्ष रखने की -- ड्यूटी भी नहीं निभाई। इन सबके साथ, इससे ज्यादा चिंताजनक वे टिप्पणियाँ हैं, जो सीजेआई ने की हैं।

अदालतों की खबर रखने वाली खबरिया साइट्स और अखबारों में छपी खबरों के मुताबिक, उन्होंने जो बोला वह एक तरह से दुराग्रही याचिकाकर्ताओं के कहे को दोहराने जैसा था। फटाफट दिए स्टे का औचित्य बताते हुए २९ जनवरी, २०२६ को दिए गए इस आदेश में कहा कि ये नए नियम "प्रथम दृष्टया अस्पष्ट" हैं और इनका दुरुपयोग समाज में विभाजन पैदा कर सकता है। यह भी कि 'जाति-आधारित भेदभाव' को केवल दलित, आदिवासी और ओबीसी के खिलाफ भेदभाव के रूप में परिभाषित किया गया है और इस तरह "सामान्य श्रेणी के छात्रों को उनके साथ किये जाने वाले जाति-आधारित भेदभाव के मामलों में सुरक्षा से बाहर रखता है।"

इस तरह सर्वोच्च अदालत ने भारतीय समाज की एक नई, अब तक 'छुपी' रही स्थिति को दर्ज किया है कि इस देश में सामान्य श्रेणी के नागरिको को भी 'उच्च जाति' का होने के चलते प्रताड़ना और भेदभाव भुगतना पड़ता है!! व्यास पीठ इस निष्कर्ष पर कैसे पहुंची, इस पर आगे देखेंगे। फिलहाल तो यह देखना दिलचस्प होगा कि अगली सुनवाई में इस नई खोज की पुष्टि में किस तरह के तथ्य और घटनाओं के ब्यौरे सामने लाये जाते हैं। अभी तो यह देख लेते हैं कि इस स्टे के बाद हुआ क्या? और इस सर्वोच्च व्यास पीठ से लेकर सड़क तक जो हुआ, क्या उसकी कोई पारस्परिक संबद्धता - बोले तो क्रोनोलोजी - है?

व्यास पीठ ने इन नियमों के कारण 'समाज में विभाजन पैदा' होने की जिस आशंका के आधार पर यह असाधारण कदम उठाया था, वह आशंका स्थगित हो गयी? नहीं, इसके ठीक उलट, जातिश्रेष्ठता का दंभ भरने वाला जिन्न पूरी नग्नता के साथ नाचने लगा। सवर्ण समावेशों का दावा करने वाले झुंडों की अगुआई में दिल्ली सहित देश के कई शहरों में आक्रामक प्रदर्शन शुरू हो गए। गैर-सवर्ण समुदायों के लिए 'जूते मारो .... को' सहित ऐसे नारे लगाए जाने लगे, जैसे अब तक सिर्फ अल्पसंख्यक मुस्लिम समुदाय के लिए आरक्षित रखे जाते थे। क्या यह सब अनायास और स्वत:स्फूर्त तरीके से होने लगा या यह जिसकी सौवीं वर्ष मन रही है, उस आरएसएस द्वारा, अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने की महापरियोजना का यूजीसी अध्याय है? कौन है यह लोग? किस कुनबे से इनकी नाभि नाल के संबंध हैं? यह जानना इस पूरी दुष्ट परियोजना को समझना आसान बनाएगा।

जिन्होंने यूजीसी की नयी गाइडलाइन्स को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी, वे श्रीमान विष्णु शंकर जैन उपनाम के हिसाब से तो जैन हैं, मगर उनकी ख्याति "हिंदू कानूनी योद्धा" की है। अपने आपको "वैचारिक रूप से दक्षिणपंथी" बताते हैं और 'हिंदू फ्रंट फॉर जस्टिस' के प्रवक्ता और कर्ताधर्ता हैं। यह वह संस्था है, जिसका धंधा सैकड़ों हजारों वर्ष पुरानी इमारतों को हिन्दू मंदिर बताने के दावे ठोकना है। बनारस के ज्ञानवापी, मथुरा के कृष्ण जन्मभूमि, अयोध्या विवाद के मामलों के याचिकाकर्ता रहे हैं। कुतुब मीनार परिसर में पूजा के अधिकार, ताजमहल को शिव मंदिर बताने वाले दावों के कर्णधार रहे हैं। मुकदमा ठोककर वक्फ अधिनियम की संवैधानिक वैधता को भी चुनौती देने का काम भी इनके खाते में जुड़ा है। इनके पिता, वरिष्ठ वकील हरि शंकर जैन बाबरी मस्जिद—राममंदिर प्रकरण में वकील थे और उन्हीं की सहायता करके इन श्रीमान ने अपने कैरियर की शुरुआत की थी। उनकी इन्हीं योग्यताओं के चलते सितंबर २०१२ में, केंद्र सरकार ने उन्हें सर्वोच्च न्यायालय में पैनल वकील के रूप में नियुक्त किया था, इस हैसियत से विभिन्न मामलों में सरकार का प्रतिनिधित्व करते हैं। मतलब यह कि दो पीढ़ी से संघी कुनबे के संग हैं।

सुप्रीम कोर्ट के स्टे आर्डर के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय और जेएनयू में वहां के छात्र होने का दिखावा करते हुए जो भीड़ जमा की गयी थी, उसमें ज्यादातर छात्र नहीं, बल्कि ख़ास तरह के यू-ट्यूबर थे। गाली-गलौज की भाषा में नारेबाजी करने वाले, ब्राह्मणवाद जिंदाबाद का उदघोष करने वाले इस यू-ट्यूबर गैंग की अब तक की कर्म-कुंडली सामने आ चुकी है। इनमें एक यू-ट्यूबर मेघा लवरिया है, जिसे अक्सर भड़काऊ बयान देते देखा जाता है।

साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण और हिंसा का आव्हान उनका मुख्य सुर है। "एक बार बंगाल में भाजपा की सरकार आने दीजिए, फिर हम बताएंगे कि बांग्लादेशी रोहिंग्या को कैसे निकाला जाता है' से "मैं तो कहती हूं ऐसी वोट चोरी होनी चाहिए, डंके की चोट पर होनी चाहिए।" जैसे कुछ वायरल बयानों को देखकर उनके राजनीतिक रुझान को जाना जा सकता है। दूसरी रुचि तिवारी हैं, जिनके विडियोज साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण के साथ, उससे अधिक दलित-आदिवासियों के प्रति नफरत से भरे होते है। उनके प्रति 'हम' और 'वे' की भाषा में बात करना उनका मुख्य लहजा है। "वे आरक्षण चाहते हैं, लेकिन कहते हैं जातिवाद मत करो" जैसे शीर्षक वाले खुले दलित विरोधी विडियो बनाना उनकी वह उपलब्धि है, जिस पर कुनबा उन पर मोहित हैं।

लगता है, ये दोनों युवतियां नहीं जानतीं कि जिस ब्राम्हणवाद के जिंदाबाद के नारे लगा-लगाकर वे अपना गला बिठाए हुए हैं, वह भस्मासुर जब पूरी तरह जाग्रत हो जाएगा, तब वह शूद्रों और पिछड़ों की तरफ बाद में जाएगा, सबसे पहले अपनी परिभाषा में जिन्हें शूद्रातिशूद्र कहता है, उन महिलाओं — यानि खुद इन्हीं मोहतरमाओं की गर्दन का नाप लेने आयेगा। उमा भारती इसे भुगत चुकी हैं, जब मुख्यमंत्री का पदभार संभालते हुए उन्होंने मनुस्मृति लहराते हुए उसके आधार पर राज चलाने का खम ठोका था — जो जल्दी ही उन्हीं पर अमल में आयी।

कुल जमा यह कि यूजीसी के बहाने देश भर में — अभी खासकर हिंदी भाषी प्रदेशों में जो सवर्णवादी, अब साफ़-साफ़ शब्दों में ब्राम्हणवादी, उन्माद भडकाया जा रहा है, उसका सूत्रधार, पटकथा लेखक, निर्माता-निर्देशक, यहाँ तक कि एक्टर सप्लायर भी आरएसएस है। इधर जिसे वे हिन्दू समाज मानते हैं, उसके ९० प्रतिशत हिस्से को जूते मारे जाने के युद्धोन्माद का शंख फूँका जा रहा था, उधर लखनऊ में सरसंघचालक मोहन भागवत ठीक इस सबके बीच सभी हिंदुओं की एकता का मंत्रोच्चार कर रहे थे। हिन्दू धर्म से सनातन धर्म और अब शुद्ध सनातन — ब्राम्हण धर्म — तक पहुंचना सौवीं वर्ष में असली एजेंडे पर आना है।

यूपी बिहार में यादव बनाम अन्य, दलितों में जाटव बनाम अन्य, हरियाणा में जाट बनाम पैंतीस जात की सोशल इंजीनयरिंग के जरिये जिस भुतहा खँडहर की तामीर की जानी थी, वह यही था। उन्हें खुद पता है कि हिन्दू एकता जिस चिड़िया का नाम है, वह सिर्फ जुमलों में पाई जाती है। असली चिड़ियाँएँ तो उस जाल में लपेटकर फंसाकर रखी जानी है, जिसका नाम ब्राम्हणवाद है। स्टे देते समय दिया गया सीजेआई सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की बेंच का यह निष्कर्ष कि "सामान्य श्रेणी के छात्रों को उनके साथ किये जाने वाले जाति-आधारित भेदभाव के मामलों में सुरक्षा से बाहर रखता है।" इसी निरंतरता में पढ़ा जाना चाहिए।

इसे पढ़कर सुप्रीम कोर्ट के अब तक के प्रसिद्ध और कालजयी महत्वपूर्ण फैसले सुनाने वाले जजों में से एक जस्टिस वी.आर. कृष्ण अय्यर और ताजा फैसला सुनाने वाले दोनों माननीय जज सीजेआई सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की जाति की याद आई। दोनों माननीय जन्मना ब्राम्हण हैं। सिर्फ धुर अज्ञानी या पीड़ितों के जातिगत उत्पीडन का सवाल उठाने को ही जातिवाद मानने वाले डेढ़ चतुर ज्ञानी ही होंगे, जो कहेंगे कि क्या जजों की जाति का संज्ञान लिया जाना चाहिए? कि न्यायपालिका में न्याय की आसंदी पर बैठने वालों की भी भला कोई जाति होती है? यूं तो होने को एक समय वह भी था, जब कहा जाता था कि 'जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान, मोल करो तलवार का पड़ा रहन दो म्यान।' मगर हाल के वर्षों में साधु और साध्वियां ज्ञान से ज्यादा अपनी जाति की पहचान का बखान करते मिलते हैं। जिन्हें ईश्वर और भगवान माना जाता है, उनकी जातियां और उप-जातियां तक ढूंढ ली गयी हैं।

गरज यह कि जाति-श्रेष्ठता की चेतना परवरिश का हिस्सा होती है और अपना प्रभाव छोडती है, उसका निष्प्रभावीकरण — डीटोक्सीफिकेशन — अपने आप नहीं होता, इसे करना होता है।

जस्टिस वी.आर. कृष्ण अय्यर ने सर्वोच्च अदालत का जज रहते हुए ही कहा था कि "न्यायाधीशों की नियुक्ति से पहले उनके पिछले जीवन और कामकाज के रिकॉर्ड, सामाजिक पृष्ठभूमि, वर्गीय पूर्वाग्रह और सांप्रदायिक झुकाव की जांच की जानी चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे तटस्थ और धर्मनिरपेक्ष हैं।" उनका कहना था कि लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और समता का सोच सहज सामाजिक परिवेश और परवरिश का हिस्सा नहीं है।" जस्टिस अय्यर का मानना था कि "जजों को जमीनी हकीकत का ज्ञान होना चाहिए, क्योंकि उनका सामाजिक-वर्गीय दृष्टिकोण फैसलों को प्रभावित करता है।" २९ जनवरी को एक बार फिर साबित हुआ कि उनकी आशंका निराधार नही थी।

सवाल इन दोनों माननीयों भर का नहीं है। विभिन्न मीडिया विश्लेषणों और नागरिक समाज की रिपोर्टों के अनुसार, २०२३ के अंत तक सर्वोच्च न्यायालय के लगभग ३४ न्यायाधीशों में से 14 यानी लगभग 41% ब्राम्हण थे। स्वतंत्रता के बाद से, भारत के लगभग ३०% मुख्य न्यायाधीश ब्राम्हण रहे हैं।

यही स्थिति उच्च न्यायालय और निचली न्यायपालिका की है। वर्ष २०२० की एक रिपोर्ट के अनुसार, उच्च न्यायालय के ३३० न्यायाधीशों में से लगभग १६६ ब्राम्हण समुदाय से थे। यह असंतुलन बदला या सुधरा नहीं है।

फरवरी २०२६ में राज्यसभा को दी गई जानकारी के अनुसार, देश की उच्च न्यायपालिका में २०२१ से अब तक नियुक्त हुए जजों में से लगभग ७३% से ८०% जज 'सामान्य' या 'उच्च जाति' पृष्ठभूमि से हैं।

यही हाल असली राज चलाने वाली नौकरशाही का है। सीपीआई (एम) के राज्यसभा सांसद जॉन ब्रिटास के आईएएस, आईपीएस और आईएफएस के रिक्त पदों और ओबीसी, एससी और एसटी अधिकारियों के प्रतिनिधित्व के बारे में पूछे गए सवाल पर केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने बताया कि जनसंख्या में ओबीसी 55%, एससी २४%, एसटी 10% हैं, किन्तु आईएएस और आईपीएस में इनका प्रतिनिधित्व 10% से भी कम है।

उनके द्वारा दिए गए आंकड़ों के हिसाब से देश भर के आईएएस में ओबीसी २४५ (4.3%), एससी 135 (२.4%), एसटी 67 (1.२%), आईपीएस में ओबीसी २55 (5.5%), एससी 141 (3%), एसटी 71 (1.4%), तथा आईएफएस में ओबीसी २31 (10.6%), एससी 95 (4.3%), एसटी 48 (२.२%) हैं, जबकि आईएएस का ९२%, आईपीएस के 90% और आईएफएस के 8२% अधिकारी सामान्य वर्ग से आते हैं। यूजीसी के नए नियम इस, अश्लीलता की हद तक, बेहूदा अनुपात को बदलने की अत्यंत क्षीण संभावना प्रस्तुत करते हैं, उस पर भी खड़ा किया जा रहा तूमार घुटने के पेट की तरफ मुड़ने के सिवा कुछ नहीं है।

(लेखक 'लोकजतन' के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं।)

पहचान की पड़ताल, प्रेम की परख

लव जिहाद पर गुजरात की पहल

• प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

गुजरात में विवाह व्यवस्था को लेकर सियासी और सामाजिक हलकों में जबरदस्त हलचल मच गई है! 20 फरवरी 2026 को राज्य सरकार ने 'लव जिहाद' के नाम पर कथित ठगी और सांस्कृतिक आक्रमण पर रोक लगाने के उद्देश्य से मैरिज रजिस्ट्रेशन नियमों में बड़े बदलाव की घोषणा कर दी। डिप्टी चीफ मिनिस्टर हर्ष संघवी ने विधानसभा में स्पष्ट कहा कि बेटियों की गरिमा और सनातन परंपरा की सुरक्षा के लिए सख्त कानूनी कवच तैयार किया जाएगा। प्रस्तावित संशोधन फर्जी पहचान छिपाने वालों पर शिकंजा कसने का दावा करता है, वहीं प्रेम विवाह करने वाले जोड़ों के जीवन पर भी इसका सीधा असर पड़ेगा। क्या यह कदम 'लव जिहाद' जैसी प्रवृत्तियों पर निर्णायक प्रहार साबित होगा, या फिर नई कानूनी और सामाजिक जटिलताएँ खड़ी करेगा तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर सवाल उठाएगा? यही बहस आज पूरे देश में तेज़ हो चुकी है।

सिर्फ काग़ज़ी औपचारिकता नहीं, अब कड़ी जवाबदेही—सरकार ने गुजरात रजिस्ट्रेशन ऑफ मैरिजेस एक्ट 2006 के तहत नियमों में संशोधन का प्रस्ताव रखा है। स्पष्ट किया गया कि मौजूदा प्रावधानों के छिद्रों का दुरुपयोग हो रहा था। संशोधन के तहत अब हर मैरिज रजिस्ट्रेशन के लिए दुल्हन-दूल्हे को दो गवाहों के हस्ताक्षर सहित नोटराइज्ड आवेदन देना होगा। आधार कार्ड, जन्म प्रमाण पत्र या स्कूल लीविंग सर्टिफिकेट, निमंत्रण पत्र, पासपोर्ट साइज फोटो, विवाह की फोटो और गवाहों की फोटो अनिवार्य होंगी। साथ ही, जोड़े को लिखित घोषणा देनी होगी कि उन्होंने माता-पिता को सूचना दी है या नहीं, तथा उनके नाम, पता, आधार नंबर, फोन नंबर और निवास प्रमाण पत्र भी जमा करने होंगे।

अब विवाह पंजीकरण केवल औपचारिकता नहीं, नियंत्रित प्रक्रिया बनेगा। नए नियमों के अनुसार, आवेदन मिलते ही असिस्टेंट रजिस्ट्रार 10 कार्य दिवस के भीतर दोनों पक्षों के माता-पिता को व्हाट्सएप, इलेक्ट्रॉनिक या भौतिक माध्यम से सूचना देगा। इसके बाद आवेदन जिला या तालुका रजिस्ट्रार को भेजा जाएगा और सभी शर्तें पूर्ण होने पर ही पंजीकरण स्वीकृत होगा। पूरी कार्यवाही नए ऑनलाइन पोर्टल पर अपलोड की जाएगी, जिससे पारदर्शिता सुनिश्चित होगी। सरकार ने 30 दिनों के भीतर आम जनता से सुझाव और आपत्तियां मांगी हैं; स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की वेबसाइट पर प्राप्त फीडबैक के आधार पर अंतिम नियम अधिसूचित किए जाएंगे। इस परिवर्तन का सीधा और सबसे अधिक प्रभाव एलोपमेंट, यानी भागकर विवाह करने वाले जोड़ों पर पड़ेगा।

सख्त संदेश के साथ सरकार का दावा है कि ये बदलाव 'लव जिहाद' जैसी घटनाओं को जड़ से समाप्त करेंगे। हर्ष संघवी ने कहा, "अगर कोई सलीम अपनी पहचान छिपाकर सुरेश बनकर राज्य की बेटियों को फंसाता है, तो सरकार ऐसी सजा देगी कि भविष्य में किसी बेटी की ओर कोई बुरी नजर डालने की हिम्मत नहीं करेगा।" उन्होंने पंचमहल का उदाहरण देते हुए कहा कि मुस्लिम आबादी न होने के बावजूद सैकड़ों निकाह प्रमाण पत्र जारी हुए; बनासकांठा, नवसारी और मेहसाणा में भी ऐसे मामले बढ़ रहे हैं। संघवी ने इसे "सांस्कृतिक आक्रमण" करार देते हुए कहा कि असामाजिक तत्व पहचान छिपाकर बेटियों को निशाना बना रहे हैं। लगभग 30 सामाजिक संगठनों से चर्चा के बाद यह निर्णय लिया गया है।

सरकार ने बार-बार स्पष्ट किया है कि उसका विरोध प्रेम विवाह से नहीं, बल्कि छल और दबाव से है। हर्ष संघवी ने कहा, "सरकार सच्चे प्रेम का सम्मान करती है, किंतु धोखाधड़ी और जबरन संबंधों पर कठोर कार्रवाई करेगी। यह सरकार हर बेटी की गरिमा और सनातन परंपरा की संरक्षक है।" नए नियम ठगी पर अंकुश लगाएंगे और परिवारों को पूर्व सूचना मिलने से विवादों को पहले ही सुलझाने का मौका मिलेगा। 30 दिन की अनिवार्य प्रतीक्षा अवधि जोड़ों को विवेकपूर्ण निर्णय का अवसर देगी तथा जाली दस्तावेजों की जांच सरल बनाएगी। इससे समाज में पारदर्शिता बढ़ेगी और बेटियों की सुरक्षा मजबूत होगी।

इन प्रस्तावों पर विपक्ष और विधि विशेषज्ञों ने गंभीर आपत्तियाँ उठाई हैं। उनका तर्क है कि माता-पिता को अनिवार्य सूचना देने का प्रावधान अंतरधार्मिक और अंतरजातीय विवाहों पर परोक्ष अंकुश लगा सकता है। सुप्रीम कोर्ट ऑफ़ इण्डिया के कई निर्णय— लक्ष्मीबाई चंदरगी बनाम कर्नाटक राज्य (2021), शफीन जहां बनाम असोकन के. एम. (2018) और लता सिंह बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (2006)—स्पष्ट करते हैं कि वयस्कों को जीवनसाथी चुनने का पूर्ण अधिकार है और परिवार या समाज की सहमति आवश्यक नहीं। संविधान का अनुच्छेद 21 निजी स्वतंत्रता और गरिमा की रक्षा करता है। दिल्ली और इलाहाबाद हाईकोर्ट ने भी स्पेशल मैरिज एक्ट के नोटिस पीरियड को प्राइवेसी का उल्लंघन बताया था। ऐसे में यह प्रावधान संवैधानिक अधिकारों से टकरा सकता है।

इन नए प्रावधानों से गुजरात में विवाह पंजीकरण की प्रक्रिया लंबी और जटिल हो सकती है। जहां पहले त्वरित पंजीकरण संभव था, अब 30 दिन की अनिवार्य प्रतीक्षा करनी होगी। अंतरधार्मिक या भागकर विवाह करने वाले युवा-युवतियों के परिवार की नजर में आने का जोखिम बढ़ेगा। कई सामाजिक संगठनों का मत है कि इससे अनावश्यक हस्तक्षेप बढ़ सकता है और बेटियां दबाव में आ सकती हैं। वहीं समर्थकों का तर्क है कि इससे छलपूर्वक रचे गए प्रेम जाल से बचाव होगा और सामाजिक संरचना सुरक्षित रहेगी। 30 दिन के सार्वजनिक सुझावों के बाद ही अंतिम स्वरूप तय होगा, इसलिए अभी पूरी स्थिति स्पष्ट नहीं है।

कुल मिलाकर यह प्रस्ताव गुजरात की जटिल सामाजिक-राजनीतिक वास्तविकताओं का सशक्त प्रतिबिंब बनकर उभरा है। यदि इसे लागू किया गया, तो उन राज्यों के लिए उदाहरण बन सकता है जहां 'लव जिहाद' को लेकर लंबे समय से आशंकाएं और बहसें चलती रही हैं। बेटियों की सुरक्षा और सांस्कृतिक संरक्षण के नाम पर उठाया गया यह कदम व्यवहार में कितना कारगर सिद्ध होगा, इसका अंतिम आकलन समय ही करेगा। फिलहाल इतना निश्चित है कि गुजरात में विवाह पंजीकरण अब केवल दो व्यक्तियों का निजी निर्णय नहीं रहेगा, बल्कि परिवार, समाज और शासन—तीनों की प्रत्यक्ष निगरानी में होगा। यह बदलाव सामाजिक संतुलन को सुदृढ़ करेगा या नए विवादों और वैचारिक टकरावों को जन्म देगा, इसकी वास्तविक कसौटी अब आने वाला समय ही तय करेगा।

फेज-4 के प्रस्तावित "नबी करीम" मेट्रो स्टेशन का नाम ऐतिहासिक पहचान के अनुरूप "रामनगर" किया जाए: सुरेंद्र कुमार गुप्ता

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। इंद्रप्रस्थ विश्व हिंदू परिषद के प्रांत मंत्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता ने दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक को पत्र लिखकर फेज-4 के अंतर्गत इंद्रप्रस्थ–इंद्रलोक कॉरिडोर पर प्रस्तावित "नबी करीम" मेट्रो स्टेशन का नाम बदलकर "रामनगर" करने का आग्रह किया है। गुप्ता ने अपने पत्र में कहा है कि दिल्ली मेट्रो केवल राजधानी की यातायात व्यवस्था नहीं, बल्कि इसकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान का भी सार्वजनिक प्रतीक है। किसी भी मेट्रो स्टेशन का नामकरण स्थानीय इतिहास, राजस्व रिकॉर्ड और जनस्वीकृति के अनुरूप होना चाहिए।उन्होंने उल्लेख किया है कि संबंधित क्षेत्र दशकों से "रामनगर" के नाम से राजस्व अभिलेखों, नगर निगम दस्तावेजों और स्थानीय पते में दर्ज है। ऐसी स्थिति में स्थापित ऐतिहासिक पहचान की अनदेखी करना जनभावनाओं के प्रतिकूल है तथा इससे यात्रियों के बीच भौगोलिक भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।अपने पत्र में उन्होंने यह भी रेखांकित किया है कि वर्तमान में "सुप्रीम कोर्ट" मेट्रो स्टेशन के नाम परिवर्तन संबंधी प्रकरण में लगभग 45 लाख रुपये के संभावित व्यय का उल्लेख किया गया है। यदि प्रारंभिक स्तर पर ही स्थानीय पहचान और जनभावना का सम्मान किया जाए, तो भविष्य में सार्वजनिक धन की अनावश्यक हानि से बचा जा सकता है।पत्र में निम्न प्रमुख सुझाव दिए गए है।

प्रस्तावित स्टेशन का नाम आधिकारिक रूप से "रामनगर" घोषित किया जाए।नामकरण समिति में स्थानीय प्रतिनिधियों और इतिहासकारों को सम्मिलित किया जाए।भविष्य में किसी भी स्टेशन के नाम निर्धारण से पूर्व सार्वजनिक सुझावों की पारदर्शी प्रक्रिया अपनाई जाए।विहिप का मानना है कि दिल्ली मेट्रो की विकास यात्रा स्थानीय इतिहास और जनभावनाओं के सम्मान के साथ ही आगे बढ़नी चाहिए।

अमृतसर दौरे पर हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, गुरुओं की धरती को किया नमन

पंजाब सरकार पर तीखा हमला : वादे पूरे न करने और भ्रष्टाचार के आरोप

किसानों, युवाओं और महिलाओं के लिए नीतियों की कमी बताई, हरियाणा मॉडल का दिया हवाला

भाजपा ही पंजाब को नंबर-एक राज्य बना सकती है : नायब सिंह सैनी

अमृतसर 21 फरवरी (साहिल बेरी)

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी अमृतसर दौरे पर पहुंचे। अमृतसर पहुंचकर उन्होंने गुरुओं की पावन और ऐतिहासिक धरती को नमन किया और कहा कि इस पवित्र शहर में आना उनके लिए गर्व की बात है।

भगतां वाला दाना मंडी में साहिब सिंह साबी मुच्छल के नेतृत्व में भगतां वाला दाना मंडी में आयोजित (पंजाब बचाव रैली) को संबोधित करते हुए हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने पंजाब की मौजूदा सरकार पर कड़े शब्दों में हमला बोला।

नायब सिंह सैनी ने कहा कि पंजाब में सत्ता में रही आम आदमी पार्टी और कांग्रेस पार्टी ने पंजाब के लोगों से किए गए एक भी वादे को पूरा नहीं किया। उन्होंने आरोप लगाया कि दोनों पार्टियों ने बड़े-बड़े सपने दिखाकर केवल वोट बटोरने का काम किया और पंजाब को विकास की दौड़ में पीछे धकेल दिया। उनका कहना था कि न तो युवाओं के लिए रोजगार की ठोस योजनाएं बनाई गईं और न ही किसानों, महिलाओं और गरीब वर्ग के लिए कोई प्रभावी नीति लागू की गई।

मुख्यमंत्री ने भ्रष्टाचार का मुद्दा उठाते हुए कहा कि आज पंजाब में आम आदमी के लिए सरकारी दफ्तरों में बिना रिश्वत के काम करवाना मुश्किल हो गया है। उन्होंने दावा किया कि मौजूदा सरकार का भ्रष्टाचार पिछली सरकारों से भी आगे निकल चुका है। इसके साथ ही उन्होंने नशे की बढ़ती प्रवृत्ति और महिलाओं की सुरक्षा को लेकर भी सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा कि कांग्रेस तथा आप सरकार झूठे वादे कर लोगों को गुमराह कर रही है, यहां तक कि पंजाब में महिलाओं को 1100-1100 रूपए देने का वायदा पूरा नहीं किया जबकि हरियाणा में महिलाओं को 2100 प्रति महीना दिया जा रहा है।

किसानों के मुद्दे पर बात करते हुए नायब सिंह सैनी ने हरियाणा मॉडल का हवाला दिया। उन्होंने कहा कि हरियाणा में किसानों की पूरी फसल न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीदी जाती है और यदि सब्जियों या अन्य फसलों के बाजार भाव कम मिलते हैं, तो सरकार उसकी भरपाई करती है। उन्होंने कहा कि पंजाब में किसानों को सड़कों पर फसल फेंकनी पड़ती है, जो बेहद दुखद है।

अंत में नायब सिंह सैनी ने दावा किया कि भारतीय जनता पार्टी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में ही पंजाब को नंबर-एक राज्य बनाया जा सकता है। उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर भी निशाना साधते हुए कहा कि कांग्रेस ने विदेशों में देश की छवि को नुकसान पहुंचाया है और आने वाले समय में देश की जनता कांग्रेस को सबक सिखाएगी। इस मौके साहिब सिंह साबी मुच्छल ने हरियाणा मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को सम्मानित भी किया।

इस मौके पूर्व सांसद श्वेत मलिक, जगमोहन सिंह राजू, पूर्व जिलाध्यक्ष आनंद शर्मा, रणजोध सिंह, अवतार सिंह पम्मा, राजू बग्गा, जत्थेदार पंजाब सिंह, सुरिंदर सिंह गोरु, अर्शदीप सिंह, करनदीप सिंह, डॉ मनजीत सिंह रिंकू, बाऊ विरदी, परमिंदर सिंह भोमा, नरेंद्र सिंह भोलू, कुलदीप कुमार लक्की आदि मौजूद थे

होली के असली रंग, विजया भारती के संग!

- लोकगायिका विजया भारती का ताजातरीन होली गीत रिलीज हो गया है।
- भोजपुरी-मैथिली लोक संगीत की सुप्रसिद्ध आवाज विजया भारती के नये धमाकेदार पारंपरिक होली गीत का टाइटल है - अर अर रर रंग डाले छ्यलवाऱ।

लोक संगीत की 'फगुआ रानी' विजया भारती का नया धमाका, 'अर अर रर रंग डाले छ्यलवा' हुआ रिलीज

परिवहन विशेष न्यूज

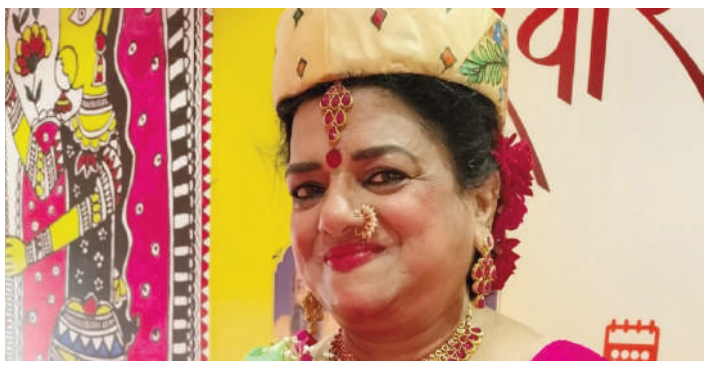

नई दिल्ली: भारतीय लोक संस्कृति की वैश्विक पहचान और आकाशवाणी व दूरदर्शन की 'टॉप-ग्रेड' कलाकार, विद्यावाचस्पति (Ph.D.) विजया भारती ने इस होली अपने प्रशंसकों के लिए एक शानदार सौगात पेश की है। भोजपुरी और मैथिली लोक संगीत की सुप्रसिद्ध आवाज में उनका नया पारंपरिक होली गीत ₹अर अर रर रंग डाले छ्यलवाऱ आधिकारिक तौर पर रिलीज कर दिया गया है।

सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण: पिछले चार दशकों से लोक संगीत की सेवा कर रहीं विजया भारती ने इस गीत के माध्यम से पूर्वांचल की पारंपरिक होली और 'फगुआ' की मिठास को जीवंत कर दिया है। 22 से अधिक देशों में भारतीय संस्कृति का परचम लहराने वाली विजया भारती को 'फगुआ की रानी' कहा जाता है। उनके इस नए गीत में ग्रामीण परिवेश की मस्ती और होली के पारंपरिक रंगों का अद्भुत संगम देखने को मिल रहा है। पर उनके प्रसिद्ध 'जोगीरा सारा रा रा' के स्वर दर्शकों को थिरकने पर मजबूर कर देते हैं।

बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी: विजया भारती केवल एक गायिका ही नहीं, बल्कि एक प्रखर लेखिका और एंकर भी हैं। उन्होंने 18 भाषाओं में गायन किया है और 11 पुस्तकें प्रकाशित की हैं। महुआ TV के चर्चित शो 'बिहाने बिहाने' और ETV के 'तेरे मेरे गीत' की एंकर के रूप में उन्होंने घर-घर में अपनी पहचान बनाई है।

गाने की मुख्य विशेषताएं:

पारंपरिक धुन: आधुनिक शोर-शराबे से दूर, यह गीत ठेठ देसी अंदाज में तैयार किया गया है।

मस्ती भरे बोल: गीत के बोल जैसे ₹5 लाख के चुनरीऱ और ₹लाल गुलाल उड़ाए छलवाऱ होली के उत्साह को दोगुना कर देते हैं।

विरासत का अनुभव: जन्म से लेकर मृत्यु तक के हर अवसर के गीतों की विशेषज्ञ होने के नाते, विजया जी ने इस 'फगुआ' में लोक संगीत की आत्मा को पिरोया है।

महत्वपूर्ण लिंक्स और संदर्भ

विजया भारती जी के संगीत सफर, साक्षात्कारों और ताजा अपडेट्स के लिए नीचे दिए गए लिंक्स को देखें:

संगीत और वीडियो लिंक्स:

नया होली गीत (2026): अर अर रर रंग डाले छ्यलवा

- यूट्यूब चैनल - https://youtu.be/p7LsCYDcevI?si=eiGyb10v8sRk2Dic
- फेसबुक पेज - https://www.facebook.com/share/1CQu8itnTk/
- सब्सक्राइब करें: @FolkStarVijayaBharti

सुपरहिट होली संग्रह (2023): यहाँ देखें

YouTube चैनल: @FolkStarVijayaBharti

Facebook: विजया भारती ऑफिशियल पेज

समाचार और लेख:

साक्षात्कार-Counterview Article पर A Voice for Voiceless - Folk Singer Vijaya Bharti - इसमें विजया जी के चार दशकों के संघर्ष और लोक संगीत के प्रति उनके समर्पण का विस्तृत विवरण है।

विजया भारती संक्षिप्त परिचय:

भारतीय लोक संस्कृति का जाना माना चेहरा। और चार दशकों से लोक संगीत की सेवा।

- उपलब्धि: 18 भाषाओं में गायन
- जन्म से लेकर मृत्यु तक के अवसरों पर गाये जाने वाले पारंपरिक गीतों की विशेषज्ञ

आकाशवाणी व दूरदर्शन: टॉप-ग्रेड कलाकार।

अंतर्राष्ट्रीय पहचान: 22+ देशों (फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन, रूस) में सफल प्रदर्शन।

शिक्षा: हिंदी साहित्य में विद्यावाचस्पति (Ph.D.) साहित्य: 11 पुस्तकों की लेखिका।

TV एंकर: महुआ TV (बिहाने बिहाने) और ETV (तेरे मेरे गीत) की प्रसिद्ध प्रस्तोता।

और 'फगुआ की रानी'।

भोजपुरी और मैथिली लोक संगीत की सुप्रसिद्ध आवाज विजया भारती (Vidyavachaspati) की शानदार प्रस्तुति - ₹अर अर रर रंग डाले छ्यलवाऱ देश और दुनिया के अनेक मंचों और छैनलों पर धूम मचा चुका है। पूर्वांचल की होली और पारंपरिक फगुआ का आनंद लीजिए उसी स्वर के साथ, जिसने पिछले तीन दशकों से हर घर में होली के रंग भरे हैं।

कानपुर देहात में तालाब में गिरी तेज रफ्तार कार

एक ही परिवार के बच्चे समेत चार की मौत

– त्रियोदशी संस्कार वापस लौट रहे थे लोग, चार अस्पलात में

सुनील बाजपेई

कानपुर देहात। यहां तेज रफ्तार से वाहन चलाने की आदत लोगों को असमय ही मौत का शिकार बनाने में लगातार सफल हो रही है। ऐसी ही एक घटना में तेज रफ्तार कार के तालाब में गिरने से बच्चे समेत एक ही परिवार के चार लोगों की मौत हो गई। जबकि चार अन्य घायलों को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

यह घटना शिवली थाना क्षेत्र के बैरी कस्बे के पास हुई, जहां तेज रफ्तार कार गहरे तालाब में जा गिरी। जिसके फलस्वरूप एक ही परिवार के चार लोगों की मौत हो गई। इस घटना में मौत के शिकार हुए लोग उस समय त्रयोदशी संस्कार में भाग लेने के बाद औरैया जिले से वापस कानपुर देहात के रसूलाबाद लौट रहे थे। इस घटना मेंग्रामीणों द्वारा बचाए गए चार लोगों को अस्पताल में भी भर्ती कराया गया हैजहां समाचार लिखे जाने तक उनकी हालत गंभीर बनी हुई है।

घटना के बारे में प्राप्त विवरण के अनुसार

औरैया के सहायल निवासी सोनू पांडेय की मां लीलावती का आठ फरवरी को निधन हो गया था। शुक्रवार को त्रियोदशी संस्कार का कार्यक्रम था। सास की त्रियोदशी में शामिल होने के लिए राजकिशोर परिवार के साथ सुबह 10 बजे के करीब पहुंचे थे। दिन भर रुकने के बाद शाम साढ़े पांच बजे के करीब सभी कार से वापस निकले। रात आठ बजे के करीब शिवली के बैरी सवाई के पास हादसा हो गया।

जिसमें कानपुर के आवास विकास कल्याणपुर-3 निवासी राजकिशोर अग्निहोत्री, उनकी पत्नी स्नेहलता, बेटी राखी उर्फ हिमांशू अग्निहोत्री, नाती शिव (2) की डूबने से मौत हो गई।

कार गिरने की जानकारी पर पहुंचे ग्रामीणों ने बहादुरी दिखाते हुए कार में मौजूद राजकिशोर की नातिन वानी, रिश्तेदार कृतिका, सुधा, उनके बेटे कान्हा (4), सुधांशु (24) की सांसें उखड़ने से पहले ही तालाब से निकाल कर सीएचसी शिवली में भर्ती करवाया। आंखों के सामने अपनों की सांसें थम जाने से सभी घायल बदहवास हो गए। यहां तक कि वह किसी को भी घटना को लेकर स्पष्ट जानकारी नहीं दे सके। ग्रामीणों ने बताया कि वह लोग कई बार जिम्मेदारों से तालाब के किनारे बाउंड्री बनवाने की मांग कर चुके हैं। जिम्मेदारों की अनदेखी से हुए हादसे में चार लोगों की जान चली गई। यदि सुरक्षा जाली होती तो कार तालाब में न गिरती और न ही इतना बड़ा हादसा होता। घटना सेपरिवार में को राम बचा हुआ है। वहीं घटना के बाद पुलिस फरार चालक की तलाश कर रही है।

स्वास्थ्य मंत्री डॉ. बलबीर सिंह ने मुख्यमंत्री स्वास्थ्य योजना के तहत बनाए जा रहे कार्डों की समीक्षा की

जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को कार्ड बनाने का कार्य और तेज करने के निर्देश

मुख्यमंत्री स्वास्थ्य योजना से हर परिवार को प्रतिवर्ष 10 लाख रुपये तक का कैशलेस इलाज – स्वास्थ्य मंत्री

अमृतसर, 21 फरवरी (साहिल बेरी)

डॉ. बलबीर सिंह, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, पंजाब ने अमृतसर के जिला प्रशासनिक परिसर में जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक कर जिले में मुख्यमंत्री स्वास्थ्य योजना के तहत बनाए जा रहे कार्डों की समीक्षा की।

इस अवसर पर उनके साथ हरभजन सिंह ईटीओ (लोक निर्माण मंत्री), कुलदीप सिंह ढालीवाल (विधायक अजनाला), डॉ. अजय गुप्ता (विधायक अमृतसर सेंट्रल), जीवनजोत कौर (विधायक अमृतसर ईस्ट), डॉ. जसबीर सिंह संधू (विधायक अमृतसर वेस्ट), जसविंदर सिंह रामदास (विधायक अटारी), गुरशरण सिंह छीना (चेयरमैन, पंजाब हेल्थ सिस्टम्स कॉरपोरेशन), आम आदमी पार्टी के जिला अध्यक्ष प्रभबीर सिंह बराड़, अध्यक्ष गुरपर्ताप सिंह संधू, उपायुक्त दलविंदरजीत सिंह, अतिरिक्त उपायुक्त (जनरल) रोहित गुप्ता, अतिरिक्त उपायुक्त (शहरी विकास) अमनदीप कौर, एसडीएम बाबा बकाला अमनदीप सिंह, एसडीएम अजनाला रविंदर सिंह अरोड़ा, सिविल सर्जन डॉ. सतिंदर सिंह बाजाज सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

बैठक के दौरान स्वास्थ्य मंत्री डॉ. बलबीर सिंह ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि अधिक से अधिक कार्ड बनाए जाएं ताकि योजना का लाभ हर पात्र व्यक्ति तक पहुंच सके। उन्होंने इस कार्य के लिए अधिक संख्या में कैंप लगाने और जनप्रतिनिधियों को स्वयं कैंपों का दौरा कर प्रगति की समीक्षा करने के लिए कहा।

मीडिया से बातचीत करते हुए स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि राज्य के निवासी मुख्यमंत्री स्वास्थ्य योजना से बेहद खुश हैं और बड़ी संख्या में लोग कार्ड बनवा रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य के प्रत्येक परिवार को मुख्यमंत्री स्वास्थ्य योजना का कार्ड जारी किया जाएगा। अब तक राज्य में 9 लाख कार्ड बनाए जा चुके हैं और सोमवार तक यह संख्या 10 लाख को पार कर जाएगी।

डॉ. बलबीर सिंह ने बताया कि मुख्यमंत्री स्वास्थ्य योजना के तहत प्रत्येक परिवार को प्रतिवर्ष 10 लाख रुपये तक का कैशलेस स्वास्थ्य बीमा प्रदान किया जा रहा है। इस योजना का उद्देश्य चिकित्सा आपात स्थितियों के दौरान परिवारों पर पड़ने वाले आर्थिक बोझ को पूरी तरह समाप्त करना है। उन्होंने सिविल सर्जनों को निर्देश दिए कि सूचीबद्ध अस्पतालों में पंजीकरण और सेवाओं की सुचारू व्यवस्था सुनिश्चित की जाए ताकि कोई भी पात्र लाभार्थी इलाज से वंचित न रहे।

उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत सभी सरकारी अस्पतालों में निःशुल्क इलाज उपलब्ध होगा और 600 निजी अस्पतालों को भी सूचीबद्ध (एम्पैनल) किया गया है। अधिकतम पहुंच सुनिश्चित करने और आर्थिक बोझ कम करने के लिए सीएससी, आशा कार्यकर्ताओं और पीआरआई प्रतिनिधियों के साथ समन्वय स्थापित करने के भी निर्देश दिए गए हैं।

विपक्षी दलों द्वारा फैलाई जा रही अफवाहों के प्रति लोगों को सचेत करते हुए स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि विपक्ष जानबूझकर भ्रम की स्थिति पैदा कर रहा है। उन्होंने कहा कि भगवंत मान सरकार की यह गारंटी है कि हर परिवार को मुख्यमंत्री स्वास्थ्य योजना के तहत प्रतिवर्ष 10 लाख रुपये का मेडिकल कवर मिलेगा। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे किसी भी तरह की अफवाहों पर ध्यान न दें।

प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान डॉ. बलबीर सिंह ने बताया कि हाल ही में अमृतसर पुलिस ने एक फर्जी स्वास्थ्य मंत्री को हिरासत में लिया है। यह व्यक्ति एक डॉक्टर को फर्जी कॉल कर रहा था, जिस पर अमृतसर पुलिस ने कार्रवाई करते हुए उसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। उन्होंने ऐसे फर्जी और धोखाधड़ी करने वालों को चेतावनी दी कि इस प्रकार की गतिविधियों से बाज आएं, अन्यथा उनके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

मांगों को लेकर 25 को जिला मुख्यालयों पर धरना प्रदर्शन करेगा एनएफआईटीयू और एच एम केपी : राकेश मणि

सुनील बाजपेई

कानपुर। अपनी विभिन्न मांगों को लेकर नेशनल फ्रन्ट ऑफ इण्डियन ट्रेड यूनियन्स और हिन्द मजदूर किसान पंचायत अब आर पार की लड़ाई लड़ने जा रहा है। वह इसके लिए 25 फरवरी से देश के हर जिला मुख्यालय और श्रम कार्यालयों पर भी धरना और प्रदर्शन करेगा। मांगे अभी तक नहीं पूरी किए जाने के फल स्वरूप विरोध दिवस के रूप में इस आंदोलन की यह शुरुआत भारतीय मजदूर संघ के प्रमुख घटक 18 केंद्रीय महा संगठन व स्वतंत्र संगठन वाले एनएफआईटीयू के आवाहन पर की जा रही है। यह जानकारी देते हुए एनएफआईटीयू और हिन्द मजदूर किसान पंचायत के राष्ट्रीय सचिव तथा यूपी के महासचिव राकेशमणि पाण्डेय ने बताया कि 25 फरवरी को पूरे देश में प्रदर्शन रैली, काले फीते युक्त रैली करते हुए जिलाधिकारी और श्रम कार्यालयों में उनके माध्यम से प्रधानमंत्री, केन्द्रीय मंत्री व राज्य के मुख्यमंत्री को ज्ञापन सौपने के साथ-साथ तत्काल निराकरण के लिए मांग की जायेगी। एनएफआईटीयू और हिन्द मजदूर किसान पंचायत के राष्ट्रीय सचिव तथा यूपी के महासचिव राकेशमणि पाण्डेय ने बताया कि सभी को बिना किसी छूट के सभी कर्मचारियों के लिए बने श्रम कानूनों को कठोरता व एकरूपता से लागू किए जाने, इण्डस्ट्रीयल रिलेशन कोड और आक्यूपेशन सेफ्टी हेल्थ एण्ड वर्किंट कण्डीशन कोर्ट में श्रमिकों की चिन्ताओं को दूर किये जाने, इण्डिया लेबर कन्फ्रेन्स तुरन्त बुला कर्मचारियों के हितों की रक्षा के लिए त्रिपक्षीय वार्ता पुर्नस्थापित और उनकी संस्तुतियों को कठोरता व समुचित रूप से लागू किये जाने, सभी कर्मचारियों को न्यूनतम वेतन रु 05 वर्ष में निश्चित वेतन वृद्धि सुनिश्चित करने के साथ ही छः माह में मिलने वाले महंगाई भत्ते को शत प्रतिशत बढ़ाये जाने, भविष्यनिधि में सभी सदस्यों को न्यूनतम पेंशन रु0 7500/- मासिक निर्धारित करने के साथ ही10 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि अनिवार्य रूप से सम्मिलित किये जाने, सार्वजनिक क्षेत्र, संयुक्त क्षेत्र व निजी क्षेत्रों के कर्मचारियों को ग्रवशेष भुगतान क्षतिपूर्ति सहित दिलाने, सभी क्षेत्रों में बैंकिंग सहित 05 दिन का कार्य दिवस घोषित किये जाने, बोनस के लिए वेतन सीमा समाप्त करने के साथ ही सम्पूर्ण प्राप्त वेतन का 01 माह का न्यूनतम पूरा पूरा वेतन बोनस के रूप में दिये जाने, न्यूनतम बोनस रु0 25000/- किए जाने,भारतीय संविधान और सिद्धांतों के मुताबिक के मुताबिक स्कीम वर्कस और कान्ट्रेक्ट वर्कर को रेग्युलर किये जाने, सभी श्रम व्यायालयों में स्थायी पीठासीन अधिकारियों, सहायकों और कर्मचारियों के रिक्त स्थानों की पूर्ति करते हुए समयबद्ध सीमा के अन्तर्गत निर्णय कराये जाने, सभी श्राम भर्तियों पर रोक हटाकर नौकरी की सुरक्षा के साथ-साथ रोजगार की गारण्टी देने, ठॉवर कर्मचारियों और इसी तरह से काम करने वाले विशेष कर्मचारियों के लिए सुरक्षा वेतनमान पर कठोर नियमावली बनाने, ठेकेदारी व सब ठेकेदारी समाप्त करने, पूरे देश में एक समान वेतन व नियमावली लागू करने, भारत व राज्य सरकार की समस्त कमेटियों में श्रमिकों को प्रतिनिधित्व देने, पूरे देश में नेशनल वेज पालिसी बनाने, सभी संगठित व असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को एक समान कार्यवेतन सुविधा, अवकाश, ओवरटाइम और अन्य श्रम कानूनों का लाभ एक समान निर्धारण और लागू आदि किए जाने को लेकर

सरायकेला में राजमहल के साथ गोदाम धारी कालाबाजारी चुनाव लडने से वोटर नाराज

मूलवासी बनाम अनाज, जमीन के काला-व्यापार। जहां राजनीतिक पार्टीयां भी समर्थन देकर अब चर्चे में

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, क्या वास्तव में सरायकेला नगर पंचायत का चुनाव शहर के अंदर कुछ चर्चित गोदाम धारी और राजा अपनी वर्चस्व की खातिर लड़ रहे हैं ?जहां राज महल का वजूद उनके विरासत की जनता है वहीं व्यापारी अपने गोदामों में कालाबाजारी माल रख कारोबार पर सुरक्षा हेतु राजनीति को ढाल बनाए हुए हैं ।

ऊपर से उम्मीदवारों को जिन राजनीतिक पार्टीयों का समर्थन है उसकी बात की जाय तो सभी बड़ी राजनीतिक पार्टियां आज याहा हमाम मे नंगी नज़र आ रही है , वे जो इन व्यापारियों को सुरक्षा देने से प्रत्यक्ष- अप्रत्यक्ष जूड़े हुए है । अगर इसमें भूखे गरीबों के पेट हेतु आवंटित अनाज की कालाबाजारी की बात की जाय तो अप्रत्क्ष रूप से उससे जूड़ा भ्रष्ट तंत्र का का कारनामा खुलकर सामने आता है, जैसा कि आज राजा सरायकेला के चुनावी मंच से कांग्रेसी नेता राज बागची ने इसपर से पर्दा उठाते हुए जनता का ध्यानाकर्षण कर जनता का मन मोह लिया है।

राजा सरायकेला प्रताप आदित्य सिंहदेव का उद्भूत जन प्रेम पर लोग जहां उनको सम्मान में जीवन्त विष्णू कहकर पूजने लगे हैं वहीं कथित काला बाजारी से अपनी कुछ गोदामों को बचाने हेतु जारी जिद् जेहाद काफी रोचक दिख रहा है सरायकेला में । मूलवासी राजा हो या अन्य अपनी अस्तित्व रक्षा हेतु याहां लड़ रहे हैं। उनकी भाषा, संस्कृति , आर्थिक , सामाजिक स्थिति उन शोषणकारियों के विरूद्ध यह चुनावी लड़ाई लडी जा रही है । अगर सरायकेला के लोग आजादी के बाद गरीब बन गये है या बनाये जा रहे हैं तो उन्हें गरीब बनाने वाली सरकार व प्रशासन पुरी तरह जिम्मेदार है जिनकी आज कलाई को राज बागची ने खोल दी है । आजाद मुल्क में सरायकेला मूल वासी ओड़िया लोगों के रक्षा, उत्थान केंद्र सरकार ने तत्कालीन बिहार सरकार के जिम्मे दिया है पर सबकुछ रहते हुए बिहार सरकार एवं झारखंड सरकार द्वारा कुछ न करना बड़ा ही षड्यंत्रकारी कदम बताया जाता है । इसी क्रम में आज अगर उनकी जमीन को औने-पौने दामों में व्यापारी ,उद्योगपति तरह तरह के हथकंडे लेकर छुड़ा रहे है और उन्हें गरीब बनाते हैं तो निश्चित रूप से यह घोर दंडनीय अपराध भी है ।ऊपर से जमीन जाने के बाद गरीब बने लोगों का अनाज कालाबाजारी अनाज गोदामों में पहूंच रही है यह बड़ा ही घातक भ्रष्टाचार है

जिसके पीछे मूल कारण ओडिया एवं अन्य जन समुदाय का राजनीति में प्रतिनिधित्व नहीं होना, उन्हे षड्यंत्र पूर्वक समाप्त किया जाना ,भ्रष्टाचार से जूडे शासन तंत्र को और अधिक कारगर कर देता है ।

ऊपर से व्यापारी वर्ग उनके अनाज को निवाला बना लें जैसा कि कांग्रेसी नेता राज बागची ने कहा यह सोचने वाली बात है ।अब सवाल आता है

झारखंड के बड़े राजनीतिक दलों ने उनको अपना समर्थित प्रत्याशी बनाकर मैदान उतारा है वे ओड़िया के कितने बडे हिमायती हैं यह उनकी छवि को प्रदर्शित करता है ।

राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव पहुंचे बार , अधिवक्ताओं से मांगे वोट

कभी सरायकेला स्टेट के पास अपना कानून, अपना न्यायपालिका हुआ करता था

कार्तिक कुमार परिच्छा स्टेट हेड - झारखंड

रांची, आजादी के पहले जिस राज परिवार के पास अपना न्याया पालिका हुआ करता था ,जिनकी अपनी निजी कानून व्यवस्था थी , उसके वर्तमान राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव आज सरायकेला कोर्ट के बार में पहुंचकर अधिवक्ताओं से अपने पक्ष में वोट मांगा ।आप अपने स्टेट सरायकेला नगर पंचायत के अध्यक्ष पद हेतु वोट के लिए पहुंचे थे । भारतीय अधिराज्य मे अपना राज्य का विलय के साथ सरायकेला प्रिंसली स्टेट का कानून व्यवस्था का भी विलय हुआ था ।जो कालांतर में आई पी सी , सी आर पी सी ने स्वतंत्र भारत में अपना लिया ।

जब यहां राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव पहुंचे तथा उन्होंने अधिवक्ताओं से नगर विकास, पारदर्शिता और जनहित के मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि यदि उन्हें जनादेश मिलता है तो अधिवक्ताओं की सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए वे सदैव तत्पर रहेंगे। साथ ही न्यायिक कार्यों से जुड़े आधारभूत सुविधाओं के विकास का आश्वासन भी दिया।

इस अवसर पर बार एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रभात कुमार, महामंत्री देवाशीष ज्योतिषी, केपी दुबे, पार्थ सारथी दास, सरोज महाराणा सहित अन्य अधिवक्ता उपस्थित रहे। बैठक में नगर निकाय चुनाव को लेकर विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया। सनद रहे कि इसी बार से सरायकेला के प्रथम विधायक मिहिर कवि का संबंध रहा । जबकि उनके दादा टिकायत नृपेंद्र नारायण सिंहदेव भी एल एल बी रहे पटने से ।

प्रचार के अंतिम दिन उम्मीदवारों द्वारा विभिन्न संगठनों और मतदाताओं से संपर्क साधा ।

विधायक डॉ गुप्ता ने एक परिवार का मुख्यमंत्री हेल्थ स्कीम कार्ड बनाकर पारिवारिक सदस्य का अस्पताल में मुफ्त इलाज शुरू करवाया

अमृतसर, 20 फरवरी (साहिल बेरी)

: केंद्रीय विधानसभा क्षेत्र से विधायक डॉ अजय गुप्ता ने एक परिवार का मुख्यमंत्री हेल्थ स्कीम कार्ड बनवाकर परिवार के एक सदस्य का इलाज मुफ्त शुरू करवाया। विधायक डॉ गुप्ता ने कहा कि मुख्यमंत्री हेल्थ स्कीम कार्ड से लोगों के इलाज शुरू हो चुके हैं। उन्होंने बताया कि केंद्रीय विधानसभा क्षेत्र में रहने वाले किशन लाल के परिवार का हेल्थ स्कीम कार्ड बनवाया गया। उन्होंने कहा कि इस कार्ड के माध्यम से किसी दुर्घटना में घायल हुए किशन लाल का इलाज अस्पताल में निशुल्क शुरू हो गया है।

विधायक डॉ अजय गुप्ता ने कहा कि पंजाब की आम आदमी पार्टी की सरकार लोगों को हर तरह की सहूलते प्रदान कर रही है। उन्होंने कहा कि विरोधियों के पास पंजाब की आम आदमी पार्टी की सरकार के विरुद्ध कोई भी मुद्दा नहीं है। विरोधी पंजाब के लोगों को गुमराह कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जिसकी यह मिसाल है कि मुख्यमंत्री हेल्थ स्कीम कार्ड बनवाकर अस्पताल में मुफ्त इलाज चल रहा है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री हेल्थ स्कीम कार्ड को लेकर विरोधी पंजाब के लोगों को गुमराह कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि विरोधी पहले भी पंजाब के लोगों को गुमराह करते आए हैं। अब वह लोगों को गुमराह करने में कामयाब नहीं होंगे। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी की लोगों के प्रति नियत बिल्कुल साफ है।

भुवनेश्वर में 'भिएफएस ग्लोबल वीज़ा एप्लीकेशन सेंटर' खुलेगा: धर्मेंद्र प्रधान

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : VFS ग्लोबल ग्रुप के फाउंडर और CEO जुबिन करकारिया ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को लिखे एक लेटर में बताया है कि 'ओडिशा डे' यानी 1 अप्रैल 2026 के मौके पर भुवनेश्वर में 'VFS ग्लोबल वीज़ा एप्लीकेशन सेंटर' शुरू होने वाला है ।हायर एजुकेशन और बिज़नेस के लिए विदेश जाने वाले ओडिशा के युवाओं की सुविधा के लिए, श्री प्रधान ने पिछले साल 2 सितंबर, 2025 को केंद्रीय विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर को एक लेटर

लिखकर उनसे एक लोकल सेंटर खोलने की रिक्वेस्ट की थी। इसके साथ ही, उन्होंने VFS के ग्लोबल CEO जुबिन करकारिया से मुलाकात और चर्चा की थी।

हालांकि, VFS के ग्लोबल CEO ने इस प्रपोज़ल को मान लिया है और 1 अप्रैल, 2026 से भुवनेश्वर में वीज़ा एप्लीकेशन सेंटर खोलने के बारे में केंद्रीय मंत्री श्री प्रधान को लेटर लिखा है। उन्होंने बताया कि पहले फेज़ में, इस सेंटर से UK और कुछ चुने हुए देशों के लिए वीज़ा एप्लीकेशन लिए जाएंगे। बाद में, डिमांड के हिसाब से दूसरे देशों को भी शामिल किया जाएगा। इस सेंटर के ज़रिए लोकल युवाओं को ट्रेनिंग देकर नौकरी दी जाएगी। वीज़ा सेंटर के साथ 'वीज़ा कंसीयज सर्विस' भी मिलेगी, जिससे फॉर्म भरने, इंश्योरेंस और दूसरे प्रोसेस में आसानी होगी।

यूथ कांग्रेस वर्कर्स और पुलिस के बीच झड़प

EO कॉन्फ्रेंस में यूथ कांग्रेस का विरोध देश के बेरोज़गार युवाओं का गुस्सा दिखाता है : यूथ कांग्रेस दिल्ली पुलिस यूथ कांग्रेस नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में मास्टर कैंटीन चौक पर मोदी और शाह के पुतले जलाए गए

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: यूथ कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष श्री रंजीत पात्रा ने कहा कि दिल्ली के भारत मंडपम में हुई EO कॉन्फ्रेंस में यूथ कांग्रेस वर्कर्स का शांतिपूर्ण विरोध देश के करोड़ों बेरोज़गार युवाओं के गुस्से को दिखाता है। आज शाम, यूथ कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष श्री रंजीत पात्रा के नेतृत्व में कांग्रेस भवन से एक रैली निकाली गई और मास्टर कैंटीन चौक पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह के पुतले जलाए गए। इस विरोध प्रदर्शन के दौरान, श्री पात्रा ने कहा कि EO कॉन्फ्रेंस के दौरान यूथ कांग्रेस वर्कर्स का शांतिपूर्ण विरोध पूरी तरह से डेमोक्रेटिक था। लेकिन जिस तरह से दिल्ली पुलिस ने BJP सरकार द्वारा गुंडागर्दी भरे तरीके से यूथ कांग्रेस वर्कर्स को गिरफ्तार किया, वह पूरी तरह से निंदनीय है। एक डेमोक्रेटिक देश में, सभी को शांतिपूर्ण तरीके से विरोध करने का अधिकार है। यूथ कांग्रेस केंद्र की BJP सरकार के खिलाफ भारत के युवाओं के अधिकारों के लिए लड़ती रही है। देश के किसानों के हक छीने जा रहे हैं, वहीं मोदी सरकार भारत के बिजनेस सेक्टर में भी भारत विरोधी बिल को बढ़ावा दे रही है। युवाओं को रोजगार देने के बदले BJP सरकार उन्हें नफरत की राजनीति में शामिल कर रही है, जिससे देश के भाईचारे को खतरा पैदा हो रहा है। प्रधानमंत्री मोदी झूठ बोलकर देशवासियों को धोखा दे रहे हैं। एपस्टीन फाइल में प्रधानमंत्री मोदी का नाम आने के बाद संसद में इस पर चर्चा होना देश के लिए शर्मनाक घटना है। पूरे देशवासी जान गए हैं कि यह प्रधानमंत्री धोखेबाज और पूंजीपतियों का प्रधानमंत्री है। देशवासी अब कभी चुप नहीं बैठेंगे। यूथ कांग्रेस का शांतिपूर्ण विरोध देश विरोधी नहीं बल्कि लोकतंत्र के प्रति उसकी प्रतिबद्धता का सबूत है। यूथ कांग्रेस देश के युवाओं और किसानों का कभी नुकसान नहीं होने देगी। इसलिए यूथ कांग्रेस और कांग्रेस पार्टी देशवासियों के जायज हक के लिए BJP सरकार के खिलाफ लड़ती रही है, लड़ रही है और तब तक लड़ती रहेगी जब तक देशवासियों को उनका जायज हक नहीं मिल जाता। श्री पात्रा ने कहा कि कांग्रेस पार्टी गांधी के सिद्धांतों और आदर्शों से चलती है। इसी सिलसिले में, यूथ कांग्रेस ने मास्टर कैंटीन स्क्वायर पर प्रधानमंत्री मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के पुतले जलाकर विरोध प्रदर्शन किया, उसके बाद सैकड़ों यूथ कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भारतीय जनता पार्टी के राज्य कार्यालय को घेरने की कोशिश की और पुलिस के साथ झड़प हुई और पुलिस ने यूथ कांग्रेस कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया। आज के विरोध कार्यक्रम में राज्य यूथ कांग्रेस के महासचिव सुदीप सामल, जावेद अख्तर, भुवनेश्वर जिला यूथ कांग्रेस अध्यक्ष मोहम्मद गुलफाम, बलराम नंदा, सूरज राउत, विश्वजीत स्वैन, आशीष कुमार महंत, स्पंदन स्वैन, सरोज बारिक और प्रशांत राउत समेत सैकड़ों यूथ कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया।

2,000 से अधिक सरकारी स्कूलों का निरीक्षण करने वाले पंजाब के पहले शिक्षा मंत्री बने हरजोत सिंह बैंस

- भगवंत मान सरकार पठानकोट से लेकर फाजिल्का तक सरकारी स्कूलों की नुहार बदलने के मिशन पर : हरजोत सिंह बैंस
- स्कूलों में लापरवाही के प्रति कोई नरमी ना बरतने की नीति को दोहराया; बच्चों को सही तरीके से न पढ़ाने वाले शिक्षकों के खिलाफ होगी सख्त कार्रवाई : हरजोत सिंह बैंस
- 500 से अधिक छात्रों वाले स्कूलों में कैंपस मैनेजर, सुरक्षा गार्ड तैनात किए; जेईई जैसी परीक्षाओं में छात्रों की सफलता क्रांतिकारी शिक्षा सुधारों पर मोहर : हरजोत सिंह बैंस

अमृतसर, 20 फरवरी (साहिल बेरी)

पंजाब में शिक्षा सुधारों की श्रृंखला में एक और मील का पत्थर स्थापित करते हुए शिक्षा मंत्री स. हरजोत सिंह बैंस ने राज्य की सरकारी शिक्षा प्रणाली को मजबूत करने और इसके सुधार से संबंधित अपनी निरंतर मुहिम के हिस्से के रूप में आज सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, झीता कलां का अचानक निरीक्षण किया। इस दौरे के दौरान स. बैंस ने बताया कि उन्होंने पद संभालने से अब तक पंजाब भर के 2,000 से अधिक सरकारी स्कूलों का निरीक्षण किया है, जिसे उन्होंने राज्य के इतिहास में एक नया मानक करार दिया।

शिक्षा मंत्री स. हरजोत सिंह बैंस ने कहा कि मैंने पद संभालने से लेकर राज्य भर के 2,000 से अधिक सरकारी स्कूलों का जमीनी स्तर पर दौरा करके नया रिकॉर्ड कायम किया है। यह पंजाब के इतिहास में पहली बार है जब किसी शिक्षा मंत्री ने शिक्षा प्रणाली की इतने बड़े स्तर पर जमीनी स्तर पर समीक्षा की है।

उन्होंने आगे कहा कि इस मुहिम के तहत मैंने पठानकोट से फाजिल्का, फिरोजपुर से मोहाली तक कोई जिला नहीं छोड़ा है, जो राज्य के विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के प्रति मेरे जुनून को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि पंजाब में लगभग 20,000 स्कूल हैं, जिनके जमीनी स्तर पर निरीक्षण के लिए मैं एक मिशन पर हूं।

स्टाफ और विद्यार्थियों से बातचीत के दौरान शिक्षा मंत्री स. हरजोत सिंह बैंस ने स्कूल में शिक्षा और प्रबंधन के मानकों की समीक्षा की और 'समर्थ' कार्यक्रम की प्रगति का मूल्यांकन भी किया, जो प्राइमरी कक्षाओं में पढ़ाई-लिखाई से संबंधित समस्याओं के समाधान के उद्देश्य से शुरू की गई एक प्रमुख पहल है।

स. बैंस ने पद संभालने के समय सरकारी स्कूल शिक्षा प्रणाली की स्थिति को याद करते हुए कहा कि प्राइमरी स्तर पर बड़ी संख्या में बच्चे पढ़ने या लिखने में असमर्थ थे। सीखने की खाई को भरने में इस पहल के सकारात्मक प्रभाव को उजागर करते हुए वे जब ऐसे बच्चों से बात करते हैं, जो अक्षरों की पहचान करने में संघर्ष से लेकर अब शब्दों और वाक्यों को आत्मविश्वास से पढ़ने तक प्रगति कर चुके हैं, तो उन्हें बहुत खुशी और संतुष्टि होती है।

स. हरजोत सिंह बैंस ने कहा कि 'समर्थ' कार्यक्रम के माध्यम से हमने ऐसे बच्चों की पहचान करके उन पर काम किया। उन्होंने कहा कि बच्चों को अच्छी तरह पढ़ाने वाले शिक्षक

शानदार परिणाम दे रहे हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ करने वाली किसी भी कार्रवाई को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

ऐसी किसी भी लापरवाही के प्रति भगवंत मान सरकार की जीरो-टॉलरेंस नीति की पुष्टि करते हुए शिक्षा मंत्री ने चेतावनी दी कि अपनी जिम्मेदारियां निभाने में नाकाम रहने वाले शिक्षकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

सुरक्षित और अनुकूल शिक्षा वातावरण सुनिश्चित करने के लिए उठाए गए कदमों पर प्रकाश डालते हुए कैबिनेट मंत्री स. हरजोत सिंह बैंस ने कहा कि 500 से अधिक विद्यार्थियों के दाखिले वाले सभी सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूलों में कैंपस मैनेजर और सुरक्षा गार्ड तैनात किए गए हैं।

यह कहते हुए कि गलत चीजें बहुत जल्दी वायरल हो जाती हैं, स. बैंस ने जनता और मीडिया से मेहनती और कुशल शिक्षकों के अच्छे कामों को भी साझा करने की अपील की। उन्होंने कहा कि मैं आप सभी से अपील करता हूं कि झीता कलां जैसे स्कूलों की अच्छी कार्यप्रणाली को अधिक से अधिक दिखाया जाए। उन्होंने कहा कि हमने इस स्कूल के कैंपस और बुनियादी ढांचे में बड़े सुधार किए हैं। उन्होंने कहा कि यह स्कूल शानदार परिणाम दे रहा है और यहां से एक विद्यार्थी ने जेईई पास किया है।

विद्यार्थियों की हालिया परीक्षा कार्यप्रणाली और स्कूल में बुनियादी ढांचे के नवीनीकरण कार्यों की सराहना करते हुए स. हरजोत सिंह बैंस ने भगवंत मान सरकार की सरकारी स्कूलों में उच्च स्तरीय सुविधाएं प्रदान करने की प्रतिबद्धता को दोहराया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि पंजाब शिक्षा क्रांति के तहत किए जा रहे शिक्षा सुधारों की रफ्तार को बनाए रखने के लिए चल रहे विकास प्रोजेक्टों को तेज किया जाए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023